भण्डारण भारती

राजभाषा विशेषांक

अंक 80

केन्द्रीय भण्डारण निगम

(भारत सरकार का उपक्रम)

जन-जन के लिए भण्डारण

कलम या कि तलवार

दो में से क्या तुम्हें चाहिए कलम या कि तलवार
मन में ऊँचे भाव कि तन में शक्ति विजय अपार

अंध कक्ष में बैठ रचोगे ऊँचे मीठे गान
या तलवार पकड़ जीतोगे बाहर का मैदान

कलम देश की बड़ी शक्ति है भाव जगाने वाली,
दिल की नहीं दिमागों में भी आग लगाने वाली

पैदा करती कलम विचारों के जलते अंगारे,
और प्रज्वलित प्राण देश क्या कभी मरेगा मारे

एक भेद है और वहां निर्भय होते नर-नारी,
कलम उगलती आग, जहाँ अक्षर बनते चिंगारी

जहाँ मनुष्यों के भीतर हरदम जलते हैं शोले,
बादल में बिजली होती, होते दिमाग में गोले

जहाँ पालते लोग लहू में हालाहल की धार,
क्या चिंता यदि वहाँ हाथ में नहीं हुई तलवार

रामधारी सिंह 'दिनकर'

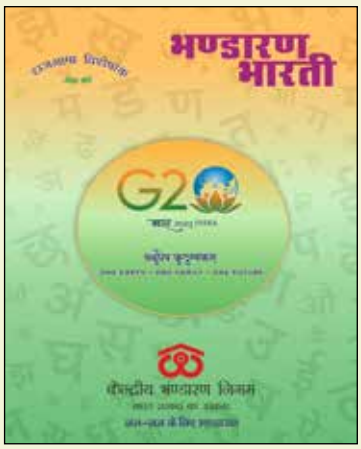

अप्रैल – सितंबर 2023

मुख्य संरक्षक
अमित कुमार सिंह
प्रबंध निदेशक

संरक्षक
संगीता रामरख्यानी
निदेशक (कार्मिक)

मुख्य संपादक
नम्रता बजाज
प्रबंधक (राजभाषा)

उप संपादक
रजनी सूद

सहायक संपादक
रेखा दुबे, शाशि बाला,
वरूण भारद्वाज

संपादन सहयोग
विद्या भूषण
बीरेन्द्र सिंह

केन्द्रीय भण्डारण निगम
(भारत सरकार का उपक्रम)
4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रांति मार्ग, हौजखास,
नई दिल्ली–110016

यह पत्रिका निगम की वेबसाइट
www.cewacor.nic.in
पर भी उपलब्ध है।

मुद्रक : विबा प्रैस प्रा. लि.
ओखला इंडस्ट्रारियल एरिया,
फेस–2, नई दिल्ली–110020

भण्डारण भारती

छमाही पत्रिका | राजभाषा विशेषांक | अंक: 80

विषय			पृष्ठ संख्या
❖	संदेश		03
❖	प्रबंध निदेशक की कलम से		10
❖	निदेशक (कार्मिक) की कलम से		11
❖	संपादकीय		12
आलेख			
❖	केन्द्रीय भंडारण निगम में कॉर्पोरेट गवर्नेंस की एक गौरवमयी गाथा	अनुज कुमार	13
❖	सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी की भूमिका	रजनी सूद	16
❖	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में हिंदी	बालेन्दु शर्मा दाधीच	18
❖	राष्ट्रभाषा हिन्दी	रमेश शर्मा	25
❖	इक्कीसवीं सदी में हिंदी की वैश्विक चुनौतियाँ	प्रो. रवि शर्मा 'मधुप'	27
❖	आर्टिफिशयल इंटैलिजेंस यानि कृत्रिम बुद्धिमता	नम्रता बजाज	33
❖	हिंदी भाषा की वैश्विकता : प्रमुख आधार	डॉ. हरीश कुमार सेठी	37
❖	साइबर अपराध – चुनौती एवं समाधान	वरुण भारद्वाज	57
अधीनस्थ वेअरहाउस – एक परिचय			
❖	सेंट्रल वेअरहाउस – अहमदाबाद–I, लखनऊ–I		52
विविध			
❖	जीवन में धैर्य और व्यवहार का महत्व	रेखा दुबे	22
❖	स्वतंत्रता दिवस	विनोद जैन	40
❖	आज का युवा	प्रदीप कुमार साव	46
❖	स्वतंत्र भारत में महिला सशक्तिकरण	राका जैन	48
❖	दृश्य	हरिन्दर तँवर	50
❖	केंद्रीय भंडारण निगम में राजभाषा निरीक्षण	शशि बाला	55
❖	कर्मों का खेल	डॉ0 विपुल जैन	63
❖	केंद्रीय भंडारण निगम में 36 वर्षों का अतुलनीय, अविस्मरणीय, यादगार सफर	राजभाषा अनुभाग	66
साहित्यिकी			
❖	दो गौरैया	भीष्म साहनी	42
पर्यटन			
❖	उत्तराखंड में कुमाऊँ के मुख्य दर्शनीय स्थल	डॉ. केदार पलड़िया	61
कविताएं			
❖	हिंदी अपनाओ	देवराज सिंह 'देव'	15
❖	कर्म किये जा...	कार्तिक कुमार पाटडिया	21
❖	हां मैं शांति का हत्यारा हूँ	प्रिया	32
❖	राष्ट्र भाषा तेरे लिए	जयप्रकाश शर्मा	36
❖	अमर शहीद	बीरेन्द्र सिंह	41
❖	मेरा देश	क्षिरोद्र कुमार पांडा'	49
❖	बेटियां	प्रीति पटवाल	60
❖	मैंने सीखा खुद को समझाना	मीनाक्षी गम्भीर	65
सचित्र गतिविधियां			67

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। निगम का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए भी लेखक स्वयं जिम्मेदार हैं।

केन्द्रीय भण्डारण निगम

लक्ष्य, दूरदर्शिता एवं उद्देश्य

लक्ष्य

सामाजिक दायित्वपूर्ण एवं पर्यावरण–अनुकूल ढंग से विश्वसनीय, किफायती, मूल्य संवर्द्धक तथा एकीकृत भंडारण एवं लॉजिस्टिक्स समाधान सुलभ कराना।

दूरदर्शिता

हितधारी की संतुष्टि पर बल देते हुए भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था के संबल के रूप में एकीकृत भंडारण अवसंरचना एवं अन्य लॉजिस्टिक सेवाएं प्रदान करने वाले बाजार के एक अग्रणी संसाधक के रूप में खड़ा होना।

उद्देश्य

- वैज्ञानिक भंडारण, लॉजिस्टिक सेवाएं एवं तत्संबंधी अवसंरचनात्मक सुविधाएं उपलब्ध कराते हुए कृषि, उद्योग, व्यापार व अन्य क्षेत्रों की परिवर्तनशील आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
- भंडारण, हैंडलिंग एवं विवरण के दौरान होने वाली हानियों को कम करना।
- पर्यावरण अनुकूल विधियाँ प्रयोग करते हुए पैस्ट नियंत्रण सेवाओं के क्षेत्र में मुख्य भूमिका निभाना।
- बैकिंग संस्थाओं एवं गैर बैकिंग वित्तीय कंपनियों के माध्यम से भंडारित वस्तुओं के लिए ऋण उपलब्ध कराने की दिशा में भंडारण (विकास एवं विनियमन) अधिनियम, 2007 के क्रियान्वयन में सहयोग करना।
- पोर्ट हैंडलिंग, प्रापण एवं वितरण, कोल्ड चेन, भंडारण वित्तपोषण, 3 पी.एल., परामर्शी सेवाएं, मल्टी मॉडल परिवहन आदि के क्षेत्रों में फॉरवर्ड और बैकवर्ड इंटीग्रेशन द्वारा लॉजिस्टिक वेल्यू चेन की योजना बनाना और उसमें विविधता लाना।
- वेअरहाउसिंग और लॉजिस्टिक क्षेत्रों में वैश्विक उपस्थिति दर्ज करना।
- ग्राहक संतुष्टि हेतु कर्मचारियों की प्रतिबद्धता, अभिप्रेरणा तथा उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से मानव संसाधन विकास कार्यक्रम की योजना बनाना तथा क्रियान्वित करना।

पीयूष गोयल
PIYUSH GOYAL

सत्यमेव जयते

वाणिज्य एवं उद्योग,
उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण तथा
वस्त्र मंत्री, भारत सरकार
Minister of Commerce & Industry,
Consumer Affairs, Food & Public Distribution and
Textiles, Government of India

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि केन्द्रीय भंडारण निगम अपनी भंडारण गतिविधियों में विविधीकरण सहित जन-सामान्य तक इसकी जानकारी पहुंचाने एवं लेखन क्षमता को उजागर करने के उद्देश्य से गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी भंडारण भारती-राजभाषा विशेषांक का प्रकाशन कर रहा है।

केन्द्रीय भंडारण निगम कृषक समुदायों को उनके कृषि उत्पादों को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से वैज्ञानिक भंडारण पर आधारित तकनीक की जानकारी प्रदान कर देश की अर्थव्यवस्था और राष्ट्र के विकास में अपनी अहम भूमिका निभा रहा है।

भाषा किसी भी राष्ट्र की सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरोहर होती है। कोई भी देश अपनी भाषा के बिना अपने व्यक्तित्व को मौलिक रूप से परिभाषित नहीं कर सकता। राजभाषा को समृद्ध एवं सशक्त बनाने में कार्यालय की हिंदी पत्रिकाओं का विशेष योगदान रहा है। प्रशंसनीय है कि निगम राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपनी भूमिका एवं उत्तरदायित्व को समझते हुए 'राजभाषा विशेषांक' का प्रकाशन कर रहा है। ऐसे प्रकाशनों से निश्चित रूप से राजभाषा का गौरव बढ़ा है। मैं इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी व्यक्तियों की लगन और प्रयास की सराहना करता हूं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका अपने निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करेगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

पीयूष गोयल

पीयूष गोयल

Ministry of Consumer Affairs, Food & Public Distribution, Krishi Bhawan, New Delhi-110001
Tel.: +91-11-23070637, 23070642 Fax : +91-11-23386098, E-mail : min-food@nic.in

अश्विनी कुमार चौबे
Ashwini Kumar Choubey

राज्य मंत्री
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन
उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण
भारत सरकार
MINISTER OF STATE
ENVIRONMENT, FOREST AND CLIMATE CHANGE
CONSUMER AFFAIRS, FOOD & PUBLIC DISTRIBUTION
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि केन्द्रीय भंडारण निगम गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी भंडारण भारती के 'राजभाषा विशेषांक' का प्रकाशन कर रहा है। किसी भी व्यवसायिक उपक्रम के लिए अपने व्यवसायिक हितों को ध्यान में रखकर संघ की राजभाषा को बढ़ावा देना एक सराहनीय कार्य है।

यह निगम देश के किसानों को वैज्ञानिक भंडारण की सुविधाएं तथा उनके शिक्षण-प्रशिक्षण की व्यवस्था करके महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। ऐसी स्थिति में कृषि उत्पादों के संरक्षण संबंधी वैज्ञानिक एंव उपयोगी तकनीक पर आधारित पद्धति पर हिंदी में लेख प्रकाशित करना काफी उपयोगी सिद्ध होगा।

निगम द्वारा राजभाषा के कामकाज को आगे बढ़ाने की दिशा में यह अत्यंत प्रेरणादायक कार्य है। मुझे आशा है कि इस पत्रिका में प्रकाशित सामग्री से जहां निगम के अधिकारियों और कर्मचारियों को राजभाषा में और अधिक कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी, वहीं पाठकों के लिए भी नई-नई जानकारियां उपलब्ध होंगी।

मैं पत्रिका के प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(अश्विनी कुमार चौबे)

कार्यालय : 5वां तल, आकाश विंग, इंदिरा पर्यावरण भवन, जोर बाग रोड, नई दिल्ली-110003, दूरभाष : 011-20819416, 011-20819421, फैक्स : 011-20819207, ई-मेल : mos.akc@gov.in
Office : 5th Floor, Aakash Wing, Indira Paryavaran Bhawan, Jor Bagh Road, New Delhi-110003, Tel.: 011-20819418, 011-20819421, Fax : 011-20819207, E-mail : mos.akc@gov.in
कार्यालय : कमरा नं 173, कृषि भवन, नई दिल्ली-110001, दूरभाष : 011-23380630, फैक्स : 011-23380632
Office : Room No. 173, Krishi Bhawan, New Delhi-110001, Tel. : 011-23380630, Fax : 011-23380632
निवास : 30, डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम रोड, नई दिल्ली-110003, दूरभाष : 011-23794971, 23017049
Residence : 30, Dr. APJ Kalam Road, New Delhi-110003, Tel. : 011-23794971, 23017049

G20 भारत 2023 INDIA

साध्वी निरंजन ज्योति
SADHVI NIRANJAN JYOTI

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

उपभोक्ता मामले,
खाद्य और सार्वजनिक वितरण एवं
ग्रामीण विकास राज्य मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF STATE FOR
CONSUMER AFFAIRS, FOOD AND PUBLIC DISTRIBUTION &
RURAL DEVELOPMENT
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

केन्द्रीय भंडारण निगम द्वारा **"भंडारण भारती"** का **'राजभाषा विशेषांक'** प्रकाशित करना अत्यंत हर्ष की बात है। निगम जहां एक ओर देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है वहीं निरंतर राजभाषा के प्रति अपने दायित्वों को सफलतापूर्वक पूर्ण करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

राजभाषा की समृद्धि में पत्रिका प्रकाशन का विशेष योगदान होता है। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी को प्रोत्साहित करने का एक सशक्त माध्यम है। निश्चित तौर पर पत्रिका अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए लेखन का एक ऐसा मंच होता है जिसके माध्यम से वे अपनी लेखन प्रतिभा को उजागर कर सकते हैं। हम सभी को दैनिक व्यवहार के साथ-साथ सरकारी कामकाज में भी हिंदी का प्रयोग अति सहज और सरल ढंग से करना चाहिए जिससे राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को बल मिले। यह हमारी नैतिक और संवैधानिक जिम्मेदारी है।

मेरा विश्वास है कि **भंडारण भारती** का यह अंक प्रेरणादायक सिद्ध होगा और इससे हिंदी के प्रति अभिरूचि भी विकसित होगी। इसके सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

निरंजन ज्योति
(साध्वी निरंजन ज्योति)

कार्यालय: 197, ई विंग, कृषि भवन, डॉ० आर.पी. रोड, नई दिल्ली–110001
Office: 197, E Wing, Krishi Bhawan, Dr. R.P. Road, New Delhi-110001
दूरभाष: 011–23388823, 23388859 • फैक्स: 011–23388827 • वेब : http://dfpd.gov.in
निवास: बंगला नं. 13, न्यू मोती बाग, नई दिल्ली–110021
Residence: Bunglow No. 13, New Moti Bagh, New Delhi-110021
दूरभाष: 011–24105585 • फैक्स: 011–24103228

संजीव चोपड़ा
सचिव
SANJEEV CHOPRA
SECRETARY

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारत सरकार
खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग
उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय
कृषि भवन, नई दिल्ली–110 001
GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF FOOD & PUBLIC DISTRIBUTION
MINISTRY OF CONSUMER AFFAIRS
FOOD AND PUBLIC DISTRIBUTION
NEW DELHI-110 001
Tel.: 011-23382349, Fax : 011-23386052
E-mail secy-food@nic.in

संदेश

यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि केंद्रीय भंडारण निगम 'भंडारण भारती' पत्रिका के 'राजभाषा विशेषांक' का प्रकाशन कर रहा है। निगम वैज्ञानिक भंडारण की गतिविधियों के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में बढ़ावा देने के प्रति भी समर्पित है।

निगम उद्योग, व्यापार, कृषि एवं अन्य क्षेत्रों की भंडारण एवं लॉजस्टिक आवस्यकताओं को पूरा करने सहित ई-कामर्स व्यापार में भी निरंतर आगे बढ़ रहा है। यह सार्वजनिक क्षेत्र का ऐसा उपक्रम है जिसमें विभिन्न ई-टूल्स को लागू किया है और पूर्ण रूप से डिजिटल संगठन के रूप में कार्य भी कर रहा है।

वास्तव में हिंदी भाषा के विकास में पत्र-पत्रिकाओं के योगदान का इतिहास बहुत गौरवशाली है। इसी क्रम में भाषा की समृद्धि में पत्रिका की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मुझे आशा है कि पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित रचनाएं रचनात्मक एवं ज्ञानवर्धक होंगी और हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायक होंगी।

मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएं देता हूँ तथा पत्रिका के प्रकाशन हेतु प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को विशेष बधाई देता हूँ।

संजीव

(संजीव चोपड़ा)
सचिव
खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग

अंशुली आर्या, आई.ए.एस.
सचिव
ANSHULI ARYA, I.A.S.
Secretary

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारत सरकार
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय
GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE
MINISTRY OF HOME AFFAIRS

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि केंद्रीय भंडारण निगम द्वारा गृह पत्रिका "भंडारण" का राजभाषा विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है।

संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुसरण में केन्द्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहित करने के लिए हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। मैं आशा करती हूं कि पत्रिका में किसानों को कृषि उत्पादों के उत्पादन एवं संरक्षण के बारे में वैज्ञानिक भंडारण संबंधी तकनीकी जानकारी हिंदी में उपलब्ध कराई जाएगी। साथ ही, हिंदी के बेहतर कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने से संबंधित प्रेरणादायक लेख प्रकाशित किए जाएंगे।

मैं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों को बधाई देती हूं और विश्वास करती हूं कि "भंडारण" पत्रिका इसी तरह अपने मार्ग पर अग्रसर होती रहेगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

(अंशुली आर्या)

तृतीय तल, एन.डी.सी.सी.-II भवन, जय सिंह रोड, नई दिल्ली-110001
फोन : (91) (11) 23438266, फैक्स : (91) (11) 23438267, ई-मेल : secy-ol@nic.in

प्रो. गिरीश नाथ झा
अध्यक्ष
Prof. Girish Nath Jha
Chairman

सत्यमेव जयते

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
भारत सरकार
शिक्षा मंत्रालय
(उच्चतर शिक्षा विभाग)
Government of India
Commission for Scientific & Technical Terminology
Ministry of Education
(Department of Higher Education)

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि केन्द्रीय भण्डारण निगम, हौजखास, नई दिल्ली - 110016 द्वारा गृह पत्रिका "भंडारण भारती" का "राजभाषा विशेषांक" प्रकाशित किया जा रहा है । निगम जहाँ एक ओर देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है वहीं निरंतर राजभाषा के प्रति अपने दायित्वों को सफलतापूर्वक पूर्ण करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है ।

राजभाषा की समृद्धि में पत्रिका प्रकाशन का विशेष योगदान होता है । निश्चित रूप से पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न रचनाओं के माध्यम से सभी को नई जानकारी मिलती है । यह पत्रिका अंडारण एवं राजभाषा को प्रोत्साहित करने का सशक्त माध्यम है । सभी को हिंदी का प्रयोग दैनिक व्यवहार के साथ -साथ सरकारी कामकाज में भी अति सहज और सरल ढंग से करना चाहिए जिससे राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को बल मिलेगा । वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित शब्दावलियों का भी कार्यालय में प्रयोग किया जाना चाहिए ताकि राजभाषा हिंदी के कार्य में एकरूपता बनी रहे ।

मेरा विश्वास है कि भंडारण भारती का यह अंक प्रेरणादायक सिद्ध होगा और इससे हिंदी के प्रति अभिरुचि विकसित होगी । इसके सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

(प्रोफ़ेसर गिरीश नाथ झा)
अध्यक्ष

पश्चिमी खण्ड-VII., रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली- 110066 | West Block VII, R.K. Puram, New Delhi-110066
☎ : 011-20867172 ✉ : chairman-cstt@gov.in, patochairmancstt@gmail.com
www.cstt.education.gov.in

केन्द्रीय भण्डारण निगम
(भारत सरकार का उपक्रम)
CENTRAL WAREHOUSING CORPORATION
(A Govt. of India Undertaking)
जन-जन के लिए भण्डारण/Warehousing for Everyone

अशोक के.के. मीना
अध्यक्ष

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि हमारा निगम विगत कई वर्षों से 'भंडारण भारती–राजभाषा विशेषांक' का प्रकाशन कर रहा है। गृह पत्रिकाओं का उददेश्य यही है कि वह अपने संगठन की विविध गतिविधियों एवं उपलब्धियों को दर्शाते हुए अधिकारियों एवं कर्मचारियों की लेखन क्षमता के लिए मंच स्थापित करे।

कोई भी संगठन अपनी गतिविधियों के संबंध में बहुआयामी होता है। एक ओर जहां वह अपने निर्धारित कार्य उद्देश्यों एवं परिणामोन्मुख लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रतिबद्ध होता है, वहीं दूसरी ओर अपने ग्राहकों से संवाद स्थापित करने के लिए भाषापरक गतिविधियों में भी इसकी भूमिका होती है। निगम भी अपनी बहुआयामी गतिविधियों और लक्ष्यों को साधने के साथ अपने मुख्य व्यवसाय कृषि उत्पादों एवं अन्य अधिसूचित वस्तुओं के लिए वैज्ञानिक भंडारण और इससे जुड़ी विभिन्न सेवाओं की जानकारियां और सूचनाओं को पत्रिका के माध्यम से जन–जन तक पहुंचाने में अपनी अहम भूमिका अदा कर रहा है। मुझे खुशी है कि निगम अपने कार्यक्षेत्र में पूरी प्रतिबद्धता के साथ अपनी विकास यात्रा को आगे बढ़ाते हुए राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु सदैव पुरस्कृत होता रहा है और सरकारी दिशा–निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करने में निरंतर प्रयासरत है। इसी का परिणाम है कि निगम की पत्रिका सदैव अपना सर्वोत्तम स्थान बनाए रखने में सफल रही है।

मैं आशा करता हूं कि निगम हिंदी के प्रचार–प्रसार और हिंदीमय वातावरण के निर्माण में सदैव इसी प्रकार अग्रणी रहेगा। राजभाषा विशेषांक से जुड़ी टीम को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

अशोक

अशोक के.के. मीना

निगमित कार्यालयः 4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया, अगस्त क्रांति मार्ग, हौज खास, नई दिल्ली–110016

प्रबंध निदेशक की कलम से.....

'राजभाषा विशेषांक' के रूप में भंडारण भारती के इस नवीनतम अंक के माध्यम से निगम के कार्मिकों एवं अन्य पाठकों से संपर्क स्थापित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

निगम विगत वर्षों से उत्पादक और उपभोक्ताओं के बीच एक मजबूत कड़ी के रूप में कार्य कर रहा है। यह देश में वैज्ञानिक भंडारण तथा लॉजिस्टिक सेवाओं के लिए आधारभूत सुविधाएं सृजित कर कृषि, व्यापार, उद्योग व अन्य क्षेत्रों की भंडारण आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। मेरा मानना है कि एनएलपी के 3 स्तंभ–मानकीकरण, आधुनिकीकरण और डिजिटलीकरण से अर्थव्यवस्था और भंडारण तथा लॉजिस्टिक को विशेष रूप से बढ़ावा मिलेगा। निगम गतिशील बाजार के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए समय–समय पर अपने परिचालन में विविधता लाया है। इसके लिए निगम ने भारतीय खाद्य निगम, बामर लॉरी, एथिक्स प्रॉस्पेरिटी प्राइवेट लिमिटेड आदि के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) भी किए हैं।

यह गर्व का विषय है कि केंद्रीय भंडारण निगम को निरंतर अपने कार्यों के लिए पहचान और पुरस्कार भी प्राप्त हो रहे हैं। एसोचैम (ASSOCHAM) द्वारा आयोजित उत्कृष्टता पुरस्कार समारोह में निगम को वेअरहाउसिंग क्षेत्र में **'उत्कृष्ट कृषि वस्तु भण्डारण'** एवं **'वेअरहाउसिंग कंपनी द्वारा सर्वोत्कृष्ट सीएसआर योगदान'** दो पुरस्कार प्रदान किए गए। निगम को अनुपालन और शासन की श्रेणी में उत्कृष्टता के लिए पुरस्कार मिला और निगम के निदेशक (वित्त) श्री अनुज कुमार को नेतृत्व में उत्कृष्टता के लिए 10वें राष्ट्रीय पुरस्कार में वर्ष के **सर्वश्रेष्ठ सीएफओ–पीएसयू** सेक्टर की श्रेणी में पुरस्कार मिला। इसके अतिरिक्त, इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया द्वारा प्रस्तुत लागत प्रबंधन में उत्कृष्टता के लिए 18वें राष्ट्रीय पुरस्कार–2022 में निगम ने **परिवहन और लॉजिस्टिक श्रेणी में पहला स्थान** प्राप्त किया।

भूमंडलीकरण के इस दौर में निगम अपने व्यावसायिक हितों को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन के लिए भी सदैव वचनबद्ध है। हिंदी संघ की राजभाषा होने के साथ–साथ देश में सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। आज हिंदी विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य कर रही है, यही कारण है कि भावनात्मक एकता को कायम रखने के लिए कामकाज की भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग अब आवश्यक हो गया है। राजभाषा हिंदी का प्रचार–प्रसार एवं विकास करना हमारा संवैधानिक दायित्व है। इस पत्रिका के माध्यम से न केवल निगम के कार्मिकों को अपनी लेखन प्रतिभा के लिए मंच मिला है, अपितु निगम की गतिविधियों की समुचित जानकारी भी सहजता से जनसामान्य तक पहुंच रही है। इसी क्रम में मुझे आपसे यह साझा करते हुए गर्व का अनुभव हो रहा है कि निगम ने विभागीय प्रयोग के लिए पूर्व में तैयार की गई **भंडारण शब्दावली** को अपडेट करके इसका तृतीय संस्करण प्रकाशित किया है तथा पहली बार वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, भारत सरकार द्वारा इसे अनुमोदित भी किया गया है। हिंदी की प्रगति की दिशा में किए गए हमारे प्रयासों को मान्यता भी मिलती रही है। निगम को राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु प्रशासनिक मंत्रालय से पुरस्कार प्राप्त होने सहित प्रति वर्ष गृह पत्रिका ''भंडारण भारती'' को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली द्वारा पुरस्कार प्राप्त होते रहे हैं। संसदीय राजभाषा समिति द्वारा भी क्षेत्रीय कार्यालय, पटना, लखनऊ एवं सेंट्रल वेअरहाउस, अमृतसर, मोगा के निरीक्षण के दौरान राजभाषा हिंदी के कार्यों पर संतोष व्यक्त किया गया।

मैं इस पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि आप सभी को यह अंक पसंद आएगा। मुझे विश्वास है कि आप यथासंभव अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने का प्रयास करेंगे ताकि सभी के संयुक्त प्रयासों से निगम अपनी मुख्य गतिविधि भंडारण के साथ–साथ राजभाषा के क्षेत्र में भी अग्रणी संगठन बना रहे।

शुभकामनाओं सहित,

अमित कुमार सिंह
प्रबंध निदेशक

निदेशक (कार्मिक) की ओर से.....

निगम द्वारा गत कई वर्षों से **'भंडारण भारती'** पत्रिका का निरंतर प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे प्रसन्नता है कि इस पत्रिका का नवीनतम अंक 'राजभाषा विशेषांक' के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत है। पत्रिका प्रकाशन के बहुउपयोगी उद्देश्य हैं। रचनात्मक एवं सृजनशील प्रतिभाओं के लिए अभिव्यक्ति का माध्यम होने के अतिरिक्त पत्रिकाओं का प्रकाशन भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं प्रसार में अहम भूमिका का निर्वहन करता है। इनके माध्यम से राजभाषा में शब्दों का कोष समृद्ध होता है और वैज्ञानिक व तकनीकी विषयों पर हिंदी में विचार प्रकट करने का प्रोत्साहन मिलता है तथा आत्मविश्वास बढ़ता है। मुझे आपसे यह साझा करते हुए खुशी हो रही है कि निगम के कार्मिकों को हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए प्रेरित करने हेतु पहली बार वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग तथा निगम के संयुक्त प्रयासों से तैयार की गई 'भंडारण शब्दावली' के तृतीय संस्करण का प्रकाशन किया गया। निगम को व्यवसाय एवं राजभाषा के क्षेत्र में अपने वैविध्यपूर्ण कार्यों के लिए लगातार पुरस्कार प्राप्त हो रहे हैं जो निश्चित रूप से हम सभी के लिए गौरवपूर्ण बात है। यह भी सराहनीय है कि संसदीय राजभाषा समिति द्वारा हमारे कार्यालयों के जो निरीक्षण किए गए हैं, उनमें माननीय समिति द्वारा निगम में किए जा रहे राजभाषा हिंदी के कार्यों पर संतोष व्यक्त करते हुए हमें राजभाषा हिंदी में और अधिक कार्य करने के लिए सदैव प्रेरित किया गया है।

निगम अपनी व्यावसायिक गतिविधियों एवं राजभाषा के क्षेत्र में विस्तार करने सहित अपने कार्मिकों के लिए भी सदैव कल्याणकारी कार्य करता रहा है जिसके तहत हिडन वैली झील, अरावली हिल्स, फरीदाबाद में एक ट्रेकिंग अभियान का आयोजन किया गया जिसमें वरिष्ठ प्रबंधन और अन्य अधिकारियों ने इस अविश्वसनीय ट्रैकिंग में उत्साहपूर्वक भाग लिया और स्वच्छता अभियान को प्रोत्साहित करने के लिए आस–पास के क्षेत्र को स्वच्छ बनाने में योगदान दिया। यही नहीं, निगम में कर्मचारियों के लिए 9वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस भी मनाया गया। इसी प्रकार, महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में भी निगम प्रयासरत है ताकि देश की प्रगति में महिलाओं की समान भागीदारी रहे। साथ ही, आजादी का अमृत महोत्सव के तहत स्थानीय कलाकारों द्वारा 'अगस्त क्रांति – स्वाधीनता (एक गाथा)' थीम के साथ स्टेज शो किया गया। इन कायक्रमों की झलकियां आपको इस अंक में देखने को मिलेंगी। निगमित सामाजिक दायित्व के कार्यों के प्रति भी निगम प्रतिबद्ध है जिसके तहत देश के विभिन्न शहरों में स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की गई।

आज ज़रूरत इस बात की है कि हम सभी राजभाषा हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने का संकल्प लेते हुए निगम के कारोबार सहित राजभाषा के क्षेत्र में भी निरंतर आगे बढ़ने के लिए अपने आप को समर्पित करें। मैं आशा करती हूं कि इस पत्रिका में प्रकाशित सामग्री आप सभी के लिए हिंदी के प्रति उत्साह एवं प्रेरणा उत्पन्न करेगी।

शुभकामनाओं सहित।

संगीता

संगीता रामरख्यानी
निदेशक (कार्मिक)

संपादकीय

भंडारण भारती का यह अंक 'राजभाषा विशेषांक' के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत है। यह प्रसन्नता का विषय है कि पत्रिका का यह अंक हिंदी पखवाड़ा के दौरान प्रकाशित किया जा रहा है। यह पत्रिका संगठन के कार्यकलापों की जानकारी देने के साथ ही अपने कार्मिकों की लेखन प्रतिभा को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है और उन्हें अपनी लेखन–प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर भी प्राप्त हो रहा है।

हमारा सदैव यह प्रयास रहता है कि भंडारण भारती में विभिन्न विषयों पर उत्कृष्ट लेखों को समेकित कर एक मानक एवं उत्कृष्ट विशेषांक पाठकों के सम्मुख रखा जाए और हम इस कार्य में सफल भी रहे हैं। राजभाषा विशेषांक के महत्व के दृष्टिगत इस अंक में राजभाषा हिंदी से जुडें विभिन्न नवीनतम पहलुओं से संबंधित आलेख प्राथमिकता पर प्रकाशित किए गए हैं। भारत द्वारा जी–20 समूह की अध्यक्षता की गई जिसमें डिजिटल ट्री के माध्यम से एआई एप भाषिकी ट्रांसलेशन आदि के द्वारा हिंदी का सामर्थ्य भी प्रदर्शित किया गया इसी को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विशेषांक के आवरण पृष्ठ पर जी–20 थीम दिया गया है।

इस अंक में साहित्यिकी, कविताएं एवं सामान्य लेख आदि स्थायी स्तंभों के साथ पर्यटन आदि से जुड़े लेख भी विशेष रूप से प्रकाशित किए गए हैं। इसके साथ ही सामायिक विषयों जैसे – आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस, साइबर अपराध आदि से संबंधित आलेख भी समाहित किए गए हैं। छमाही के दौरान निगम की विभिन्न गतिविधियों की झलक सहित संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षणों से संबंधित झलकियां, योग दिवस, स्वतंत्रता दिवस, आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम एवं हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर ली गई राजभाषा प्रतिज्ञा एवं तृतीय राजभाषा सम्मेलन में सहभागिता संबंधी फोटोग्राफ भी इस पत्रिका में प्रमुखता से प्रकाशित किए गए हैं।

पत्रिका के पाठकवर्ग से अनुरोध है कि अपनी मौलिक रचनाओं द्वारा भंडारण भारती के नियमित प्रकाशन में अपना योगदान जारी रखें ताकि पत्रिका के माध्यम से निगम के कार्मिकों में सृजनात्मक प्रतिभा प्रोत्साहित होती रहे। आशा है कि भविष्य में भी आप इस पत्रिका को उच्चस्तरीय बनाने में अपने बहुमूल्य सुझाव देते रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

(नम्रता बजाज)
मुख्य संपादक

केन्द्रीय भंडारण निगम में कॉर्पोरेट गवर्नेंस की एक गौरवमयी गाथा

अनुज कुमार*

केन्द्रीय भंडारण निगम (सीडब्ल्यूसी) का उद्देश्य पारदर्शिता, उचित प्रकटीकरण और रिपोर्टिंग सुनिश्चित करके लंबी अवधि के लिए शेयरधारकों के मूल्य को बढ़ाना है ताकि पूरे संगठन में वैधानिक नियमों का अनुपालन और नैतिक आचरण को बढ़ावा दिया जा सके। केन्द्रीय भंडारण निगम सरकारी नीतियों को लागू करने के लिए सक्रिय रहते हुए प्रबंधन की ट्रस्टीशिप, सशक्तिकरण और जवाबदेही के माध्यम से सुशासन में विश्वास करता है। निगम का उद्देश्य सामाजिक रूप से जिम्मेदार और पर्यावरण अनुकूल तरीके से विश्वसनीय, लागत प्रभावी, मूल्य संवर्धित और एकीकृत वेअरहाउसिंग और लॉजिस्टिक्स समाधान प्रदान करना है। निगम की दूरदर्शिता स्टेकहोल्डर की संतुष्टि पर बल देते हुए भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था के संबल के रूप में इंटीग्रेटेड वेअरहाउसिंग इंफ्रास्ट्रक्चर और अन्य लॉजिस्टिक सेवाएं प्रदान करके मार्किट के एक अग्रणी सुविधा प्रदाता के रूप में उभरना है।

1. बोर्ड की समितियाँ

निदेशक मंडल ने अपनी विशेष भूमिका, अधिकार और जवाबदेही के साथ निम्नलिखित उप–समितियों का गठन किया है:

(i) **कार्यकारी समिति**– वेअरहाउसिंग कॉर्पोरेशंस अधिनियम, 1962 की धारा 12 के तहत गठित कार्यकारी समिति (ईसी) में निदेशक मंडल के अध्यक्ष, प्रबंध निदेशक और निदेशकों में से बोर्ड द्वारा चुने गए दो सदस्य शामिल होते हैं। कार्यकारी समिति प्रदत्त शक्ति (डीओपी) के अनुसार निर्णय लेने में बोर्ड की सहायता करती है।

(ii) **लेखापरीक्षा समिति** – निदेशक मंडल द्वारा गठित लेखापरीक्षा समिति में तीन स्वतंत्र निदेशक सदस्य होते हैं और एक स्वतंत्र निदेशक लेखापरीक्षा समिति का अध्यक्ष होता है। लेखापरीक्षा समिति के कार्यों में लेखापरीक्षा कार्य की देखरेख, महत्वपूर्ण निष्कर्षों की समीक्षा,लेखांकन मानकों का अनुपालन सुनिश्चित करना और बोर्ड को प्रस्तुत किए जाने से पहले वित्तीय विवरणों की सहमति देने सहित निगम के सरप्लस फंड का निवेश,निगम के पास उपलब्ध फंड का स्तर और बकाया, परियोजनाओं की व्यावसायिक व्यवहार्यता निर्धारित करने के कारक और निगम में अपनाई जाने वाली लेखांकन प्रणाली शामिल है।

(iii) **पारिश्रमिक समिति**– कॉर्पोरेट गवर्नेंस पर सार्वजनिक उद्यम विभाग (डीपीई) के दिशानिर्देशों के अनुसार पारिश्रमिक समिति में कम से कम तीन स्वतंत्र निदेशक शामिल होने चाहिए। तदनुसार, निगम ने बोर्ड की पारिश्रमिक समिति (आरसी) का गठन किया है जिसमें तीन स्वतंत्र निदेशक शामिल हैं जिसमें एक स्वतंत्र निदेशक अध्यक्ष के रूप में होता है।

(iv) **कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व और सुस्थिरता पर समिति**– कंपनी अधिनियम की धारा–135 में निहित प्रावधानों के अनुसार, निगम के बोर्ड ने एक बोर्ड स्तरीय सीएसआर और सुस्थिरता समिति का गठन किया है। बोर्ड स्तरीय कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व

*निदेशक (वित्त), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

और सुस्थिरता समिति में कम से कम तीन निदेशक के साथ कम से कम एक स्वतंत्र निदेशक शामिल है। सीएसआर समिति अपनी सीएसआर नीति के अनुसरण में एक वार्षिक कार्य योजना तैयार करती है और बोर्ड को इसकी सिफारिश करती है। समिति सीएसआर परियोजनाओं का कार्यान्वयन, निगरानी और रिपोर्टिंग तंत्र भी सुनिश्चित करती है। यह समिति समय–समय पर बोर्ड द्वारा अनुमोदित कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व एवं सुस्थिर नीति की निगरानी करती है।

(v) **जोखिम प्रबंधन समिति**– निगम प्रतिस्पर्धियों सहित डोमेस्टिक कारोबारी माहौल में होने वाली घटनाओं से अपने कारोबार के समक्ष आने वाली चुनौतियों के प्रति सचेत और संवेदनशील है जो वास्तविक जोखिम उत्पन्न कर सकते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए निगम ने जोखिम को कुशलतापूर्वक प्रबंधित करने, विकास को बनाए रखने और स्टेकहोल्डर्स के लिए मूल्य बनाने में सहायता करने के लिए एक बोर्ड स्तरीय जोखिम प्रबंधन समिति का गठन किया है। जोखिम प्रबंधन समिति में तीन स्वतंत्र निदेशक सदस्य के रूप में शामिल हैं। इनमें से एक अध्यक्ष होता है।

(vi) **मानव संसाधन-उप समिति पर समिति** – मानव संसाधन प्रबंधन समिति में तीन स्वतंत्र निदेशक और एक कार्यात्मक निदेशक सदस्य के रूप में शामिल हैं। स्वतंत्र निदेशकों में से एक अध्यक्ष होता है। मानव संसाधन–उप समिति के कार्यों में बोर्ड के समक्ष अनुमोदन के लिए रखने से पहले मानव संसाधन मामलों और नीतियों की जांच एवं विचार शामिल होते हैं।

2. बोर्ड कार्यवाही का स्वचालन (ऑटोमेशन)

सुरक्षा, सुविधा और लागत बचत को सक्षम करने वाली बोर्ड की कार्यवाही के स्वचालन (ऑटोमेशन) के लिए बोर्डपीएसी सॉफ्टवेअर के कार्यान्वयन द्वारा जून, 2022 से बोर्ड और इसकी उप समितियों की बैठकें स्वचालित हो गई हैं। बोर्ड और उप–समिति की बैठकों के लिए डिजिटल कैलेंडर तैयार किया गया और वेबसाइट पर अपलोड किया गया है।

3. रिकार्ड का डिजिटलीकरण

वेअरहाउसिंग कॉरपोरेशंस अधिनियम, 1962 और संबंधित नियमों और विनियमों का डिजिटलीकरण सभी संशोधनों को शामिल करके नई ई–बुक बनाई गई है। वित्त वर्ष 2022–23 में सभी 19 राज्य भंडारण निगम के निवेश रजिस्टर तथा सभी शेयरहोल्डर लेजर का डिजिटलीकरण किया गया है।

4. निगम के जोखिम प्रबंधन का डिजिटलीकरण

वर्ष के दौरान जोखिम प्रबंधन के लिए एक ई–टूल विकसित किया गया है ताकि वेअरहाउसों, क्षेत्रीय कार्यालयों और निगमित कार्यालय के उपयोगकर्ताओं को जोखिम रजिस्टर बनाए रखने के दिशानिर्देशों के अनुसार सिस्टम में विभिन्न पहचाने गए जोखिमों को रिकॉर्ड करने में सक्षम बनाया जा सके। टूल में उपयोगकर्ताओं के लिए जोखिम प्रबंधन कार्यनीति को रिकॉर्ड करने, की गई कार्रवाइयों और उस पर जोखिम की स्थिति को अपडेट करने का प्रावधान है। टूल में जोखिमों का आकलन, प्रबंधन, निगरानी और समीक्षा करने के प्रावधान भी हैं।

5. सहयोगी राज्य भण्डारण निगमों के संबंध में अनुपालन

निगम के पास 19 राज्य भंडारण निगमों (एसडब्ल्यूसी) में 50 प्रतिशत इक्विटी है और संबंधित राज्य सरकारों के पास शेष 50 प्रतिशत इक्विटी है। निगम ने प्रत्येक राज्य भंडारण निगम के बोर्ड में पांच निदेशकों को नामित किया है। वेअरहाउसिंग कॉरपोरेशंस अधिनियम, 1962 के सभी प्रासंगिक प्रावधानों और संबंधित डीपीई दिशानिर्देशों को शामिल करते हुए राज्य भंडारण निगम के बोर्ड में निगम द्वारा नामित निदेशकों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के संबंध में विस्तृत एडवाइज़री जारी की गई थी।

इसके अतिरिक्त, एनओडी के लिए डीपीई के आवेदन प्रारूप के अनुरूप राज्य भंडारण निगमों के बोर्ड में गैर–सरकारी निदेशकों के लिए आवेदकों द्वारा विवरण प्रस्तुत करने के लिए एक प्रारूप तैयार किया गया है।

6. कॉर्पोरेट गवर्नेंस में उत्कृष्ट रेटिंग

निगम ने स्टेकहोल्डर्स के प्रति अपनी कॉर्पोरेट गवर्नेंस जिम्मेदारियों को पूरा करने और सहायता करने के लिए कॉर्पोरेट गवर्नेंस के दिशानिर्देशों का अनुपालन किया है। वार्षिक कॉर्पोरेट ग्रेडिंग रिपोर्ट में 100% स्कोर के आधार पर निगम वर्षों से कॉर्पोरेट गवर्नेंस में 'उत्कृष्ट' रेटिंग प्राप्त कर रहा है।

संक्षेप में, केन्द्रीय भंडारण निगम ने गत वर्षों में कॉर्पोरेट गवर्नेंस के अनुपालन में एक उत्कृष्ट यात्रा की है और निगम को अनुपालन और गवर्नेंस श्रेणी में 'उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है।

हिंदी अपनाओ

देवराज सिंह 'देव'*

भारत की अब दुनिया में, होगी जय–जयकार,
हिंदी जैसे बढ़ रही, होगी सरहद पार।

दुनिया में हिंदी सम्मेलन, करवा रहे हैं देश,
हिंदी को अपनाओ जल्दी, कट जाएं सभी कलेश।

हिंदी खिलता प्रसून है और मकरन्द है शब्दकोश,
व्याकरण अनमोल इसका, करो सदा उद्घोष।

हिंदी लिखना–बोलना, तुच्छ समझें कुछ लोग,
मां–बाप न बोलकर, रहें मॉम–डैड से बोल।

हिंदी भाषा–भाव को, समझे हैं सब जीव,
एक–एक शब्द महान है, तुम समझो न निर्जीव।

सौ में नब्बे नहीं जानते क्या इंगलिश का सार,
फिर भी नहीं अपनाते हिंदी, देखो समझों यार।

नकल करके लिख रहे, फाइलों में अभिलेख,
शुद्ध बुद्धि सब भूल गए, कर रहे मलियामेट।

सरल, सरस, मधुवासिनी हिंदी, बन रही जग की शान,
जब तक न अपनाए एवं मिले न जग में सम्मान।

हिंदी में माता कहें, हिंदी मे कहें मॉम,
अन्तःकरण को खोज लो, करो दूर भ्रम।

दोनों भाव भिन्न हैं–माता और मॉम,
माता भाव आत्मा का, दूजा खोजो तुम।

क्या अंग्रेजी बोलकर, तुम बन जाते अंग्रेज,
भाषा सीखो दुनिया की, मगर हिंदी का रुख देख।

हिंदी को जननी कहते, अंग्रेजी आंटी होय,
क्यों आंटी के चक्कर में, तुम जननी को खोय।

जननी तो जग–जननी है, जिसे मिले उच्च सम्मान,
अंग्रेजी तो सौतेली है, कर जग में पहचान।

मै, सदा लिखता रहता हूं, हिंदी में कुछ गीत,
क्योंकि मेरे मन की है, हिंदी से गहरी प्रीत।

कुछ जान–बूझकर करते नहीं, जन–हिंदी में काम,
जब अपनाओ हिंदी को, तब होंगे काम आसान।

देव सदा करता रहता है, स्वदेशी की बात,
परदेसी तो परदेसी है, समझो तुम जज्बात।

हिंदी मेरे हिंद की, अपनाओ तो जय होय,
फिर तो पूरे हिंद में बस, हिंदी–हिंदी होय।

*सेवानिवृत्त वेअरहाउस प्रबंधक, सै.वे. गाजियाबाद, क्षे.का. लखनऊ

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी की भूमिका

रजनी सूद*

विश्व के अन्य देशों की भांति भारत भी एक लोकतांत्रिक देश है। अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति श्री अब्राहम लिंकन जी द्वारा लोकतंत्र की परिभाषा के अनुसार लोगों की, लोगों द्वारा और लोगों के लिए चुनी हुई सरकार लोकतांत्रिक सरकार कहलाती है। भाषा संस्कार और लोगों को जोड़ने का कार्य करती है। भाषा जितनी सरल एवं अधिक लोगों द्वारा समझी जानी वाली होगी, उतनी ही अच्छी तरह से जनता सरकार द्वारा कार्यान्वित योजनाओं को समझ पाएगी और अधिक से अधिक सरकारी योजनाओं का उपयोग कर पाएगी।

राजभाषा से अभिप्राय:– राजभाषा, किसी राज्य या देश की घोषित भाषा होती है जो सभी राजकीय प्रयोजन अर्थात् सरकारी कामकाज में प्रयोग होती है। हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद–भाव के प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।

स्वाधीनता संग्राम के दौरान गांधी जी ने हिंदी भाषा के प्रभाव को देखा था, गांधी जी के अनुसार राजभाषा सरल, अधिकांश जनता द्वारा समझी जाने वाली, राजनैतिक सामाजिक एवं आर्थिक व्यवहार को बखूबी चलाने वाली होनी चाहिए और हिंदी में यह सब खूबियां विद्यमान हैं। हिंदी विश्व में चीनी भाषा के बाद दूसरी सबसे बड़ी भाषा है। विश्व के 132 देशों में जा बसे भारतीय मूल के लगभग 2 करोड़ लोग हिंदी माध्यम से ही अपना कार्य निष्पादित करते हैं। एशियाई संस्कृति में अपनी विशिष्ट भूमिका के कारण हिंदी एशियाई भाषाओं से अधिक एशिया की प्रतिनिधि भाषा है। विश्व में मारीशस, सूरीनाम, गुयाना, भारत आदि में अधिकांश एवं नेपाल में अल्प रूप में प्रयोग में लाई जाती है। हिंदी भाषा सरल एवं आसानी से समझी जाने वाली, समृद्ध शब्द भंडार एवं नए–नए शब्दों के सजृन वाली भाषा है। हिंदी के शब्द कोष में 2.50 (ढाई) लाख से अधिक शब्द हैं, जिसमें से लगभग 10,000 शब्द अंग्रेजी के हैं।

इसीलिए 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा का सम्मान प्राप्त हुआ। यह भी निर्णय लिया गया कि सहचारिणी के रूप में अंग्रेजी भाषा 15 वर्षों के लिए विद्यमान रहेगी, परंतु 26 जनवरी, 1965 के पश्चात् समस्त कार्य केवल हिंदी में होगा। हिंदी को राजभाषा संविधान की धारा 343 (1) के द्वारा घोषित किया गया था। राजभाषा से संबंधित प्रावधान संविधान की धारा 343 से 352 में वर्णित हैं।

हिंदी हिंद–यूरोपीय परिवार की भाषा है तथा हिंद आर्य परिवार के अन्तर्गत आती है। इस परिवार की भाषाएं संस्कृत भाषा से जन्मी है। इसी कारण इनका शब्द कोष समृद्ध है। इस परिवार की भाषाओं के नियम स्पष्ट हैं तथा व्याकरण के रूप में अत्यधिक सरल है।

वर्ष 1963 में संविधान की धारा 363 (3) के द्वारा, अंगेजी को सह राजभाषा घोषित करना ही हिंदी के लिए बहुत घातक सिद्ध हुआ। इस अधिनियम के अनुसार हिंदी प्रयोग के आधार पर भारत को तीन क्षेत्रों में बांटा गया है :–

क : क्षेत्र में उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, हरियाणा, राजस्थान

ख : क्षेत्र में गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब आदि तथा

ग : क्षेत्र में केरल, तमिलनाडु, असम एवं आंध्रप्रदेश समेत दक्षिण के प्रदेश आदि।

*प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

संविधान की धारा 351 के अनुसार संघ हिंदी के प्रचार का समस्त कार्य करेगा ताकि वह राजभाषा के रूप में सफलतापूर्वक कार्य कर सके, इसके लिए राजभाषा आयोग की स्थापना की गई, विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए गए, भर्तियां की गई, विज्ञान में लिखित मौलिक हिंदी पुस्तकों पर इनाम की योजना भी आरंभ की गई।

सब प्रावधान करने के बावजूद भी राजभाषा को वह दर्जा नहीं मिल पाया जो राजभाषा हिंदी को मिलना चाहिए था, विश्व के छोटे–छोटे देश भी अपनी राजभाषा में कार्य कर रहे हैं। परंतु हमारा दुर्भाग्य है कि हमारे यहां आज भी अधिकतर सरकारी कार्य अंग्रेजी में किए जा रहे हैं, इसके लिए किसे उत्तरदायी माना जाए, सरकारी नीतियों को या भारतीयों की मानसिकता को? शायद हम सब ही बराबर के दोषी है। खैर ज्यादा निराश होने की भी आवश्यकता नहीं है।

पिछले कुछ वर्षों में मध्य प्रदेश, बिहार राज्यों के उच्च न्यायालयों में कार्यवाहियों के साथ–साथ निर्णय, आदेश आदि में हिंदी का प्रयोग प्राधिकृत किया गया जिससे हिंदी के कार्य में वृद्धि हुई है। उत्तराखण्ड, उत्तरप्रदेश, बिहार एवं राजस्थान आदि में अधिकाशंतः सरकारी कार्य हिंदी में ही हो रहे है। केन्द्र सरकार में भी राजभाषा विभाग के वार्षिक लक्ष्यों को पूरा करने की वजह से हिंदी का प्रयोग बढ़ा है, परंतु अभी भी बहुत कार्य किया जाना शेष है। हिंदी के सरकारी कामकाज में कम होने के दो प्रमुख कारण हैं :–

1. उच्च वर्ग का आज भी अंग्रेजी से लगाव तथा हिंदी को हीन भावना से देखना एवं दूसरा
2. संचार माध्यमों एवं कंप्यूटर क्रांति के समय हिंदी का दौड़ में पिछड़ जाना।

हालांकि आज स्थिति बदलने लगी है, सभी सरकारी कार्यालयों में तिमाही बैठकों का आयोजन, कार्यशालाओं का आयोजन, यूनीकोड के आगमन से कंप्यूटर पर हिंदी का प्रयोग काफी सरल हो गया है। आज कर्मचारी हिंदी में आसानी से कार्य कर पा रहे हैं। इंटरनेट पर हिंदी का अथाह भंडार भरा पडा है। मंत्रा जैसे साफ्टवेअर उपलब्ध हैं जिनके द्वारा अनुवाद का कार्य आसानी से किया जा सकता है। मेरे उपक्रम में भी राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए तिमाही हिंदी कार्यशालाएं जिनमें ई–टूल्ज के बारे में तो एक सैशन अवश्य होता है। तिमाही एवं बैठकें, प्रशासनिक बैठकों में राजभाषा का प्रयोग, विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं, प्रबंधन द्वारा राजभाषा में रूचि लिए जाने एवं संसदीय राजभाषा समिति द्वारा किये जाने वाले निरीक्षणों के कारण राजभाषा का प्रयोग काफी बढ़ा है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम राजभाषा के प्रति आदर के साथ व्यवहार करें। निगम की भंडारण शब्दावली का अधिक से अधिक लाभ उठाएं, अधिक से अधिक कार्य करें।

अंत में मैं तो बस इतना ही कहना चाहूंगी चूंकि हमारे कार्यालय में अधिकतर युवा पीढ़ी कार्य कर रही है जो राजभाषा हिंदी को बहुत कठिन मानती है, कारण अभ्यास की कमी। उन्होंने अभी तक जो पढ़ा–पढ़ाया वो सब अंग्रेजी में आसानी से उपलब्ध था। चूंकि हिंदी में फाइलों पर ज्यादातर कार्य उपलब्ध नहीं है तो उन्हें कार्य करने में दिक्कत होती है। कोई भी कार्य तभी तक मुश्किल होता है जब तक उसे न किया जाए। यदि एक बार कार्य कर लिया जाए तो उसमें दिक्कत नहीं होती है।

अतः हमारी युवा पीढ़ी रोज केवल एक फाइल में ही अपना कार्य हिंदी में करे तो इससे न केवल राजभाषा का कार्य बढ़ेगा अपितु उनका अभ्यास भी बढ़ेगा। बूंद–बूंद से ही तो घड़ा भरता है और राजभाषा रूपी ये घड़ा हमारी युवा पीढ़ी को भी भरना है। हिंदी दिवस की शुभकामनाओं सहित।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में हिंदी

बालेन्दु शर्मा दाधीच*

आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता जीवन के हर पहलू को प्रभावित कर रही है और ऐसा माना जा रहा है कि अगले एकाध दशक में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की बदौलत हमारी दुनिया का कायाकल्प होने वाला है। हिंदी सहित हमारी भाषाएँ भी इस बदलाव से अछूती नहीं रहने वाली हैं और न ही उन्हें इससे अप्रभावित रहना चाहिए। जो भाषाएँ बदलते युग के साथ तालमेल बिठाकर नहीं चल पातीं उनके स्थायी अस्तित्व की गारंटी नहीं ली जा सकती। वैसे ही, जैसे अपने दौर के विकास, बदलाव, नवाचार आदि से अछूते रह जाने वाले समाज न सिर्फ प्रगति की दौड़ में पिछड़ जाते हैं बल्कि धीरे–धीरे अपनी प्रासंगिकता खो बैठते हैं। अफगानिस्तान, इराक, सीरिया, उत्तर कोरिया और पाकिस्तान जैसे देशों के उदाहरण आपके सामने हैं। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, बाजार और बदलाव एक वास्तविकता है। उनका प्रतिरोध करने में कोई लाभ नहीं। हाँ, उनके साथ आने में हम सबका लाभ है, हमारी भाषाओं का भी।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अर्थ है कंप्यूटरों को ऐसे काम करने में सक्षम बनाना जिनके लिए इंसान अपना बुद्धि का प्रयोग करता है। हमारा मस्तिष्क अपने आसपास के patterns को पहचान सकता है, भाषा को समझ सकता है, लोगों को पहचान सकता है, तर्क दे सकता है, निर्णय ले सकता है और कुछ नया क्रिएट कर सकता है, यानी कि रचना कर सकता है। कंप्यूटरों को यही क्षमता देने के लिए उनमें बहुत ही ज़्यादा बड़ी मात्रा में डेटा फीड किया जाता है, यानी कि डेटा सेट्स और फिर ऐसा एल्गोरिद्म (algorithm) यानी कि कोड तैयार किया जाता है जिसकी बदौलत कंप्यूटर patterns को पहचानने लगता है।

मशीनें अथाह डेटा का विश्लेषण करके पैटर्नों की तुलना करते हुए ऐसा करती हैं जैसे उनके पास बुद्धि हो। निर्णय ले सकती हैं, सवाल पूछ सकती हैं और तर्क कर सकती हैं। मुस्कुराते हुए इंसानों के लाखों फोटोग्राफ का विश्लेषण करके वह जान जाती है कि ऐसी मुद्राओं का मतलब है, आप मुस्कुरा रहे हैं। इसी तरह हिंदी और अंग्रेजी के करोड़ों अनूदित वाक्यों के पैटर्नों का अध्ययन करके वह समझ जाती है कि नए वाक्यों का अनुवाद कैसे होगा। इसके आश्चर्यजनक परिणाम सामने आ रहे हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की अथाह शक्ति के अनगिनत उदाहरण हमारे सामने हैं। इस शक्ति के बारे में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह की चर्चाएँ हैं। एक तबके को लगता है कि यह मानव सभ्यता के भविष्य के लिए संकट खड़ा कर देगी इसलिए इससे बचना श्रेयस्कर है। दूसरे तबके को लगता है कि यह हमारी तरक्की के ऐसे नए रास्ते खोलने वाली है जिनकी अब तक हमने कल्पना भी नहीं की, इसलिए इसका अधिकतम दोहन किया जाना चाहिए। मुझे लगता है कि सही रास्ता दोनों के बीच से आता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता को तय सीमाओं के भीतर, जिम्मेदारी के साथ इस्तेमाल किया जाए तो वह मानव सभ्यता की प्रगति का सबसे शक्तिशाली माध्यम बन सकती है।

यह कोई सामान्य प्रौद्योगिकी नहीं

यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि हिंदी भाषा के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता की क्या प्रासंगिकता है और वह इस भाषा के भविष्य को किस तरह प्रभावित कर सकती है? इसका उत्तर समझने के लिए हमें हिंदी की वर्तमान चुनौतियों, अवसरों तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता में निहित शक्तियों पर विचार करने की आवश्यकता है। आर्टिफिशियल

*लेखक, वरिष्ठ प्रौद्योगिकीविद्, और माइक्रोसॉफ़्ट में 'निदेशक–भारतीय भाषाएँ और सुगम्यता'।

इंटेलिजेंस का अर्थ तकनीक की उस शक्ति से है जिसका प्रयोग करते हुए वह इंसानों की ही तरह (किंतु उनकी तुलना में बहुत बड़े पैमाने पर) सीख सकती है, विशाल स्तर पर आंकड़ों का विश्लेषण कर सकती है, चीजों पर निगरानी (ऑब्जर्वेशन) कर सकती है, भिन्न–भिन्न परिस्थितियों का मंथन कर सकती है, अपनी क्षमताओं में वृद्धि कर सकती है, निर्णय ले सकती है और परिणाम दे सकती है। यह सामान्य प्रौद्योगिकी से अलग है जो पहले से निर्धारित काम करती है, अपनी सीमाओं में रहती है और पहले से दिए गए निर्देशों (प्रोग्रामिंग) के आधार पर परिणाम देती है। वह स्वयं को बदलती नहीं है और स्वयं को निरंतर बेहतर बनाने में सक्षम नहीं है। दूसरी ओर कृत्रिम बुद्धिमत्ता अधिक से अधिक कुशल, शक्तिशाली बनने में सक्षम है। जहाँ पारंपरिक प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने के लिए हम पूर्व निर्धारित माध्यमों (कीबोर्ड, माउस, टचस्क्रीन, ग्राफ़िकल यूज़र इंटरफेस, मेनू आदि) का प्रयोग करते हैं वहीं कृत्रिम बुद्धिमत्ता इनके साथ–साथ हमारी भाषा को समझने में भी सक्षम है और उससे संवाद किया जा सकता है। यह संवाद लिखकर भी संभव है तो बोलकर भी संभव है और यहाँ तक कि हस्तलिपि में भी, फोटोग्राफ के जरिए भी तथा दर्जनों दूसरे तरीकों से संभव है। कंप्यूटर के क्षेत्र में प्रचलित इनपुट, प्रोसेसिंग और आउटपुट– तीनों के तौर–तरीके बदल रहे हैं। इसके जरिए डिजिटल प्रौद्योगिकी को काफी हद तक देखने, भाषा को समझने, ध्वनि का प्रयोग करने, इशारों को समझने और स्पर्श को भाँपने जैसी शक्तियाँ मिल गई हैं। जो भाषाएँ इन शक्तियों का दोहन करने की स्थिति में होंगी वे अपना कायाकल्प कर सकेंगी।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिंदी के स्थायी भविष्य को सुनिश्चित कर सकती है। यूनेस्को ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा था कि दुनिया की 7200 भाषाओं में से लगभग आधी इस शताब्दी के अंत तक विलुप्त हो जाएंगी। अगर हम हिंदी को विलुप्त होने वाली इन भाषाओं की सूची में नहीं देखना चाहते तो हमें कृत्रिम मेधा को खुले दिल से अपनाना चाहिए। वजह यह कि यह प्रौद्योगिकी भाषाओं के बीच दूरियाँ समाप्त करने में सक्षम है। आज हम अंग्रेजी की प्रधानता से त्रस्त हैं और कृत्रिम मेधा तथा दूसरी आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ अंग्रेजी के दबदबे से मुक्त होने में हमारी मदद कर सकती हैं। जो लोग यह सोचते हैं कि हिंदी जैसी गैर–पश्चिमी भाषाएँ अगले कुछ दशकों में प्राकृत और पालि की स्थिति में आ सकती हैं, उन्होंने संभवतः इस पहलू पर विचार नहीं किया कि जहाँ इन भाषाओं के सामने कई दिशाओं से ढेरों चुनौतियाँ आ रही हैं, वहीं प्रौद्योगिकी भाषाओं के बीच दूरियों को पाटने में लगी है।

अप्रासंगिक हो सकती हैं भाषायी दूरियाँ

जिस अविश्वसनीय और चमत्कारिक अंदाज में कृत्रिम बुद्धिमत्ता चीजों को बदल रही है, उसे देखते हुए अगले एक–दो दशकों में हम भाषा–निरपेक्ष विश्व की ओर बढ़ सकते हैं। ऐसा विश्व जिसमें हिंदी जैसी भाषाएँ बोलने–लिखने वाला व्यक्ति अवसरों से वंचित न हो क्योंकि प्रौद्योगिकी एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद को इतना सटीक, सहज, सरल तथा सार्वत्रिक बना सकती है कि आप अंग्रेजी की सामग्री को हिंदी में पढ़ सकेंगे और हिंदी की सामग्री को अंग्रेजी में। आप हिंदी में बोलेंगे और लोग आपको अंग्रेजी में सुन सकेंगे जबकि अंग्रेजी बोलने वाले व्यक्ति को आप हिंदी में सुन सकेंगे। ऐसी स्थिति में यह बात अधिक महत्वपूर्ण नहीं रह जाएगी कि आपने किस भाषा में पढ़ाई की और किस भाषा में अपना कामकाज करते हैं। फिलहाल यह सब तिलस्मी प्रतीत होता है लेकिन कुछ वर्षों बाद ये परिकल्पनाएँ मशीनी नहीं रह जाएंगी बल्कि हमारे दैनिक जीवन का सहज हिस्सा होंगी। जब पहली बार मशीनों का आगमन हुआ तो दुनिया बदल गई। पेट्रोल तथा ऊर्जा के दूसरे साधनों का आगमन हुआ तो दुनिया फिर बदली। फिर कंप्यूटर, इंटरनेट तथा मोबाइल ने उसे बदला और ऐसी अनगिनत चीजें संभव हो गईं जिन्हें कुछ दशक पहले तक हम बहुत बड़ा मजाक समझते। कृत्रिम मेधा या तकनीकी बुद्धिमत्ता हमें फिर से बदलाव के उसी मोड़ पर ले आई है जैसा बदलाव सदियों में एक बार घटित होता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का दूसरा बड़ा प्रभाव होगा अन्य प्रमुख भाषाओं के साथ हिंदी के गहरे संबंधों का विकसित होना। प्रेमचंद, रवींद्रनाथ ठाकुर, सुब्रमण्य भारती, रामधारी सिंह दिनकर, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी के साहित्य से लेकर रामायण, महाभारत, श्रीमद्भग्वद्गीता, वेद, पुराण, उपनिषद् जैसे ग्रंथ, आयुर्वेद–योग जैसी ज्ञान संपदा, हमारी पत्रकारिता और विश्वविद्यालयों के शोध आदि दुनिया भर में गैर–हिंदी पाठकों तक पहुँच सकते हैं। यह हमारी साहित्यिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक तथा शैक्षणिक संपदा को वैश्विक पहचान दिलाने में योगदान देगा। इतना ही नहीं, बल्कि इससे कहीं अधिक आवश्यक है विश्व के ज्ञान, शोध, साहित्य का हिंदी भाषी लोगों तक पहुँचना। हिंदी में विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा, अर्थव्यवस्था आदि विषयों पर विश्व–स्तरीय सामग्री की कमी है। जहाँ हम स्वयं ऐसी सामग्री तैयार करने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मदद ले सकते हैं वहीं हम मशीन अनुवाद के माध्यम से वैश्विक ज्ञान को अपनी भाषा में ग्रहण कर सकेंगे। यह ज्ञान अंग्रेजी तक सीमित नहीं होगा बल्कि पूर्वी–पश्चिमी, उत्तरी तथा दक्षिणी– सभी क्षेत्रों से हम तक आ सकेगा, भाषाओं की सीमाओं के बिना। वैश्विक भाषाओं के साथ ज्ञान के इस आदान–प्रदान से एक बड़ा अंतराल भरा जा सकेगा।

मशीन अनुवाद कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दायरे में आता है और कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमारे व्यवहार, कामकाज, नए–पुराने विशालतम डेटा भंडारों, मानवीय फीडबैक, अपनी गलतियों आदि से सीखने तथा स्वयं को निरंतर निखारने में सक्षम है। पाँच साल पहले जैसा मशीन अनुवाद होता था, वैसा आज नहीं होता और आज जैसा होता है, वैसा पाँच साल बाद नहीं होगा। कुछ वर्षों के भीतर हम ऐसे मशीन अनुवाद की स्थिति में पहुँच सकते हैं जो मानवीय अनुवाद की ही टक्कर का होगा। सबसे बड़ी बात यह है कि यह अत्यंत स्वाभाविक रूप से उपलब्ध होगा– कंप्यूटर तथा मोबाइल के जरिए ही नहीं बल्कि दर्जनों किस्म के डिजिटल उपकरणों के जरिए जो हमारे घरों, दफ्तरों, विद्यालयों और यहाँ तक कि रास्तों और इमारतों में भी मौजूद होंगे।

शिक्षण क्रांति की ओर

हिंदी में शिक्षण सामग्री तैयार करना आसान तथा तेज हो जाएगा। आज केंद्र सरकार तथा कुछ राज्य सरकारों के निर्देश पर हिंदी में पाठ्य–सामग्री तैयार करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग होने लगा है। यह प्रक्रिया निरंतर सटीक और तीव्र होती चली जाएगी। अंग्रेजी–फ्रेंच या जर्मन की किताबों को स्कैन करके चंद मिनटों में सीधे हिंदी में अनुवाद करना संभव हो गया है। कल्पना कीजिए कि हम हिंदी में जिन विषयों में अच्छी सामग्री की कमी से परेशान रहे हैं, उन विषयों में अचानक ही दर्जनों या सैंकड़ों पुस्तकें उपलब्ध हो जाएँ। हिंदी में पारंपरिक ज्ञान का दस्तावेजीकरण आसान हो जाएगा। वाचिक ज्ञान को डिजिटल स्वरूपों में सहेजा जा सकेगा। हिंदी भाषी लोग वैश्विक संस्थानों में पढ़ सकेंगे, भाषाओं की सीमाओं से मुक्त रहते हुए कौशल प्राप्त कर सकेंगे और विश्व को अपनी सेवाएँ दे सकेंगे। हिंदी बोलने–लिखने वाला व्यक्ति प्रौद्योगिकी के प्रयोग से अंग्रेजी, जापानी, चीनी, स्पैनिश, फ्रेंच या अन्य भाषाभाषी लोगों को कन्टेन्ट और सेवाएँ उपलब्ध करा सकेगा, बिना उन भाषाओं की जानकारी रखे। तकनीक की मदद से भाषायी चुनौतियों तथा दूरियों का सिमटना और अप्रत्याशित अवसरों का घटित होना संभव है। ऐसी अकल्पनीय घटनाएँ आने वाले वर्षों में सामान्य परिपाटी बन सकती हैं, यदि हमारी भाषा अपने दौर के इन आधुनिक अनुप्रयोगों को आशंका, उपेक्षा या घृणा की दृष्टि से न देखे बल्कि उनके प्रति खुला दृष्टिकोण रखे।

हिंदी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य घटित हो रहा है। ध्वनि प्रसंस्करण की बदौलत वाक् से पाठ और पाठ से वाक् (स्पीच टू टेक्स्ट) प्रौद्योगिकी उपलब्ध हो गई है। कंप्यूटर विजन के कारण हिंदी के दस्तावेजों को स्कैन करके उनके पाठ को कंप्यूटर में टाइप किए गए पाठ के रूप में सहेजना संभव हो गया है। डेढ़ सौ से अधिक वैश्विक भाषाओं और बीस से अधिक भारतीय

भाषाओं के साथ हिंदी के पाठ का दोतरफा अनुवाद संभव है। अलेक्सा, कोर्टाना, सिरी और गूगल असिस्टेंट जैसे डिजिटल सहायकों के साथ या तो हिंदी में संवाद करना संभव है या इंटरनेट सर्च तथा अनुवाद आदि के लिए उनकी मदद ली जा सकती है। माइक्रोसॉफ्ट और गूगल जैसी कंपनियों की एपीआई का प्रयोग करके हिंदी में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से युक्त एप्लीकेशन बनाना संभव हो गया है। बात चैटजीपीटी तक जा पहुँची है जो ऐसी कृत्रिम मेधा है जिसके साथ संवाद किया जा सकता है और अपने प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किए जा सकते हैं।

हिंदी समाज में इस तरह की तकनीकी उपलब्धियों को गिनाने और उन पर प्रसन्न होने की प्रवृत्ति दिखाई देती है। इससे लोगों में कौतूहल तो अवश्य पैदा हो सकता है और नए घटनाक्रमों के बारे में उनकी जानकारी भी बढ़ती है, लेकिन हिंदी, अन्य भारतीय भाषाओं या भारतीय समाज की प्रगति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यह प्रभाव तब पड़ेगा जब हम इन उपलब्धियों की जानकारी देने से आगे बढ़ेंगे और इनमें कौशल प्राप्त करेंगे। हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर आधारित सुविधाओं के कुशल प्रयोक्ता तो बनेंगे ही, उनके विशेषज्ञ, शोधकर्ता और विकासकर्ता (डेवलपर) बनने की तरफ आगे बढ़ेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि भारत दुनिया में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का केंद्र (ग्लोबल हब ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) बनने की क्षमता रखता है। हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाएँ बोलने वाले हम लोग यह सपना सच करने में मदद कर सकते हैं। याद रखिए, अगर हम इसमें प्रवीणता हासिल करते हैं तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमें अब तक की सीमाओं, वैश्विक व भाषायी असमानताओं आदि से मुक्त होकर विकास की नई दौड़ में बढ़त लेने का मौका दे सकती है। वैसे ही, जैसे विनिर्माण (मैन्युफैक्चरिंग) ने चीन की सूरत बदल दी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमारी शक्ल बदलने में सक्षम है। वह यकीनन दुनिया के भविष्य को प्रभावित करेगी।

कर्म किये जा...

कार्तिक कुमार पाटडिया*

कर्म किये जा, कर्म किये जा,
अच्छे–अच्छे तू कर्म किये जा।

न कर बुरा, न होने दे,
अन्यायों का विध्वंस किये जा।

क्यों सोचे तू केवल अपना,
औरो के दुःख का नाश किये जा।

न कर तू अभिमान खुद पर,
कुछ नहीं तेरा यह जान लिए जा।

क्यों करे अपमान किसी का,
सब बन्दों का आदर किये जा।

न दे तू तक़दीर को दोष,
लक्ष्य अनुरूप कार्य किये जा।

क्यों रहे तू सहमा–सहमा,
इस सुन्दर प्रकृति से प्यार किये जा।

न कर तू परिणाम की चिंता,
रख आशा और सत्कार्य किये जा।

कर्म किये जा, कर्म किये जा,
अच्छे–अच्छे तू कर्म किये जा।

*भंडारगृह सहायक श्रेणी–।, क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

जीवन में धैर्य और व्यवहार का महत्व

रेखा दुबे*

विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाने पर भी मन में चिन्ता, शोक और उदासी उत्पन्न न होने देने का गुण धैर्य कहलाता है। धैर्य मनुष्य के व्यक्तित्व को ऊँचा उठाने का सर्वोत्तम गुण है। धैर्यवान व्यक्ति विपत्ति आने पर भी अपना मानसिक सन्तुलन खोए बिना शान्तचित्त होकर विपरीत परिस्थिति में भी दुख से बचने का सरल मार्ग खोज ही लेता है। आत्म–नियंत्रण स्थिति में अपनी प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करने और बिना किसी शिकायत के इसे सहन करने में सक्षम होना धैर्यवान की निशानी है और विनम्रता ऐसी हो कि आप यह स्वीकार करें कि आप किसी और से अधिक महत्वपूर्ण नहीं हैं। उदारता ऐसी अपनाएं कि हर उस व्यक्ति को भी देखकर मुस्कुराएं तब भी जब ऐसा लगे कि वह आपके विरुद्ध साजिश रच रहा है।

व्यवहार व्यक्ति के दैनिक जीवन का एक हिस्सा है। अच्छा व्यवहार हमारी सोच, व्यवहार, हावभाव और दूसरों से बात करने का तरीका है। यह बताता है कि हमें दूसरों के साथ सम्मानजनक और विनम्र तरीके से कैसे व्यवहार करना चाहिए। यह एक सामान्य व्यक्ति को भी एक सभ्य या कुलीन व्यक्ति में परिवर्तित करने की क्षमता रखता है। इसकी व्यक्तिगत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है। यह एक सकारात्मक आत्म–छवि को बढ़ावा देता है, पारस्परिक संबंधों को भी मजबूत करता है और भावनात्मक बुद्धिमत्ता को विकसित करता है। अच्छा व्यवहार से न केवल हम दूसरों से सम्मान अर्जित करते हैं बल्कि अपना आत्म–सम्मान और आत्म–विश्वास भी बढ़ाते हैं।

व्यवहारिक इंसान ज्यादा खुशमिजाज होते हैं। व्यवहार कुशल होना अपने आप में काबिले तारीफ है जो इंसान को सफल बनाने के साथ–साथ हर दिल अजीज बनाता है। अच्छे व्यवहार जीवन में लाभ देते है तो बुरे व्यवहार जीवन में हानि भी पहुंचाते है।

मानव जीवन चुनौतियों से जूझने का नाम है तो सुखों से परिपूर्ण एक संपूर्ण संसार भी है। बचपन से प्रौढ़ावस्था तक के सफर में न जाने कितने उद्देश्य व लक्ष्य पाने की चाह जीवन में कब शुरू होती है और अनंत सपनों को बुन देती है इसकी परिकल्पना भी नहीं की जा सकती क्योंकि चाहतें तो सदैव परवान चढ़ने को उतारू रहती हैं।

कई लोग हैं जिनकी अपने जीवन में बहुत आकांक्षाएं हैं तो कुछ बिना आकांक्षाओं के ही जी रहे हैं। जिंदगी तो सभी के लिए वही है फर्क बस इतना है कि कोई दिल से जी रहा है और कोई दिल रखने के लिए। कई अपने जीवन में गगन की ऊंचाइयों को पार पाने में सक्षम होते हैं तो कुछ के छोटे–छोटे सपने भी परवान नहीं चढ़ते। लेकिन चलना जीवन की निशानी है और धैर्य धारण करके और चेहरे पर एक प्यारी सी मुस्कान के साथ किसी भी कार्य की शुरुआत की जाए तो नतीजे बेहतर ही होंगे।

ज़िंदगी में मुश्किलें तमाम हैं
फिर भी होठों पर मुस्कान है
क्योंकि जीना है जब हर हाल में
फिर मुस्कुराकर ही जीने में क्या नुकसान है।

जीवन में कई बार ऐसा समय आता है जब हमारी परिस्थिति हमारा साथ नहीं देतीं तो कभी हमारे प्रयास में कमी होती है। हम सब कुछ बदलना तो चाहते हैं लेकिन खुद को बदलने का प्रयास नहीं करते और हमारी यही कमी हमें कई खुशियों से महरूम कर देती है। गालिब ने सच कहा है कि

*वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

उम्र भर गालिब यही भूल करता रहा
धूल चेहरे पर थी और आईना साफ करता रहा

हम कहते हैं कि जीवन छोटा है पर मेरा मानना है कि जीवन छोटा नहीं है, बल्कि हम जीना ही देर से शुरू करते हैं। जो नहीं मिला उसके पीछे आंसू बहाकर जो मिला उसका जश्न नहीं मनाते और इससे बहुत सी खुशियां हाथों से फिसल जाती हैं।

मैं एक छोटी सी घटना आपके साथ साझा करती हूं जो मेरे दिल के काफी करीब है। मैं एक दिन रैडलाइट के पास अपनी एक दोस्त की प्रतीक्षा कर रही थी। मैं बड़ी देर से देख रही थी कि करीब दस साल का एक बालक हर बार रैडलाइट पर रुकने वाली ज्यादातर गाडियों की ओर तेज़ी से बढ़ता और कार के शीशे साफ करता। कोई उसे पैसे दे रहा था तो कोई नहीं भी। लेकिन मैं उसके धैर्य की दाद दे रही थी कि बिना किसी उम्मीद और चेहरे पर कोई झुंझलाहट लाए बिना वो हर गाड़ी को बड़ी तसल्ली से साफ कर रहा था। इस बार रैडलाइट पर एक मर्सीडीज रुकी, उस बच्चे ने शीशे साफ किए। कार की विंडो खुली और उस व्यक्ति ने बच्चे से कुछ कहा और बच्चे की आंखों में आश्चर्य के साथ खुशी चमकी। मुझे जानने की जिज्ञासा हुई और मैं कुछ आगे बढ़ी लेकिन तभी कार का दरवाजा खुला और बच्चा लपक कर बैठ गया। मेरी जिज्ञासा बढ़ने लगी। मेरी दोस्त को पहुंचने में समय लग रहा था लेकिन मेरा मन उस बच्चे पर ही अटक गया था। करीब दस मिनट के बाद रैडलाइट पर फिर मेरे सामने ही कार रुकी और उसमें से एक बच्चा उतरा। मैंने गौर किया कि यह वही बच्चा था। मेरा मन किया कि मैंने उससे बात करुं। बच्चे के चेहरे पर गजब की चमक थी। मैंने उसे बुलाया और पूछा कि तुम इस रैडलाइट पर सारी गाडियां साफ करते हो और कोई पैसे भी नहीं देता फिर भी तुम तन्मयता से अपना काम करते रहते हो। जब तुम्हें कोई पैसे नहीं देता तो बुरा नहीं लगता कि तुम्हारी मेहनत व्यर्थ गई। वो अब तक कार

की सवारी के खुमार में था और आंखों में चमक लिए हुए बोला मैं बस अपना काम करता हूं, जो देता है उसका भी भला और जो न दे उसका भी। उसकी बातों ने वाकई मेरा दिल जीत लिया। इतने अभाव में भी स्थिति का कोई प्रभाव नहीं। मैंने अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए पुनः पूछा कि तुम्हें उस कार वाले ने ऐसा क्या कहा कि तुम उसके साथ चल दिए। दीदी साहब ने कहा कि गाड़ी में बैठेगा तो मैंने हां कर दी। तुम्हें एक अनजान के साथ जाने में डर नहीं लगा। नहीं दीदी रोज इतने लोगों से बात होती है कि अब डर नहीं लगता किसी भी बात से। मैं उस बच्चे से प्रभावित हो रही थी। कार वाले अंकल से मेरी बात भी हुई। उन्होंने बताया कि वो कार उनके पिता ने उन्हें गिफ्ट की है। अंकल ने मुझे पैसे भी दिए। मैंने पूछा कि तुम्हारा भी मन करता होगा कि कोई तुम्हें भी गिफट दे तो वो बोला मेरे पिता नहीं हैं जो मुझे गिफ्ट दें, ये कहते हुए उसकी आंखों में मैंने नमी देखी। लेकिन दीदी मैं अपनी मेहनत से अपना समय बदल दूंगा। मुझे वाकई ही उस बच्चे पर प्यार आया और मैंने पर्स से कुछ पैसे उसे देने चाहे। उसने आनाकानी की लेकिन मैंने उसकी पॉकेट में डाल दिए। मैंने फिर पूछा कि तुम पढ़ाई करते हो कि नहीं। उसने बताया कि वह नाइट स्कूल में पढ़ता है। मैंने उससे पूछा कि तुम बड़े होकर क्या बनना चाहते हो तो उसके जवाब ने वाकई मेरे मन को झंझोर दिया। उसने बड़ी ही मासूमियत से कहा कि मेरा मन है कि मैं भी ऐसा पिता बनूं कि अपने बच्चों को ऐसी कार उपहार में दे सकूं। मैं उस बालक की सोच पर हैरान थी कि इतनी छोटी सी उम्र और वो भी अभावों से भरी हुई और इतनी बड़ी सोच। मेरा मन भर आया मैंने प्यार से उस बालक के सर पर हाथ फेरा और कहा कि एक दिन तुम सचमुच अपने सपने को पूरा करोगे। मैंने दिल से दुआ की कि हे ईश्वर इसे अपनी पनाह में रखना और इसके सपनों को गगन देना। इस घटना को बताने का मेरा मकसद केवल इतना ही था कि इस बालक के धैर्य और उस कार मालिक के व्यवहार ने मेरी इस सोच को मजबूत किया कि हमारे जीवन को दो बाते हैं जो खूबसूरत बना सकती हैं या यूं कहें कि हमारे जीवन को परिभाषित करती हैं और वे हैं धैर्य और व्यवहार। आपका धैर्य जब आपके पास कुछ न हो और आपका व्यवहार जब आपके पास सब कुछ हो। ये दोनों बातें आपको आम से खास बनाने की ताकत रखती हैं। जैसे वो बालक वाकई मेरे लिए खास हो गया। उस व्यक्ति के व्यवहार ने उस साधारण से बालक के जीवन को एक असाधारण लक्ष्य दे दिया जिसे पूरा करने का जुनून मैंने उस बच्चे की आंखों में देखा। हमारा धैर्य धारण हमारी सफलता की हर कुंजी है। अंडे को सेने से ही चूजा निकलता है, न कि अंडे को तोड़ने से। इसी प्रकार हमारी डिग्री कागज़ का टुकड़ा है अगर आपकी शिक्षा आपके व्यवहार में न दिखे।

धैर्य का दामन थामे रखो क्योंकि आसान होने से पहले सभी चीजें मुश्किल होती हैं। ऐसा बहुत कम होता है कि जल्दबाजी करने वाला नुकसान न उठाये, और ऐसा हो ही नहीं सकता कि सब्र करने वाला नाकाम हो। सब्र एक ऐसी सवारी है जो अपने सवार को कभी गिरने नहीं देती, न किसी की नज़रों में और न किसी के कदमों में और व्यवहार आपका ऐसा हो कि आप किसी के दिल में उतर जाएं न कि किसी के दिल से। सदैव याद रखें कि किसी भी परिस्थिति को अपनी मनःस्थिति पर हावी न होने दें और हर परिस्थिति में बस इतना ही कहें कि तू बड़ी नहीं है तुझसे बड़े मेरे हौसले हैं।

मत हारना तू कभी कोशिश करने से
बड़े से बड़ा पर्वत भी हिल जाएगा,
सब्र रख कर मेहनत करता जा
इक दिन इसका फल भी मिल जाएगा ।।

राष्ट्रभाषा हिन्दी

रमेश शर्मा*

विश्व में 300 से अधिक भाषाएं बोली जाती हैं। बड़े–बड़े राष्ट्रों जैसे जापान, चीन, रूस, जर्मनी में राष्ट्रीय भाषा वहां की बोली जाने वाली भाषा है। वे अपनी भाषा पर गर्व करते हैं और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी वे अपनी भाषा में बात करते हुए गर्व महसूस करते हैं।

भारत देश में चार भाषा बोले जाने वाले भाषा परिवार पाये जाते हैं भारोपीय, द्रविड़, ऑस्ट्रिया और चीनी–तिब्बत। हमारे देश में सबसे अधिक बोले जाने वाली भाषा परिवार भारोपीय परिवार हैं।

हिंदी भाषा भारत की मूल पहचान है। हिंदी भाषा सीखना और बोलना तथा पढ़ना बहुत आसान है। यह भाषा हमें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान और गौरव प्रदान करती है।

हिंदी भाषा का जन्म लगभग सौ वर्षों पहले देवभाषा संस्कृत की कोख से हुआ था। ऐसा माना जाता है भाषा और संस्कृति देश की पहचान होती है। भाषा का ऐसा माध्यम जिसके द्वारा हम अपने विचारों का आदान–प्रदान कर सकते हैं।

भारत में सैकड़ों भाषाएं और बोलियां बोली जाती हैं। ऐसे में कौन–सी भाषा राष्ट्रभाषा चुनी जाये, आजादी के बाद संविधान सभा के समक्ष यह काफी अहम मुद्दा था। काफी सोच–विचार के बाद हिंदी को सरकारी कामकाज की भाषा चुना गया। संविधान सभा ने लंबी चर्चा के बाद 14 सितंबर सन् 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। इसके बाद अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा के संबंध में व्यवस्था की गई।

संविधान सभा में बोलते हुए प्रथम राष्ट्रपति स्वर्गीय श्री राजेन्द्र प्रसाद जी ने कहा कि यह मानसिक दशा का भी प्रश्न है जिसका हमारे समस्त जीवन पर प्रभाव पड़ेगा। हम केंद्र में जिस भाषा का प्रयोग करेंगे, उससे हम एक–दूसरे के निकट आते जायेंगे। इससे अवश्यमेव हमारे संबंध घनिष्ठ होंगे। विशेषतः इसलिए कि हमारी परंपराएं एक हैं, हमारी संस्कृति एक ही है और हमारी सभ्यता में सब बातें एक हैं। यदि हम इस सूत्र को स्वीकार नहीं करते हैं तो परिणाम यह होता है कि इस देश में बहुत–सी भाषाओं का प्रयोग होता या वे प्रांत पृथक हो जाते। जो बाध्य होकर किसी भाषा विशेष को स्वीकार करना नहीं चाहते। अतः भावी संतति हमारे हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित करने के लिए हमारी सराहना करेगी। भारत मजबूती के साथ एक होकर विकास करेगा।

संविधान की धारा 343 के अनुसार भारतीय संघ की राजभाषा हिंदी एवं देवनागरी लिपि है। संविधान में यह व्यवस्था की गई कि न्यायिक और विधिक भाषा हिंदी होगी। आज हिंदी भारत में जनमानस की भाषा है।

स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने पहली बार यू एन ओ में हिंदी में भाषण देकर राष्ट्रभाषा का सम्मान बढ़ाया जिसे अनुवादकों की सहायता से सभी अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में प्रसारित किया गया।

देश में तकनीकी और आर्थिक विकास के साथ–साथ अंग्रेजी भाषा पूरे देश पर हावी होती जा रही है। हिंदी देश की राजभाषा होने के बावजूद आज हर जगह अंग्रेजी का वर्चस्व कायम है। हिंदी जानते हुए भी लोग हिंदी में

*प्रबंधक, आयुर्वेद फार्मास्यूटिकल कंपनी, ऑल इंडिया सेल्स एंड ट्रेनिंग, जयपुर

बोलने, पढ़ने या काम करने में हिचकते हैं। इसलिए भारत सरकार का प्रयास है कि हिंदी के प्रचलन के लिए उचित माहौल तैयार किया जा सके।

राजभाषा हिंदी के विकास के लिए खास तौर से राजभाषा विभाग का गठन किया गया। भारत सरकार का राजभाषा विभाग इस दिशा में कार्यरत है कि केंद्र सरकार के अधीन कार्यालयों में अधिक से अधिक काम हिंदी भाषा में हो। इस कड़ी में राजभाषा विभाग हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाता है। 14 सितंबर, 1949 का दिन भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण है। इस दिन संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इस निर्णय को महत्व देने के लिए और हिंदी के उपयोग को प्रचलित करने के लिए 1953 के उपरांत हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

14 सितंबर, 2017 को राजभाषा विभाग द्वारा नई दिल्ली के विज्ञान भवन में हिंदी दिवस पर समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर देश के पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी ने कहा कि हिंदी अनुवाद की भाषा न हो कर संवाद की भाषा हो। किसी अन्य भाषा की तरह हिंदी भी मौलिक सोच की भाषा है। इस अवसर पर सरकारी कर्मचारियों और नागरिकों को मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार दिए गये।

हमारे प्रधानमंत्री जी ने हिंदी के विकास के महत्व को समझाया। आदरणीय प्रधानमंत्री जी अधिकतर अपने भाषण हिंदी भाषा में ही देते हैं। इससे राष्ट्र और राष्ट्रभाषा का गौरव बढ़ता है।

आजकल मेडिकल और इंजीनियरिंग की पुस्तकें भी हिंदी भाषा में उपलब्ध हैं इसलिए हिंदी भाषी क्षेत्र के छात्र भी इन क्षेत्रों में भाग लेकर देश की तरक्की में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। भारतीय सिविल सेवा परीक्षा और अन्य अधिकारी परीक्षा भी हिंदी माध्यम में होने से उत्तर भारत के युवा भी प्रशासनिक सेवा में सफलता प्राप्त कर रहे हैं और देश की सेवा कर रहे हैं।

हम सभी भारतवासियों का कर्तव्य है कि हम हिंदी के प्रचार–प्रसार में अपना योगदान दें। इसे अपने दैनिक जीवन में अपनी भाषा के रूप में प्रयोग करें।

हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है.

– मैथिलीशरण गुप्त

इक्कीसवीं सदी में हिंदी की वैश्विक चुनौतियाँ

प्रो. रवि शर्मा 'मधुप'*

इक्कीसवीं सदी वैश्वीकरण की सदी है। इसमें ज्ञान–विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी का बोलबाला हो रहा है। कृत्रिम बुद्धि का नवीनतम रूप है – मानवीय संवेदनाओं से युक्त रोबोट। इसका नवीनतम उदाहरण है–सोफ़िया, जिसे संयुक्त अरब अमीरात ने पहली रोबोट महिला के रूप में अपने देश की नागरिकता दे दी है। कैसी विडंबना है कि मनुष्य में मानवीयता घट रही है, यांत्रिकता बढ़ रही है और यंत्रों में मानवीयता लाने के प्रयास जारी हैं। दूसरी ओर, प्रकृति मनुष्य के आक्रमणों को झेलते हुए अब पलटवार करने लगी है। भूकंप, बादल फटना, ज्वालामुखी फटना, भू–क्षरण, समुद्र में सुनामी जैसी आपदाएँ बढ़ती जा रही हैं। नई–नई बीमारियाँ और प्राकृतिक आपदाएँ 21वीं सदी में नवीन चुनौतियाँ बनकर उभर रही हैं। बाजारीकरण, औद्योगीकरण, उदारीकरण, आधुनिकीकरण के कंधों पर सवार वैश्वीकरण भाषा, साहित्य, संस्कृति, मानवीयता के समक्ष नए संकट और नई चुनौतियाँ लेकर प्रस्तुत हो रहा है।

वैश्विक चुनौतियों से भरपूर इस विश्व में आज साहित्य और संस्कृति पर जो संकट दृष्टिगोचर होता है, उसके मूल में है – भाषाओं पर मंडराता संकट। दो सदी पहले विश्व में 6000 से अधिक भाषाएँ जीवित थीं, जिनमें से लगभग आधी या तो मर चुकी हैं या मरने के कगार पर हैं। किसी भाषा का मरना केवल उस भाषा के वर्ण, शब्द और वाक्यों का मरना ही नहीं है, अपितु उस भाषा के माध्यम से भाषा प्रयोक्ताओं द्वारा सैकड़ों वर्षों में अर्जित ज्ञान–विज्ञान, संस्कार, जीवन–मूल्य, जीवन–दृष्टि का मरना भी है। जब हम किसी भाषा का प्रयोग बंद कर देते हैं, तो स्वाभाविक रूप से उस भाषा में प्राप्त समस्त उपलब्धियों से भी वंचित होते चले जाते हैं।

बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में प्रकट वैश्वीकरण को पंख प्रदान करने का कार्य संचार क्रांति और सूचना क्रांति ने किया। इनके परिणामस्वरूप देश और काल की सीमाएँ समाप्त होती चली गईं। सूचनाओं का आदान–प्रदान त्वरित, सस्ता और सर्वसुलभ हो गया। इस सारी स्थिति का सर्वाधिक लाभ उठाया है– हिंदी ने।

हिंदी के बढ़ते संख्या बल ने हिंदी को वैश्विक स्वरूप प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी भाषा विश्व के 120 देशों में प्रयोग की जा रही है। 2 करोड़ से अधिक समृद्ध, संपन्न प्रवासी भारतीय हिंदी के कारण भारत और भारतीयता से जुड़े हैं। विश्व भाषा के कुछ सामान्य लक्षणों की कसौटियों पर हिंदी को कसने पर हम देखते हैं कि इनमें से अधिकतर कसौटियों पर हिंदी खरी उतरती है। फिर भी कई क्षेत्रों में अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं, जिनके समाधान की आवश्यकता है। इनमें से प्रमुख चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं:

1. विश्व में हिंदी शिक्षण का मानक स्वरूप निर्धारित करना

इन चुनौतियों में सर्वप्रमुख है – विश्व में हिंदी शिक्षण का मानक स्वरूप निर्धारित करना। वास्तव में विश्व की भाषाओं में इतनी अधिक विविधता है कि पूरे विश्व के लिए हिंदी शिक्षण का एक मानक पाठ्यक्रम बनाना कोई हँसी–खेल नहीं है। मेरे विचार में इस चुनौती का सामना

*प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

करने के लिए विश्व हिंदी सचिवालय को विश्व की 20–25 प्रमुख भाषाओं के हिंदी प्रेमी शिक्षाविदों की एक समिति बनानी चाहिए। वे शिक्षाविद् भारतीय हिंदी शिक्षाविदों एवं तकनीकी विशेषज्ञों के साथ मिलकर वैश्विक हिंदी शिक्षण का एक मानक पाठ्यक्रम तैयार करें। इस पाठ्यक्रम में 50% सामान्य हिंदी पाठ्यक्रम हों और शेष 50% पाठ्यक्रम उस देश की भाषा और संस्कृति के अनुरूप होना चाहिए। इस बात का ध्यान रखा जाए कि हिंदी शिक्षण मुख्यतः देवनागरी लिपि के माध्यम से हो।

विदेशों में हिंदी शिक्षण की समस्याओं और चुनौतियों को समझने के लिए हमें अध्ययन की सुविधा के लिए विषय को तीन मुख्य भागों में विभाजित करना होगा –

पहले भाग के अंतर्गत वे देश आते हैं, जिनमें प्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूर के रूप में गए थे, जैसे मॉरीशस, फ़िजी, सूरीनाम, गयाना, त्रिनिदाद, टोबेगो, दक्षिण अफ्रीका आदि।

दूसरे वर्ग में भारतीय संस्कृति और ज्ञान विज्ञान से प्रभावित भारत के पड़ोसी देश जैसे चीन, जापान, बर्मा, श्रीलंका, भूटान, नेपाल, थाईलैंड, मलेशिया, इंडोनेशिया, कोरिया आदि देश। स्मरण रहे कि अंग्रेज़ी शासनकाल में बांग्लादेश, पाकिस्तान और अफगानिस्तान का कुछ भूभाग भी भारत का ही था; इसलिए उनमें जो अध्ययन हो रहा था, वह भारत के ही अंतर्गत माना जाएगा।

तीसरे वर्ग में पश्चिमी देश आते हैं, जो आधुनिक काल में औद्योगीकरण, पूंजीवाद, अधिनायकतंत्र, साम्यवाद आदि विविध शासन पद्धतियों के अंतर्गत विकसित होने का प्रयास कर रहे थे। इन देशों में इंग्लैंड, अमेरिका, फ्रांस, सोवियत संघ, स्विटजरलैंड, जर्मनी, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया आदि देश शामिल हैं।

प्रथम वर्ग में आने वाले गिरमिटिया देशों में हिंदी शिक्षण का मुख्य उद्देश्य हिंदू धर्म, उसके रीति–रिवाज़, पौराणिक आख्यान आदि को इन देशों में जीवित रखने का प्रयास था। इन सब देशों में हिंदी शिक्षण अनौपचारिक रूप से शुरू हुआ और धीरे–धीरे आवश्यकता और माँग के अनुरूप व्यवस्थित और विधिवत रूप से प्रदान किया जाने लगा। इन देशों में धीरे–धीरे विभिन्न धार्मिक संस्थान स्थापित किए गए जैसे आर्य समाज, हिंदू महासभा, सनातन धर्म सभा आदि। इन सभी संस्थानों की भारतीय संस्कृति के संरक्षण और प्रचार–प्रसार में जो महती भूमिका रही है, उसका आधार इनके द्वारा हिंदी शिक्षण के लिए किए गए प्रयास माने जा सकते हैं।

इन देशों में हिंदी शिक्षण स्वाभाविक और सहज रूप में विकसित हुआ, क्योंकि ये लोग हिंदी भाषी ही थे। इनकी मातृभाषा हिंदी और उसकी विविध बोलियाँ ही थीं। इनमें से कुछ लोग पढ़ना–लिखना जानते थे, जिसे रामायण बाँचना कहा जाता है। इसी कार्य के द्वारा इन्होंने हिंदी भाषा को अपनाया और आगे बढ़ाया। बाद में, जब वहाँ विद्यालयों की स्थापना हुई, तो इन लोगों ने हिंदी भाषा को वहाँ शिक्षा में स्थान दिया। आज तो मॉरीशस में महात्मा गाँधी संस्थान के रूप में हिंदी का एक विश्वस्तरीय शिक्षण–प्रशिक्षण केंद्र बना हुआ है, जिसकी नींव 200 वर्ष पूर्व 'बैठका' रूपी संस्था में रखी गई थी। आज मॉरीशस में हिंदी में शोध स्तर तक की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। कुछ हद तक ऐसी ही स्थिति अन्य गिरमिटिया देशों में भी रही, चाहे फ़िजी हो या सूरीनाम।

भारतीय संस्कृति और ज्ञान–विज्ञान से प्रभावित हमारे विभिन्न पड़ोसी देशों, जिन्हें हम दक्षिण एशियाई देश भी कहते हैं, के साथ भारत का ज्ञान–विज्ञान के शिक्षण–प्रशिक्षण का संबंध प्राचीनकाल से चला आ रहा था। इन देशों में हिंदी शिक्षण आधुनिक काल में विधिवत रूप से प्रारंभ हुआ। चीन, जापान, थाईलैंड, बर्मा, भूटान, नेपाल, श्रीलंका आदि देशों में हिंदी शिक्षण की चुनौतियाँ गिरमिटिया देशों की तुलना में अलग प्रकार की हैं। इसका मुख्य कारण है–इन देशों की अपनी भाषाएँ हिंदी और संस्कृत से थोड़ा दूर होने के कारण इन लोगों को हिंदी सीखने में विशेष प्रयास करने पड़ते हैं। इसके बावजूद बड़ी संख्या में हिंदी और संस्कृत की महत्त्वपूर्ण कृतियों का

इन देशों की भाषाओं में अनुवाद होना इस बात का प्रमाण है कि इन देशों के विद्वानों ने संस्कृत और हिंदी के महत्त्व को समझते हुए इसके समृद्ध साहित्य को अपने देश की भाषाओं में लाने का चुनौतीपूर्ण कार्य स्वेच्छापूर्वक किया।

तीसरे वर्ग में पश्चिम के विभिन्न देशों में हिंदी अध्ययन–अध्यापन की चुनौतियाँ एक अलग रूप में दिखाई देती हैं। इन देशों में प्रयोग की जाने वाली भाषाएँ भारोपीय (भारत यूरोपीय) परिवार की भाषाएँ होने के कारण उनकी संस्कृत से निकटता सर्वविदित है। इनमें से कुछ भाषाओं का व्याकरण भी संस्कृत के निकट है, जैसा कि इटली के हिंदी भाषाविद् डॉक्टर मार्को जोली ने मुझे व्यक्तिगत चर्चा के दौरान बताया था।

इसी प्रकार के विचार एक ई–संगोष्ठी में बलगारिया की हिंदी विदुषी प्रोफेसर मिलेना ब्रोतेवा ने व्यक्त किए। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि बलगारियन भाषा को हिंदी माध्यम से सिखाना अधिक सरल है। उन्होंने पेटर शब्द का उदाहरण देकर बताया यह शब्द संस्कृत के पितृ शब्द के निकट है, इसे बुलगारियन भाषा में पेतर कहा जाता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में विगत 30 वर्षों से हिंदी शिक्षण कर रही प्रोफेसर नीलू गुप्ता ने वहाँ हिंदी शिक्षण में आने वाली समस्याओं और चुनौतियों के बारे में बताया और उनके समाधान के रूप में उन्होंने उच्चारण आधारित ऐसे प्रयोग किए, जिनसे हिंदी सरल रूप से विदेशी विद्यार्थियों तक पहुँचाई जा सकती है। इसी प्रकार इंग्लैंड, जर्मनी, पोलैंड, ऑस्ट्रेलिया, डेनमार्क आदि देशों में भी हिंदी शिक्षण की इसी प्रकार की चुनौतियाँ हैं।

विदेशों में हिंदी शिक्षण

आज विश्व के लगभग सभी देशों में हिंदी शिक्षण प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय स्तर पर हो रहा है। इसके लिए धार्मिक, सामाजिक संस्थाएँ तो प्रयासरत हैं ही, सरकारी स्तर पर विद्यालय और विश्वविद्यालयों के साथ–साथ निजी स्तर पर भी शिक्षण निरंतर संचालित हो रहा है। इस समय विदेशों के लगभग 175 विश्वविद्यालयों तथा सैकड़ों छोटे–बड़े केंद्रों में विद्यालय स्तर से लेकर शोध स्तर (पीएच.डी.) तक हिंदी के अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था है। अनेक विपरीत परिस्थितियों और बाधाओं के बावजूद वर्तमान में विश्व में हिंदी शिक्षण की स्थिति संतोषजनक है।

2. हिंदी व्याकरण–वर्तनी में एकरूपता लाना

21वीं सदी में हिंदी की दूसरी वैश्विक चुनौती है– हिंदी व्याकरण–वर्तनी में एकरूपता लाना। इसमें कोई शंका या संदेह नहीं कि हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि विश्व में सर्वाधिक वैज्ञानिक हैं। इसके पक्ष में अनेक तर्क दिए जाते हैं, जो सर्वविदित हैं। स्थानाभाव और अनावश्यक विस्तार से बचने के लिए यहाँ वे तर्क नहीं दिए जा रहे। हिंदी वर्तनी और देवनागरी लिपि के मानकीकरण के लिए स्वतंत्रता के पश्चात् भारत सरकार के केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा विधिवत् रूप से गठित विद्वानों की समिति ने समय–समय पर हिंदी की वर्तनी और देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु दिशानिर्देश जारी किए। इनसे एकरूपता लाने में पर्याप्त मदद मिली। इसके बावजूद हिंदी–वर्तनी और देवनागरी लिपि में अभी भी कुछ विवादास्पद बिंदु शेष हैं, जिन पर विचार करने की आवश्यकता है।

हिंदी की वर्तनी की ही भाँति हिंदी के व्याकरण के भी मानकीकरण की अत्यधिक आवश्यकता है। विगत 25 वर्षों में हिंदी शिक्षकों की देश भर में आयोजित कार्यशालाओं में मैंने पाया कि हिंदी व्याकरण के संबंध में शिक्षकों को अनेक बिंदुओं पर स्पष्टता नहीं है। इसलिए आज हिंदी व्याकरण का मानक रूप निर्धारित करना अत्यावश्यक है, तभी विश्व भर में हिंदी शिक्षण में एकरूपता आ पाएगी। यह कार्य हिंदी के विभिन्न विद्वानों की एक समिति बनाकर किया जा सकता है।

3. हिंदी साहित्य का प्रमुख विदेशी भाषाओं में अनुवाद

हिंदी साहित्य का प्रमुख विदेशी भाषाओं में अनुवाद उपलब्ध करवाना भी किसी चुनौती से कम नहीं है। इस कार्य को विश्व के अनेक विद्वान अपने–अपने स्तर पर

वर्षों से करते आ रहे हैं। इसी के परिणामस्वरूप हिंदी और संस्कृत की सैंकड़ों श्रेष्ठ रचनाओं का अनुवाद विश्व की अनेक भाषाओं में किया जा चुका है। अब इस कार्य को व्यक्तिगत प्रयासों तक सीमित न करके संस्थागत रूप से किया जाना चाहिए, ताकि इस कार्य को समुचित गति प्रदान की जा सके।

यह कार्य विश्व हिंदी सचिवालय को वैश्विक हिंदी अनुवाद ब्यूरो बनाकर करना चाहिए। भारत को इस कार्य में सभी प्रकार से सहयोग देना चाहिए। इस ब्यूरो में विश्व की सभी प्रमुख भाषाओं के ऐसे विद्वान रखे जाएँ, जिनकी हिंदी भाषा पर भी समुचित पकड़ हो। इस कार्य को योजनाबद्ध रूप से पंचवर्षीय योजना बनाकर किया जा सकता है।

4. नवीन तकनीक के अनुरूप हिंदी को अद्यतन करना

नवीन तकनीक के अनुरूप हिंदी को अद्यतन करना वर्तमान सदी में वैश्विक हिंदी के सम्मुख एक चुनौती इसलिए है, क्योंकि 21 वीं सदी तकनीक की सदी है। तकनीकी विकास की इस आँधी में हिंदी और भारतीय भाषाओं की भूमिका कुछ देर से शुरू हुई। हिंदी में टाइपराइटर बनाने की बात हो, चाहे कंप्यूटर और इंटरनेट पर हिंदी और भारतीय भाषाओं की उपस्थिति का प्रश्न हो, यह कार्य विलंब से भले ही शुरू हुआ हो, किंतु इसने विगत कुछ दशकों में जो गति पकड़ी, उससे सारा विश्व आश्चर्यचकित हो गया।

यह सही है कि हिंदी ने अपने लचीलेपन के कारण बहुत शीघ्र ही तकनीक के विभिन्न रूपों को अपनाने का प्रयास किया है। कंप्यूटर के आने पर हिंदी में अनेक प्रकार के फ़ॉण्ट विकसित किए गए, किंतु इन अलग–अलग प्रकार के फ़ॉण्टों के कारण कंप्यूटर पर अंकित हिंदी की सामग्री को एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने या उसका प्रिंट लेने में अनेक परेशानियाँ उत्पन्न होने लगीं। यूनिकोड (यूनिवर्सल कोड) के आने से कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करना न केवल सरल हो गया, अपितु फ़ॉण्ट के कारण होने वाली कई परेशानियों से भी मुक्ति मिल गई।

यह भी सत्य है कि अभी भी हिंदी के मानक रूप को यूनिकोड में लिखने मैं कुछ व्यावहारिक समस्याएँ आ रही हैं, किंतु जिस तीव्रता से हिंदी ने तकनीक को अपनाकर स्वयं को कंप्यूटर के लिए सर्वाधिक उपयुक्त भाषा सिद्ध किया है, उससे यह आशा जागती है कि हिंदी प्रेमी तकनीकी विशेषज्ञ शीघ्र ही इन समस्याओं का हल भी खोज लेंगे।

कंप्यूटर के आने से कई नई सुविधाएँ हिंदी के पक्ष में मिलने लगीं, जिनमें सर्वप्रमुख है – वाक् से पाठ। इसका अर्थ यह है कि वक्ता कंप्यूटर या मोबाइल के सामने बैठकर अपनी बात बोलकर कहता रहे और कंप्यूटर या मोबाइल पर उसका लिखित रूप स्वतः ही आता रहे। यह हिंदी के पक्ष में किसी क्रांति से कम नहीं है। इस क्रांति की सफलता में हिंदी की मुख्य वैज्ञानिक विशेषता 'जैसा बोलते हैं, वैसा लिखते हैं' का बहुत बड़ा योगदान है।

5. प्रवासी हिंदी साहित्य का इतिहास लेखन

विगत लगभग डेढ़ सौ वर्षों में गिरमिटिया देशों में तथा लगभग एक सौ वर्षों में अन्य देशों में प्रवासी हिंदी साहित्य प्रचुर मात्रा में लिखा गया है। यह साहित्य प्रवासी भारतीयों की मनोदशा को तो दर्शाता ही है, उनके संघर्ष, आस्था, विश्वास और जिजीविषा को भी व्यक्त करता है। इस समृद्ध प्रवासी हिंदी साहित्य का विधिवत इतिहास लेखन 21वीं सदी में वैश्विक हिंदी की एक बड़ी चुनौती बनने जा रहा है।

इस कार्य को करने के लिए विश्व हिंदी सचिवालय और महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय को मिलकर योजना बनानी चाहिए। भारत सरकार के सक्रिय आर्थिक सहयोग के बिना यह कार्य आसमान से तारे तोड़े जाने जैसा ही प्रतीत होता है। इस कार्य के लिए एक वैश्विक समन्वय समिति बनाई जाए। इस समन्वय समिति में विश्व के प्रमुख देशों से हिंदी प्रेमी विद्वानों और साहित्य सेवियों को शामिल किया जाए।

प्रत्येक देश के लिए एक उपसमिति बनाई जाए, जिसमें उस देश में रहने वाले कुछ हिंदी के साहित्यकार तथा

अन्य हिंदी सेवी जोड़े जाएँ और उन्हें उस देश में अब तक रचित प्रवासी हिंदी साहित्य की प्रामाणिक जानकारी एकत्र करके, उसका विधिवत वर्गीकरण करके उस देश में प्रवासी हिंदी साहित्य का इतिहास लिखने का दायित्व सौंपा जाए। जब अलग–अलग देशों में रचित प्रवासी हिंदी साहित्य के अलग–अलग इतिहास तैयार हो जाएँ, तो उन्हें मिलाकर विश्व में प्रवासी हिंदी साहित्य का एक समग्र इतिहास तैयार किया जाए, जो अनेक खंडों में बनेगा।

6. प्रवासी हिंदी साहित्य का मूल्यांकन

प्रवासी हिंदी साहित्य का इतिहास लेखन संपन्न कर लेने के पश्चात अगला महत्त्वपूर्ण कार्य है – वैश्विक प्रवासी हिंदी साहित्य का मूल्यांकन। विश्व के विभिन्न देशों में रचे गए प्रवासी हिंदी साहित्य को भाषा वैज्ञानिक और साहित्यिक तात्त्विक समीक्षा के मापदंडों पर कसकर उसका मूल्यांकन करना अति आवश्यक है। इस कार्य को करने के लिए महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय सर्वाधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।

यह मूल्यांकन करते समय उस देश की सामाजिक–सांस्कृतिक स्थिति और ऐतिहासिक, आर्थिक, भौगोलिक सीमाओं का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। इस प्रवासी हिंदी साहित्य का मूल्यांकन भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी किया जाए, ताकि हिंदी के वैश्विक विकास में उस साहित्य का योगदान भी आँका जा सके। यह कार्य एक महत्त्वाकांक्षी योजना के अंतर्गत किया जाना चाहिए, जिसकी समय–समय पर प्रगति समीक्षा भी की जाए।

7. डिजिटल विश्व में हिंदी की लिपि का संरक्षण

आज संपूर्ण विश्व डिजिटल होता जा रहा है। इसका तात्पर्य यह है कि सभी कार्यों के लिए तकनीक का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। डिजिटल विश्व में गद्य–पद्य में लिखे हुए हिंदी साहित्य को बिना किसी बड़ी परेशानी के डिजिटल माध्यमों पर उपलब्ध करवाना आज सरल और सहज हो गया है।

वाक् से पाठ तथा यूनिकोड में रोमन में टाइप किए जाने पर देवनागरी लिपि में लिखे जाने से 21वीं सदी में वैश्विक हिंदी के समक्ष एक नई चुनौती जन्म लेती दिख रही है। यह चुनौती है – हाथ से हिंदी को देवनागरी लिपि में लिखने का अभ्यास कम होता जा रहा है। इस संबंध में विद्वानों को विचार करके इस समस्या का कोई ऐसा समाधान ढूँढ़ना चाहिए कि साँप भी मर जाए और लाठी भी ना टूटे; अर्थात् हम अपनी लिपि का संरक्षण भी कर सकें और तकनीक से भी जुड़े रहें।

8. हिंदी के माध्यम से विश्व को भारतीय सांस्कृतिक धरोहर से परिचित करवाना

भारत को सदियों से अपनी सांस्कृतिक श्रेष्ठता के कारण 'विश्व गुरु' कहा जाता है। भारत के इस सांस्कृतिक उन्नयन में भारत की प्राचीन राष्ट्रभाषा संस्कृत का अभूतपूर्व योगदान रहा है। संस्कृत की बड़ी बेटी होने के नाते आज हिंदी पर उस सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और प्रचार–प्रसार का दायित्व आ जाता है, जो भारत को विश्व गुरु बनाती आई है। हिंदी में वह सामर्थ्य है कि संस्कृत वाङ्मय में उपलब्ध ज्ञान–विज्ञान और साहित्य के विविध रूपों को समय के अनुसार सरल और शुद्ध रूप में विश्व के सम्मुख प्रस्तुत कर सके। विदेशियों द्वारा हिंदी सीखने के अनेक कारणों में से एक कारण है– भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से परिचित होना। विगत 1000 वर्षों का हिंदी साहित्य अब स्वयं में भी इतना समृद्ध हो चुका है कि वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रकटीकरण कर सके।

21वीं सदी में वैश्विक हिंदी के सम्मुख यह चुनौती भी उत्पन्न हो रही है कि वह किस प्रकार अधिक–से–अधिक देशों में भारतीय सांस्कृतिक विरासत को पहुँचाए। हिंदी यह कार्य विश्व भर में फैले भारतीय दूतावासों और उच्चायोगों की मदद से सफलतापूर्वक कर रही है। इस कार्य को योजनाबद्ध ढंग से आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। भारत सरकार का विदेश मंत्रालय और भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद मिलकर इस कार्य को गति प्रदान कर सकते हैं।

हिंदी की कालजयी रचनाओं को एकत्र करके उनको

डिजिटल माध्यम से विश्व के कोने–कोने तक पहुँचाकर हम भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से विश्व को अवगत करवा सकते हैं। इसके लिए विद्वानों की एक समिति बनाई जाए, जो ऐसी कालजयी पुस्तकों की सूची तैयार करे और उनके डिजिटल माध्यमों से संरक्षण और प्रचार–प्रसार के लिए योजना बनाए।

सारांश रूप में, उपर्युक्त विस्तृत विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 21वीं सदी में हिंदी का वैश्विक विस्तार अवश्यंभावी है, किंतु हिंदी के सम्मुख नई चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं। हिंदी इन चुनौतियों का सामना करने और अपना मार्ग बनाने में सक्षम है, यदि भारत में विद्यमान सभी हिंदी प्रेमी और हिंदी सेवी संस्थाएँ एकजुट होकर भारत सरकार के साथ मिलकर इन चुनौतियों का सामना करने के लिए योजनाबद्ध तरीके से प्रयास करें। मेरे विचार में वर्तमान परिदृश्य में भारत को हिंदी के इस वैश्विक स्वरूप और महत्त्व को समझते हुए यथाशीघ्र इस दिशा में सम्यक प्रयास प्रारंभ कर देने चाहिए। विश्व हिंदी सचिवालय और महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय को मिलकर विश्व भर में फैले हिंदी प्रेमी विद्वानों, साहित्यकारों, भाषाविदों और हिंदी सेवी संस्थाओं के बीच समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी के समक्ष 21वीं शताब्दी में उपस्थित हो रही इन चुनौतियों का हल निकालना चाहिए। अंत में, मैं कवि दुष्यंत की इन पंक्तियों से इस लेख को समाप्त करूँगा –

कौन कहता है कि आसमान में सुराख़ नहीं हो सकता,
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो।।

हां! मैं शांति का हत्यारा हूँ

प्रिया*

हाँ मैं ही हत्यारा हूं घडियों का।
बिखरी रिश्तों की कडियों का।।
मैंने ही घोटा गला टार्च का।
मैं साधन हूं अनावश्यक सर्च का।।

मैंनें पुस्तक का स्थान छीना।
मैं जहर हूँ मनुष्यों के लिए भीना।।
मैंने ही लोगों के रिश्ते बिगाड़े।
झूठ और पाखंड के झंडे गाड़े।।

आंखों का शत्रु ही नहीं
में मन बुद्धि चित्त का भी महाशत्रु हूं।
सरकार और समाचार भी मेरे ही अधीन हैं।
मेरे बिना मनुष्य पंगु और दीन है।।

मैंने बच्चों, बडों–बूढों की तो क्या बात
गर्भ के अभिमन्यु तक पकड़ बनायी है।

हजारों एकान्त के दूरस्थ शिक्षार्थी।
एकलव्यों तक मेरी सत्ता समायी है।।

हजारों रोगो से बड़ा मेरा रोग है।
भूत तो उतर जाये पर मुझसे न बचे लोग हैं।।
मैं मोह हूँ, माया हूँ, प्राणप्यारा हूं।
अकेलेपन का मैं अकेला ही सहारा हूं।।

मैंने मुट्ठी में कर लिया है सारा जगत।
सब जाति पंथ देश भाषाभाषी हैं मेरे भगत।।
कथा प्रवचन, पूजन, भजन, दक्षिणा, दीक्षा का आधार हूं।
आमन्त्रण, निमंत्रण, सूचना, शिक्षा, परीक्षा का विस्तार हूं।।

प्रिया मुझ पर न करो व्यर्थ कोप।
मुझे बनाने वाला है मनुज, मिथ्या हैं सारे आरोप।।
मैं लोंगों के आंसू और स्माइल हूं।
हां! मैं ही हत्यारा शांति का मोबाइल हूं।।

* लोक उद्यम विभाग, वित मंत्रालय, नई दिल्ली।

आर्टिफिशयल इंटैलिजेंस यानि कृत्रिम बुद्धिमता

नम्रता बजाज*

पहले के समय में इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी (सूचना प्रौद्योगिकी) की जानकारी बहुत कम लोगों को थी, क्योंकि उस समय इसका विस्तार ज्यादा नही हुआ था। अधिकतर जगहों पर जानकारी या सूचनाओं का संग्रह, आदान–प्रदान आदि बिना कंप्यूटर के माध्यम से ही होते थे। आईटी के बारे में वही लोग जानते थे जो किसी बढ़ी संस्थाओ में काम करते थे, जहाँ बड़ी मात्रा में डेटा को स्टोर (संग्रह) करना होता था और इसके लिए कंप्यूटर का उपयोग किया जाता था।

पिछले कुछ समय में इन्फार्मेशन एंड कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी का क्षेत्र काफी फैल गया है, आज के समय कंप्यूटर और इंटरनेट की मदद से हर जगह पर काम किया जाता है। पहले से धीरे–धीरे समय बदलता जा रहा है। इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी पर आधारित नई खोजें, आविष्कार हो रहे हैं, जिसके साथ यह लगातार आगे बढ़ रही है। आज सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर में नई तकनीकों के माध्यम से हर क्षेत्र में प्रगति देखने को मिल रही है। भारत के चंद्रयान 3 की सफलता इसका एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। इसी प्रकार विविध क्षेत्रों में तकनीकी प्रगति के बीच भाषा संबंधी कई तकनीक एवं उपकरणों का भी विकास हुआ है। भारत सरकार के नेशनल सेंटर फ़ॉर सॉफ़्टवेयर टेक्नालजी इंस्टीट्यूट ने सभी भारतीय भाषाओं की लिपि को कम्प्यूटर पर स्थापित करने के लिए विशेष अभियान चलाया है।

हम जानते हैं कि 14 सितम्बर, 1949 को केन्द्र सरकार की आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी को स्वीकार किया गया। हिंदी पूरे विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में चौथे स्थान पर है। आज सूचना प्रौद्योगिकी में हिन्दी भाषा का प्रचलन धीरे–धीरे बढ़ रहा है। माइक्रोसॉफ़्ट, याहू, रेडिफ, गूगल आदि विदेशी कंपनियों ने अपनी वेबसाइट पर हिन्दी भाषा को स्थान दिया है। हिंदी में कंप्यूटर पर सरलता से काम करने के लिए आज अनेक नई तकनीक उपलब्ध हैं, जिनका अधिकाधिक प्रयोग किया जाना अपेक्षित है, जैसे–हिंदी ई–टूल्स का प्रयोग, हिंदी टाइपिंग विकल्प, वॉयस टाइपिंग–गूगल वॉयस टाइपिंग, श्रुतलेखन–राजभाषा, मशीन अनुवाद, कंठस्थ–ट्रांसलेशन मेमोरी सिस्टम, हिंदी ई–लर्निंग–हिंदी स्वयं शिक्षण–लीला–राजभाषा एवं लीला प्रवाह, अनुवाद ई–लर्निंग–गूगल ट्रांसलेशन, मंत्र–राजभाषा, माइक्रोसॉफ्ट ट्रांसलेशन, ऑनलाइन शब्दकोश, हिंदी की–बोर्ड के तीन विकल्प–इंस्क्रिप्ट, रेमिंग्टन, फोनेटिक। माइक्रोसॉफ़्ट, गूगल आदि द्वारा हिंदी में कार्य करने के लिए बनाए गए ई–टूल्स के अतिरिक्त राजभाषा हिंदी में अधिकाधिक कार्य करना सुनिश्चित करने की दिशा में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा भी अनेक प्रयास किए जा रहे हैं।

अब इस दिशा में एक और लहर आई है जिसे हम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) कहते हैं। एआई ने हाल के वर्षों में उल्लेखनीय प्रगति की है, जिस तरह से हम प्रौद्योगिकी के साथ बातचीत करते हैं और मशीनों को मानव जैसी प्रतिक्रियाओं को समझने और उत्पन्न करने में सक्षम बनाते हैं। इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण कदम चैटजीपीटी, गूगल बार्ड और माइक्रोसॉफ्ट बिंग हैं। ये एआई मॉडल मानव–कंप्यूटर संपर्क और भाषा प्रसंस्करण की सीमाओं को आगे बढ़ा रहे हैं, बातचीत, रचनात्मकता और ज्ञान प्रसार के क्षेत्र में क्रांति ला रहे हैं।

ओपन चैटजीपीटी (ChatGPT) आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) मॉडल है जो वाक्यों और पाठों को समझता है और

*प्रबंधक (राजभाषा एवं एचआरएमएस), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

उनका उत्तर देता है, बिल्कुल वैसे ही, जैसा कि एक मानव करता है। इसका प्रयोग उपयोगकर्ताओं को सहायता या जानकारी प्रदान करने, क्रिएटिव प्रक्रिया में मदद करने और अन्य कई कार्यों के लिए किया जा सकता है। चैटजीपीटी ओपन एआई द्वारा विकसित एक बड़ा भाषा मॉडल चैटबॉट है। यह शक्तिशाली उपकरण है जिसका उपयोग विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिए किया जा सकता है, जिसमें पाठ उत्पन्न करना, भाषाओं का अनुवाद करना और विभिन्न प्रकार की रचनात्मक सामग्री लिखना शामिल है।

गूगल बार्ड (Google Bard) गूगल एआई (Google AI) द्वारा विकसित एक बड़ा भाषा मॉडल चैटबॉट है जिसका अर्थ है 'बीट ऑगमेंटेड रिकरंट डिकोडर'। यह कई मायनों में चैटजीपीटी के समान है, लेकिन इसमें कुछ अतिरिक्त विशेषताएं हैं, जैसे कविताएं, कोड, स्क्रिप्ट, ईमेल, पत्र इत्यादि जैसे विभिन्न रचनात्मक टेक्स्ट के प्रारूप तैयार करने की क्षमता, और आपके प्रश्नों का उत्तर देने की क्षमता।

चैटजीपीटी और गूगल बार्ड दोनों विभिन्न डोमेन में AI की उल्लेखनीय क्षमताओं को प्रदर्शित करते हैं। चैटजीपीटी सहज मानव–मशीन इंटरैक्शन की सुविधा प्रदान करता है, जिससे उपयोगकर्ता प्राकृतिक भाषा में बातचीत के माध्यम से जानकारी, सहायता और मनोरंजन प्राप्त कर सकते हैं। दूसरी ओर, गूगल बार्ड दृश्य और पाठ्य क्षेत्रों की सहयोगात्मक खोज द्वारा रचनात्मक सीमाओं का विस्तार करने की AI की क्षमता का उदाहरण देता है। चैटजीपीट और गूगल बार्ड दो ऐसे नए एआई टूल हैं जो लोगों को अनेक प्रकार से मदद करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। चैटजीपीटी एक भाषा मॉडल है जो टेक्स्ट को पढ़ और समझ सकता है, और फिर उसी शैली में टेक्स्ट तैयार कर सकता है। गूगल बार्ड एक और उन्नत भाषा मॉडल है जो पहले से ही मौजूद टेक्स्ट के आधार पर नई सामग्री लिख सकता है।

दोनों टूल में कई संभावित अनुप्रयोग हैं। वे लेखकों को उनकी रचनाओं में मदद कर सकते हैं, छात्रों को उनके असाइनमेंट लिखने में मदद कर सकते हैं, और यहां तक कि व्यवसायों को उनके विज्ञापनों और मार्केटिंग सामग्री लिखने में भी मदद कर सकते हैं।

हालांकि, इन टूल्स के साथ कुछ सावधानियां भी बरतनी ज़रूरी हैं। चूंकि वे एआई संचालित हैं, इसलिए वे कभी–कभी गलत जानकारी या भ्रामक सामग्री उत्पन्न कर सकते हैं। इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि उपयोगकर्ता इन टूल्स का उपयोग करते समय सावधान रहें और दी गई किसी भी जानकारी को सत्यापित करें। यह सुनिश्चित करना अत्यंत चुनौतीपूर्ण है कि एआई द्वारा प्रस्तुत सामग्री सटीक और निष्पक्ष है।

चैट जीपीटी के लिए आप https://chat.openai.com/auth/login पर जाएं तो विंडो 1 आपके समक्ष आएगी। इसमें लॉग–इन पर जाएं। जिसके बाद विंडो 2 आपके समक्ष खुलेगी।

विंडो 1

विंडो 2

यहां आप अपने गूगल एकाउंट, माइक्रोसॉफ्ट एकाउंट या एप्ल एकाउंट के माध्यम से चैटजीपीट पर अपना एकाउंट खोल सकते है और चैटजीपीट का उपयोग कर सकते हैं।

वहीं गूगल बार्ड खोलने के लिए आपका गूगल एकाउंट होना चाहिए। उसके बाद आप https://bard.google.com पर जाएं और अपने गूगल एकाउंट के साथ साइन–इन करें। (विंडो 3)

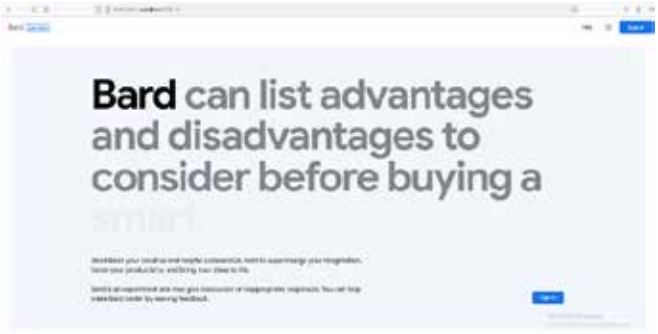

विंडो 3

गूगल बार्ड पर अपना प्रोम्पट (Prompt) यानि इनपुट डालें। इन प्रोम्पट का उपयोग बार्ड एआई पर प्रश्न पूछने और जानकारीपूर्ण उत्तर प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है। इसी प्रकार, बार्ड एआई का उपयोग अन्य प्रकार के प्रोम्पट से विभिन्न प्रकार की सामग्री तैयार करने के लिए भी किया जा सकता है। मान लीजिए आपने किसी विशेष विषय पर निबंध लिखने के लिए कहा तो बार्ड आपको उसके दो–तीन विकल्प भी तैयार करके देगा जो इसकी विशेषता है।

बिंग माइक्रोसॉफ्ट के स्वामित्व और संचालन वाला वेब सर्च इंजन है। यह वेब पर जानकारी खोजने, प्रश्नों के उत्तर देने और रचनात्मक सामग्री तैयार करने में सहायता करता है। बिंग वेब, वीडियो, छवि और मैप सर्च सहित विभिन्न प्रकार की सर्च सेवाएँ प्रदान करता है। बिंग के लिए आप https://www.bing.com/new पर जाएं और किसी विषय पर अपनी चैट शुरू कर लें। (कृपया विंडो 4 एवं 5 देखें)

विंडो 4

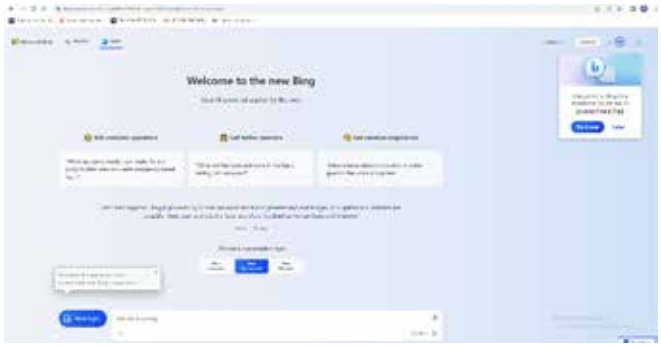

विंडो 5

बिंग का उपयोग एक रचनात्मक उपकरण के रूप में किया जा सकता है। यह आपको कविताएँ, कहानियाँ लिखने या किसी प्रोजेक्ट के लिए विचार साझा करने में भी मदद कर सकता है।

अभी हाल ही में जी20 शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसके आयोजन स्थल पर डिजिटल एक्सपीरियंस जोन आकर्षण का केंद्र रहा। इसमें डिजिटल इंडिया की झलक डिजिटल ट्री में देखने को मिली। डिजिटल ट्री को एक पेड़ की तरह डिजाइन किया गया और इसके चारों तरफ AI ऐप, चौटबॉट, UPI पेमेंट के साथ ही डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर देखने को मिला। डिजिटल एक्सपीरियंस जोन में AI ऐप, भाषिणी ट्रांसलेशन वेबसाइट, आधार, डिजीलॉकर, दीक्षा पोर्टल, ई–संजीवनी और आरबीआई इनोवेशन हब पैविलियन को शामिल किया गया। इन सुविधाओं का लाभ सभी को मिल सके इसके लिए जी20 मोबाइल ऐप तैयार किया गया जो सभी यूजर्स के लिए निःशुल्क उपलब्ध है। इस ऐप में कुल 24 भाषाओं का सपोर्ट दिया गया है। इन ऐप, वेबसाइट और पोर्टल

आदि ने सबकुछ कितना आसान और सुलभ बना दिया है। यह युग वास्तव में डिजीटल युग है।

इस प्रकार की नित नई खोजों ने मानव जीवन में एक नया दौर ला दिया है जहां मात्र एक क्लिक से ही आपके सारे सवालों के जवाब आपके सामने आ जाते हैं। ज़रूरत है तो केवल उस परिणाम पर चिंतन, विश्लेषण करने एवं सावधानी पूर्वक उसकी तथ्यात्मकता को सुनिश्चित करते हुए उसका सही प्रयोग करने की।

राष्ट्र भाषा तेरे लिए .....

जयप्रकाश शर्मा*

राष्ट्र भाषा तेरे लिए, ये जान भी कुर्बान है।
मात्र मेरी ही नहीं तू, हम सभी की शान है।।
भाषाओं में सरल भाषा,
वाणी में भी मिठास है।
प्रेम में सब को डुबोती,
यह बात तेरी खास है।।
प्रेम में जो तेरे ना डूबा, वो बड़ा नादान है।
मात्र मेरी ही नहीं तू, हम सभी की शान है।।
एकता के सूत्र में,
प्रेमी जनों को बांध कर।
बढ़ रही है तू निरंतर,
व्याधियों को लांघ कर।।
प्रेम से बढ़ती है तू, तेरा यही ईमान है।
मात्र मेरी ही नहीं तू हम सभी की शान है।।
कुटिल मनों के लोग कुछ
तुझ से घृणा करने लगे।
प्रेम से चूमा जो तूने ,
वो भी गले से आ लगे।।
कौन है इस देश में, तुझ से जो अंजान है।
मात्र मेरी ही नहीं तू ,हम सभी की शान है।।
'त्याग' पाया 'हरीश' से ,
'सदासुख' का सुख मिला।
'लल्लु' का प्रेम पालन मीला,
'इंशा' का तुझ को मुख मिला।।
'नलिन', 'हजारी', 'नगेंद्र' ने, तेरा बढ़ाया मान है।
मात्र मेरी ही नहीं तू, हम सभी की शान है।।
'चंद्र' की वाणी है तू,
'जगनिक' का तू है 'जागरण'।
'सूर', 'तुलसी', 'जायसी',
'कबीरा' का तू है आचरण।।
रूप सांवरिया लिए तुझ को मिला
'रसखान' है।
मात्र मेरी ही नहीं तू, हम सभी की शान है।।
'सेनापति' के छन्द में,
तेरी मधुरता झांकती।
कान्हा की मीठी तान पर,
'मीरा' थी कैसी नाचती।।
पुत्र तेरे 'नंद', 'भूषण', 'केशव', 'देव',
'सुजान' हैं।
मात्र मेरी ही नहीं तू, हम सभी की शान हैं।।
'प्रसाद' का प्रसाद है यूं,
'निराला' की तू 'झंकार' है।
'मैथिली' का स्वर है तू ,
'दिनकर' की ज्ञतू 'हुंकार' है।।
'महादेवी'–सी बेटी तेरी, 'प्रेमचन्द'–सा
पुत्र महान है।
मात्र मेरी ही नहीं तू, हम सभी की शान है।।
'पंत' की 'गुंजन' है तू,
'बच्चन' की 'मधुशाला' तू ही।
'शुक्ल' की 'चिन्तामणी' तू,
'मीरा' का प्रेम–प्याला तू ही।।
तू पनपती ही रहे बस, ये मेरा अरमान है।
मात्र मेरी ही नहीं तू, हम सभी की शान है।।
छछिया भरी ही छाछ पर
कृष्ण को नचाती छोरियां।
वृंदावन की वादियों में
गा–गा के सुंदर लोरियां।।
अपनी जुबां में बाद में, गाता फिरा
रसखान है।
मात्र मेरी ही नहीं तू, हम सभी की शान है।।
'तुलसी' की ऊंची उड़ान तू,
'सूर' के मन की तू गहराई है।
'जायसी' की 'पदमावती' तू,
'विद्यापति' की तू 'पुरवाई' है।।
तुझ को पाकर आज गर्वित, भारत देश
महान है।
मात्र मेरी ही नहीं तू, हम सभी की शान है।।
दिन नहीं है दूर जब तू,
विश्व मंच पर छा जायेगी।
गीत तेरे देश की अब,
हर जुबां ही गाएगी।।
देख अंग्रेजी अब बस कुछ रोज की
मेहमान है।
मात्र मेरी ही नहीं तू, हम सभी की शान है।।
साथियों! संकल्प लो अब
राष्ट्र भाषा के सम्मान का।
शुभारंभ कर दो आज से,
हिन्दी में सारे काम का।।
राष्ट्र भाषा के सम्मान से ही, राष्ट्र का
सम्मान है।
मात्र मेरी ही नहीं तू, हम सभी की शान है।।

*सेवानिवृत्त राजपत्रित अधिकारी, डिफेंस विभाग, नागपुर, महाराष्ट्र

हिंदी भाषा की वैश्विकता : प्रमुख आधार

डॉ. हरीश कुमार सेठी*

भारत की राष्ट्रीय अस्मिता का माध्यम और उसकी अंतःशक्ति की पहचान हिंदी, अपने राष्ट्रीय अहसास के साथ–साथ वैश्विक पटल पर अपना विस्तार पा रही है। हिंदी में केवल भारत ही नहीं, संपूर्ण विश्व का प्रतिबिंबन होता है। इसमें विश्व–मानव की चेतना विद्यमान है; वैश्विक चेतना का पूरी तरह से संस्पर्श है और साथ ही सार्वभौमिक चिंतन का मुखरित स्वर भी। हिंदी में अनेकता में एकता परिलक्षित होती है। अपनी अनेक विशिष्टताओं के बल पर हिंदी का फलक, व्यापक से व्यापकतर होते हुए, विश्व–स्तरीय बन चुका है; अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मान प्राप्त है। भूमंडलीकरण और उदारीकरण के रथ पर सवार आज का विश्व, भारत की भाषा हिंदी के निरंतर विश्व–व्यापकत्व को साक्षात कर रहा है। इस दौर में हिंदी ने दुनिया के कई देशों में सूचना, संवाद और व्यापार की एक मजबूत ताकत के रूप में अपनी पहचान बनाई है। हिंदी व्यवहार का यह संदर्भ ही 'हिंदी का अंतरराष्ट्रीय संदर्भ' है। हिंदी का यही वैश्विक परिदृश्य या कहें कि अंतरराष्ट्रीय संदर्भ ही उसे 'विश्वभाषा' बना रहा है।

हिंदी विश्व–भाषा की क्षमताओं से संपन्न भाषा है। हालाँकि वैश्विक दृश्य–फलक पर अंग्रेजी, फ्रांसीसी और स्पेनिश आदि भाषाएँ भी विश्व–भाषा के रूप में व्यवहृत होती नजर आती हैं, किंतु विश्व–भाषा बनने की इनकी प्रक्रिया विश्व–भाषा हिंदी से भिन्नता लिए हुए है। इन भाषाओं ने उन्नीसवीं शताब्दी के साम्राज्यवाद के आधार पर वैश्विक पटल पर अपना प्रचार–प्रसार करके विश्व–भाषा के रूप में अपनी पहचान को स्थापित किया। इससे पूर्व अठारहवीं सदी में ऑस्ट्रिया और हंगरी का वर्चस्व रहा। इसी तरह, बीसवीं सदी में अमेरिका और पूर्व–सोवियत संघ का वर्चस्व रेखांकित किया जा सकता है। पिछली शताब्दी के पूर्वार्ध तक भारत गुलाम रहा और इसने भाषायी दबाव को झेला। लेकिन इस दौरान, 'हिंदी की अस्मिता' दबावों में भी प्रखर रही है। हिंदी के प्रति श्रमजीवियों की श्रद्धा एवं आत्मीयता ने इसे वैश्विक स्वीकृत प्राप्त करने में एक आधार प्रदान किया है।

किसी भी भाषा के वैश्विक होने के दो प्रमुख आधार माने जाते हैं। इनमें से पहला प्रयोक्ता वर्ग की संख्या से संबंधित है तो दूसरा भाषा की अंतःशक्ति और साहित्यिक स्तर पर किए गए कार्य से। इनमें से पहले, अर्थात वैश्विक संदर्भ में प्रयोक्ताओं की संख्या की दृष्टि से देखने पर पता चलता है कि हिंदी प्रयोक्ताओं की संख्या में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है। चीनी भाषा के बाद यह सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। इस तरह हिंदी विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा, जबकि अंग्रेजी प्रयोक्ताओं की घटती संख्या के कारण वह दूसरे से तीसरे स्थान पर आ चुकी है। जबकि कतिपय विद्वानों ने इसे विश्व की प्रथम भाषा सिद्ध किया है।

बहरहाल, संख्या बल के कारण आज हिंदी को विश्व के आर्थिक तंत्र की बुनियादी भाषा के रूप में, भूमंडलीकरण की भाषा के रूप में देखा जा रहा है। अधिक से अधिक उपभोक्ताओं तक उत्पाद को पहुँचाने की अपेक्षा–आकांक्षा उत्पादक को उपभोक्ता–वर्ग की भाषा को महत्व देने को मजबूर करती है। आज बाजारवादी अर्थव्यवस्था पर हिंदी का जादू सिर चढ़कर बोल रहा है; अपने उत्पादों के

*निदेशक, अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

विज्ञापन में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ हिंदी का बड़े पैमाने पर उपयोग कर रही हैं।

हिंदी के वैश्विक होने के दूसरा आधार इसकी अंतःशक्ति और साहित्यिक स्तर पर किए गए कार्य से संबंधित है। विश्व स्तर पर भाषा के प्रतिष्ठापित होने में समृद्ध साहित्य–लेखन परंपरा, साहित्य भंडार समृद्ध और विशाल शब्द भंडार जैसे आयाम भाषा को अंतःशक्ति प्रदान करते हैं। इस दृष्टि से देखें तो हिंदी भाषा समृद्ध और सम्पन्न कही जा सकती है।

भारत की सभ्यता, संस्कृति, धर्म और दर्शन के रूप में भारतीय सांस्कृतिक गरिमा ने सदैव विश्व को आकर्षित किया है। यह स्थिति शुरू से ही बनी रही जब सिकंदर, तुगलक, लोदी, मुगलों आदि ने भारत पर आक्रमण किए। इन आक्रमणों से दो जातियाँ–संस्कृतियाँ न केवल आपस में टकराती रहीं बल्कि एक–दूसरे को प्रभावित भी करती रहीं। इस सांस्कृतिक टकराहट से वे एक–दूसरे की संस्कृति में रचती–बसती रहीं। विभिन्न आक्रमणकारियों के साथ उनकी भाषाओं के शब्द हिंदी भाषा में घुलते–मिलते गए तथा इसी प्रकार भारतीय भाषाओं के शब्दों का भी प्रसार उनकी भाषाओं में होता रहा। हिंदी भाषा में अरबी–फारसी आदि शब्दों के समावेश के मूल में भी यही कारण रहा है। यही स्थिति ब्रिटिश शासन काल के दौरान भी बनी रही, जो आज तक हमें अंग्रेजी के प्रभाव के रूप में नजर आती है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि एक लंबे समय तक दूसरे देशों–भाषा भाषियों के अधीन होने के कारण भारत पर का तुर्कों, मंगोलों, अफगानों, मुगलों, फ्रांसीसियों, पुर्तगालियों और अंग्रेजों का शासन रहा। इनमें से अधिकांश शासकों ने आम तौर पर अपनी–अपनी भाषाओं में राजकाज चलाया या उन्हें प्रश्रय प्रदान किया। परिणामस्वरूप, हिंदी कई शासकीय भाषाओं के संपर्क में आई। संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश के विकास मार्ग से होकर गुजरी हिंदी को जहाँ विरासत में इन भाषाओं का समृद्ध शब्द–भंडार प्राप्त हुआ, वहीं इसने अरबी–फारसी, उर्दू, अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं के शब्दों को भी आत्मसात किया। इसके मूल में हिंदी का लचीलापन होना प्रमुख कारण है, जिसकी वजह से आज हिंदी, शब्द–संख्या की दृष्टि से संसार की सबसे समृद्ध भाषा मानी जाती है।

भाषा को वर्तमान भाव बोध की भाषा बनाने के लिए उसमें लचीलापन होना जरूरी होता है। यह लचीलापन विश्व–भाषा के स्वरूप निर्माण का एक अहम हिस्सा है। भिन्न–भिन्न संदर्भों की अभिव्यक्ति क्षमता से संपन्न होने के साथ–साथ उसमें प्रयुक्ति के स्तरों का विद्यमान होना और उपमानकों के स्तर पर अंतर के बावजूद सर्व स्वीकृत मानक रूप के माध्यम से संप्रेषणीयता का होना अपेक्षित माना जाता है। इस परिप्रेक्ष्य में हम यह पाते हैं कि अपने लचीलेपन के कारण हिंदी विश्व में तेजी से फल–फूल रही है। हिंदी हमेशा अन्य भाषाओं के साथ समभाव, सद्भाव और समन्वयपूर्ण समावेश की पक्षधर रही है। अनेक बोलियों के परिवार 'हिंदी' ने विभिन्न देशी–विदेशी भाषाओं के शब्दों को भी अपनाया। आज भी विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विश्व में हो रहे तीव्र विकास के कारण नित नई संकल्पनाएँ सामने आ रही हैं, नए–नए शब्द गढ़े जा रहे हैं जिनके आधार पर हिंदी, अपने लचीलेपन के कारण, शब्द भंडार विकसित कर रही है।

प्रशासनिक कामकाज के अलावा, ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों–उपक्षेत्रों में हिंदी की इस प्रकार की शब्दावली का भरपूर उपयोग किया जाता है। हिंदी ने अपने पारिभाषिक शब्दावली भंडार को विकसित करने के लिए जहाँ संस्कृत की शब्द निर्माण परंपरा के अनुसार धातु, उपसर्ग, प्रत्यय और संधि–समास आदि के योग से 'पर्यावरण', 'प्रदूषण', 'पर्यवेक्षण', 'निरीक्षण', 'सशक्तीकरण' जैसे नए–नए शब्द गढ़े। वहीं, अंग्रेजी के 'रेलवे स्टेशन', 'प्लेटफॉर्म', 'हाइड्रोजन', 'किलोमीटर', 'कंप्यूटर', 'हार्डवेयर', 'मॉनीटर' आदि शब्दों को यथावत अपनाया या फिर 'ट्रेजेडी', 'कामेडी' जैसे अंग्रेजी के शब्दों के अनुकूलित रूप में समतुल्य 'त्रासदी' और 'कामदी' निर्धारित किए। इसके अलावा, शब्दावली निर्माण में शब्दानुवाद का सहारा लेकर 'ब्लेक मार्किट' के लिए 'काला बाज़ार' और 'यैलो जर्नलिज़्म' के लिए

'पीत पत्रकारिता' जैसे पारिभाषिक शब्द भी स्वीकार किए। इसी लचीले रुख के चलते आज हिंदी की भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (कमीशन फॉर साइंटिफिक एंड टेक्निकल टर्मिनोलॉजी – सी.एस.टी.एस.) के द्वारा पारिभाषिक शब्दावली के भंडार में लाखों शब्द निर्धारित किए जा चुके हैं।

शब्द–संख्या की दृष्टि से हिंदी में काफी वृद्धि हुई है। हालाँकि इस प्रक्रिया में अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करके, संस्कृत की मूल धातुओं में उपसर्ग–प्रत्यय लगाकर और संधि–समाज विधि के द्वारा नए शब्द गढ़कर, अपनी भाषिक प्रकृति के आलोक में अनुकूलन करके या फिर अनुवाद के माध्यम से हिंदी शब्दावली अद्यतन की जा रही है। हालाँकि इसमें कोई संदेह नहीं कि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के द्वारा इन तकनीकों के आधार पर पारिभाषिक शब्दावली निर्माण का कार्य निरंतर किया जा रहा है, किंतु इसे और अधिक गति प्रदान करने तथा नई–नई संकल्पनाओं के लिए पारिभाषिक शब्दों का तत्काल निर्माण आदि करके उनके व्यापक प्रचार–प्रसार के लिए ठोस योजना शुरू किए जाने की जरूरत है। भूमंडलीकरण के बदलते स्वरूप के संदर्भ में यह विशेष तौर पर आवश्यक प्रतीत होता है ताकि हिंदी को ज्ञान–विज्ञान की अभिव्यक्ति की सार्थक भाषा के रूप में स्थापित किया जा सके।

शब्द–भंडार आदि के अलावा, साहित्य सृजन की दृष्टि से भी देखें तो हिंदी में सुदीर्घ साहित्य–लेखन परंपरा रही है। पिछली बारह सौ वर्षों से चली आ रही इस परंपरा में साहित्य–सरिता का प्रवाह आठवीं सदी से लेकर अब तक निरंतर प्रवीहमान है। हिंदी ने विश्व को उत्कृष्ट साहित्यिक रचनाएँ दी हैं। गुण और परिमाण की दृष्टि से हिंदी साहित्य अतुलनीय है। 'रामचरित मानस', 'पद्मावत' और 'कामायनी' जैसे महाकाव्य विश्व की किसी भाषा में नजर नहीं आते हैं। अपनी इसी समृद्ध–संपन्न साहित्य परंपरा के कारण हिंदी साहित्य को विश्व के श्रेष्ठतम साहित्य के रूप में देखा जाता है।

वस्तुतः वैश्विक पटल पर हिंदी की जड़ें अत्यंत गहरी हैं। इसके मूल में प्रयोक्ता वर्ग की संख्या के साथ–साथ अपनी अंतःशक्ति और साहित्य से बल प्राप्ति नजर आती है। वर्तमान समय में यह विश्व के प्रायः सभी महाद्वीपों और महत्वपूर्ण राष्ट्रों में किसी न किसी रूप में और किसी न किसी तरह से व्यवहार में लाई जा रही है। हिंदी के संदर्भ को वैश्विक फलक पर विस्तारित करने का श्रेय प्रवासी भारतीयों–विदेशियों की समर्पित रचनाधर्मिता, भूमंडलीकरण और बाजारीकरण की जरूरतों के साथ–साथ कंप्यूटर–इंटरनेट और सोशल मीडिया एवं हिंदी की आंतरिक ग्राह्य शक्ति, देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता को जाता है। तकनीकी के उत्तरोत्तर विस्तार के साथ–साथ हिंदी की सुगमता भी विस्तार पा रही है। हिंदी को वैश्विक पहचान बदलाने में ये किसी न किसी रूप में अपनी प्रभावी भूमिका निभा रहे हैं। कंप्यूटर जैसा आयाम हिंदी को धीरे–धीरे एक विश्व–भाषा के रूप में स्थापित कर रहा है और इंटरनेट उसे व्यापकता प्रदान कर रहा है। वहीं प्रवासी भारतीयों के साथ–साथ विदेशी हिंदी–प्रेमियों की समर्पित रचनाधर्मिता हिंदी साहित्य से विश्व को साक्षात करा रही है। देश में हिंदी और हिंदीतर भाषियों द्वारा रचित साहित्य की गरिमा और लालित्य विश्व के साहित्य–प्रेमियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। फलस्वरूप उनका खूब हिंदी अनुवाद हो रहा है। यही स्थिति, विदेशी भाषाओं में रचित ज्ञान–विज्ञान और सृजनात्मक साहित्य के हिंदी अनुवाद की भी है। हिंदी सिनेमा और गीत–संगीत की लोकप्रियता का ग्राफ वैश्विक पटल पर निरंतर बढ़ता जा रहा है। वहीं, भूमंडलीकरण के दौर में पनपे बाजारवाद की जरूरतों ने उत्पादकों को हिंदी अपनाने के लिए बाध्य किया है। इसी जरूरत ने हिंदी को विज्ञान की भाषा भी बना दिया है। इस संदर्भ में यह कहना भी अनुचित न होगा कि हिंदी ने यह हैसियत और मुकाम अपनी शक्ति से अर्जित किया है, किसी राज्याश्रय से नहीं। ऐसे में इस कथन में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि आज हिंदी खड़ी बोली अंतरराष्ट्रीय भाषा की भूमिका निभा रही है।

स्वतंत्रता दिवस

विनोद जैन*

रोहित और नीरज पापा से पैसे लेकर बाज़ार की तरफ जा रहे थे, क्योंकि उन्हें इस स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) के अवसर पर देश का तिरंगा झंडे खरीदने थे। ''इस 15 अगस्त के दिन हमारा घर सबसे अच्छा दिखेगा'', वे आपस में बातें करते हुए खुशी–खुशी दुकान की तरफ जा रहे थे।

तभी रोहित और नीरज की नजर एक लड़के पर पड़ी जो वेशभूषा से भिखारी लग रहा था, परन्तु वह भिखारी नहीं था, वह बाल मजदूर था और गाड़ी के वर्कशाप में काम करता था। काम कर के वह तेजी से भागा जा रहा था।

''चलो! इसका पीछा करते हैं, देखते हैं कहां जा रहा है'' रोहित ने कहा । उस लड़के के हाथ में काले रंग का एक थैला था जो उसने बड़ी मजबूती से पकड़ा हुआ था। आखिर चलते–चलते वह लड़का एक झोपड़ी में घुस गया। रोहित और नीरज भी उसके पीछे–पीछे झोपड़ी के पास आ कर रुक गए और उस लड़के के बाहर आने का इंतज़ार करने लगे। इतने में झोपड़ी के अंदर से कुछ आवाज़ें आने लगीं।

अंदर से आवाज आ रही थी "मां देख मैं क्या लाया हूं!" उस लड़के ने अपनी माँ को कहा.....

"देख तेरी बहन भूखी बीमार पड़ी है जो कुछ लाया उसे दे दे।" उस लड़के की माँ ने कहा।

''नहीं मां ! इसमें खाना नहीं है।" लड़के ने जवाब दिया....

"उफ्फ !! क्या तुम्हें दिन भर काम करके इतने पैसे भी नहीं मिले की हम एक वक़्त का खाना खा सकें।'' माँ ने कहा..

उस लड़के ने थैले से कुछ झंडे निकाले और मां की तरफ बढ़ाया, मां यह देखो ! अब यह बेकार रंगीले कागज़ क्यों उठा लाया, हमारे किस काम के ?

''यह बेकार कागज़ नहीं है मां! यह हमारे भारत देश का तिरंगा झंडा है, मैंने यह झंडे खरीदने के लिए कितने जतन किए कितनों के आगे हाथ फैलाए।" उस लड़के ने अपनी माँ को बताया।

''अरे बेटा! तुमने यह सब क्यों किया? आखिर इस देश ने हमें दिया ही क्या सिवाय गरीबी एवं भूखमरी के। यह देश सिर्फ पूंजीपतियों का है। इन झंडो की अपेक्षा हमारे लिए दो वक़्त की रोटी अधिक महत्व रखती है बेटा! कम से कम हमारा पेट तो भरेगा, मां ने अपने आंसुओं को पोंछते हुए कहा।''

''मां, तुम्हे यह मालूम नहीं कि यह देश कितने बलिदानों से मिला है, कितनी जानें कुर्बान हो गई हैं। हमें इसलिए इसका आभास नहीं है क्यूंकि हमने कोई बलिदान नहीं दिया है। यदि आज हम स्वतंत्र नहीं होते तो किसी अंग्रेज के जूते साफ कर रहे होते। खुशी इस बात की है आज हम किसी के गुलाम तो नही, अपनी इच्छाओं के अनुसार तो जी रहे है न।''

उस लड़के की बातें सुन कर उसकी मां सर झुकाए बैठी थी। रोहित और नीरज यह सब देख रहे थे उनकी आंखों से आंसू छलकने लगे, आज उन्हें असली आज़ादी का मतलब समझ आ गया था। सिर्फ झंडो से घर सजा कर

*प्रतिनिधि, कंज्यूमर कोआपरेटिव स्टोर लि0, प्रेमपुरी, मुजफ्फरनगर (उ0प्र0)

असली आज़ादी नहीं बल्कि किसी की मदद करना ही वास्तविक आज़ादी है। और दोनों ने उन पैसों से खाना खरीदा और उस लड़के के घर की तरफ चल दिए।

उनके मन में एक ही बात घूम रही थीं कि "हम उस दीये की रक्षा करना भूल गए हैं जिस दीये को हमारे वीरों ने तेज आंधियों में भी बुझने नहीं दिया था।" आज उन्हें 15 अगस्त मनाते हुए असली खुशी हो रही थी।

यह सत्य है कि अधिकांश गरीब एवं अशिक्षित माता–पिता अपने बच्चों को काम करवाने पर प्राथमिकता देते हैं क्योंकि उनके पास आय का कोई मूल स्रोत नहीं है। उनके पास बच्चों को शिक्षित करने के लिए संसाधन नही हैं।

बाल श्रम अज्ञानता और अशिक्षा के कारण हिंदुस्तान की भावी पीढ़ियों को नष्ट कर सकता है। हिंदुस्तान के धनवान बुद्धिजीवियों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि नई पीढ़ी को इस तकनीकी दुनिया में शिक्षा के महत्व, उनके लक्ष्यों और उनके अस्तित्व के उद्देश्य को जानना चाहिए। बच्चों को शिक्षित होना चाहिए क्योंकि उचित शिक्षा से उन्हें अपने विचारों, और अपने देश के मूल्यों की समझ मिलती है।

अमर शहीद

बीरेन्द्र सिंह*

पूछो उन विधवाओं से,
जो अपना सुहाग लुटा बैठीं।
पूछो उन माताओ से,
जो अपना लाल गवां बैठी
सोच रहा था बूढ़ा बाबा
मेरा बेटा घर आएगा
बाबा–बाबा कहकर
मुझको वह बुलाएगा।

बच्चे सोच रहे थे घर पर
जब पापा जी आएँगें।
नये–नये कपड़े खेल खिलौने
खूब मिठाई लाँएगे।
हमें सब मिलकर बैठ खाट पर
बड़े मजे से खाएँगे।
पापा जी हमें अपने हाथ से
प्यार के साथ खिलाएँगे।

सोच रहा था भाई घर पर
मेरा भैया आएगा
मुझसे नाता तोड़ गया
अपने इस बदनसीब भाई को
यूँ ही रोता छोड़ गया।

उस बहन को देखो हार पर
आस लगाए थी मन में।
भैया को राखी बाँधेंगी
आयेंगी जब सावन में
रिश्ते–नाते तोड़ गया सब
याद बहुत वह आएगा
भारत माँ का लाल वह अब
"अमर शहीद" कहलाएगा।

* कनि.अधीक्षक, (राजभाषा अनुभाग), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

साहित्यिकी

दो गौरैया

रावलपिंडी पाकिस्तान में जन्मे भीष्म साहनी (8 अगस्त 1915–11 जुलाई 2003) आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख स्तंभों में से थे। 1937 में लाहौर गवर्नमेन्ट कॉलेज, लाहौर से अंग्रेजी साहित्य में एमए करने के बाद उन्होंने 1958 में पंजाब विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि हासिल की। भारत–पाकिस्तान विभाजन के पूर्व अवैतनिक शिक्षक होने के साथ–साथ ये व्यापार भी करते थे। विभाजन के बाद उन्होंने भारत आकर समाचार पत्रों में लिखने का काम किया। बाद में भारतीय जन नाट्य संघ (इप्टा) से जा मिले। इसके पश्चात अंबाला और अमृतसर में भी अध्यापक रहने के बाद दिल्ली विश्वविद्यालय के ज़ाकिर हुसैन दिल्ली महाविद्यालय में साहित्य के प्रोफेसर बने। 1957 से 1963 तक मास्को में विदेशी भाषा प्रकाशन गृह (फॉरेन लॅग्वेजेस पब्लिकेशन हाउस) में अनुवादक के काम में कार्यरत रहे। यहां उन्होंने करीब दो दर्जन रूसी किताबें जैसे टॉलस्टॉय आस्ट्रोवस्की इत्यादि लेखकों की किताबों का हिंदी में रूपांतर किया। 1965 से 1967 तक दो सालों में उन्होंने नयी कहानियां नामक पात्रिका का संपादन किया। वे प्रगतिशील लेखक संघ और अफ्रो–एशियायी लेखक संघ (एफ्रो एशियन राइटर्स असोसिएशन) से भी जुड़े रहे। 1993 से 1997 तक वे साहित्य अकादमी के कार्यकारी समिति के सदस्य रहे। इन्हें हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद की परंपरा का अग्रणी लेखक माना जाता है। उन्हें 1975 में तमस के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1975 में शिरोमणि लेखक अवार्ड (पंजाब सरकार), 1980 में एफ्रो एशियन राइटर्स एसोसिएशन का लोटस अवार्ड, 1983 में सोवियत लैंड नेहरू अवार्ड तथा 1998 में भारत सरकार के पद्मभूषण अलंकरण से विभूषित किया गया। उनके उपन्यास तमस पर 1986 में एक फिल्म का निर्माण भी किया गया था। इनकी प्रमुख रचनाएं–झरोखे, तमस, बसंती, मय्यादास की माड़ी आदि उपन्यास, मेरी प्रिय कहानियां, हानूश, माधवी, कबीरा खड़ा बाजार में आदि नाटक, बलराज माय ब्रदर आत्मकथा आदि हैं।

घर में हम तीन ही व्यक्ति रहते हैं–मां, पिताजी और मैं, पर पिताजी कहते हैं कि यह घर सराय बना हुआ है. हम तो जैसे यहां मेहमान हैं, घर के मालिक तो कोई दूसरे ही हैं।

आंगन में आम का पेड़ है। तरह–तरह के पक्षी उस पर डेरा डाले रहते हैं। जो भी पक्षी पहाड़ियों–घाटियों पर से उड़ता हुआ दिल्ली पहुंचता है, पिताजी कहते हैं वही सीधा हमारे घर पहुंच जाता है, जैसे हमारे घर का पता लिखवाकर लाया हो। यहां कभी तोते पहुंच जाते हैं, तो कभी कौवे और कभी तरह–तरह की गौरैया। वह शोर मचता है कि कानों के पर्दे फट जाएं, पर लोग कहते हैं कि पक्षी गा रहे हैं।

घर के अन्दर भी यही हाल है। बीसियों तो चूहे बसते हैं। रात–भर एक कमरे से दूसरे कमरे में भागते फिरते हैं, वह धमा–चौकड़ी मचती है कि हम लोग ठीक तरह से सो भी नहीं पाते। बर्तन गिरते हैं, डिब्बे खुलते हैं, प्याले टूटते हैं। एक चूहा अंगीठी के पीछे बैठना पसन्द करता है, शायद बूढ़ा है उसे सर्दी बहुत लगती है। एक दूसरा है जिसे बाथरूम की टंकी पर चढ़कर बैठना पसन्द है, उसे शायद गर्मी बहुत लगती है। बिल्ली हमारे घर में रहती तो नहीं, मगर घर उसे भी पसंद है और वह कभी–कभी झांक जाती है। मन आया तो अन्दर आकर दूध पी गई, न मन आया तो बाहर से ही 'फिर आऊंगी' कहकर चली जाती है। शाम

होते ही दो–तीन चमगादड़ कमरों के आर–पार पर फैलाए कसरत करने लगते हैं। घर में कबूतर भी हैं, दिन–भर 'गुटर–गूं, गुटर–गूं' का संगीत सुनाई देता रहता है। इतने पर ही बस नहीं, घर में छिपकलियां भी हैं और बर्रे भी हैं और चींटियों की तो जैसे फ़ौज ही छावनी डाले हुए है।

अब एक दिन दो गौरैया सीधी अन्दर घुस आईं और बिना पूछे उड़–उड़कर मकान देखने लगीं। पिताजी कहने लगे कि मकान का निरीक्षण कर रही हैं कि उनके रहने योग्य है या नहीं। कभी वे किसी रोशनदान पर जा बैठतीं, तो कभी खिड़की पर। फिर जैसे आईं थीं वैसे ही उड़ भी गईं, पर दो दिन बाद हमने क्या देखा कि बैठक की छत में लगे पंखे के गोले में उन्होंने अपना बिछावन बिछा लिया है और सामान भी ले आईं हैं और मजे से दोनों बैठी गाना गा रही हैं। जाहिर है, उन्हें घर पसन्द आ गया था।

मां और पिताजी दोनों सोफ़े पर बैठे उनकी ओर देखे जा रहे थे। थोड़ी देर बाद मां सिर हिलाकर बोलीं, 'अब तो ये नहीं उड़ेंगी, पहले इन्हें उड़ा देते, तो उड़ जातीं। अब तो इन्होंने यहां घोंसला बना लिया है।'

इस पर पिताजी को गुस्सा आ गया। वह उठ खड़े हुए और बोले, 'देखता हूं ये कैसे यहां रहती हैं! गौरैया मेरे आगे क्या चीज़ हैं! मैं अभी निकाल बाहर करता हूं।'

'छोड़ो जी, चूहों को तो निकाल नहीं पाए, अब चिड़ियों को निकालेंगे!' मां ने व्यंग्य से कहा।

मां कोई बात व्यंग्य में कहें, तो पिताजी उबल पड़ते हैं। वह समझते हैं कि मां उनका मज़ाक उड़ा रही हैं। वह फौरन उठ खड़े हुए और पंखे के नीचे जाकर ज़ोर से ताली बजाई और मुंह से 'श–––शू' कहा, बांहें झुलाईं, फिर खड़े–खड़े कूदने लगे, कभी बाहें झुलाते, कभी 'श–––शू' करते।

गौरैयों ने घोंसले में से सिर निकालकर नीचे की ओर झांककर देखा और दोनों एक साथ 'चीं–चीं करने लगीं, और मां खिलखिलाकर हंसने लगीं।

पिताजी को गुस्सा आ गया, इसमें हंसने की क्या बात है?

मां को ऐसे मौकों पर हमेशा मज़ाक सूझता है। हंसकर बोली, चिड़ियां एक दूसरी से पूछ रही हैं कि यह आदमी कौन है और नाच क्यों रहा है?

तब पिताजी को और भी ज़्यादा गुस्सा आ गया और वह पहले से भी ज़्यादा ऊंचा कूदने लगे। गौरैया घोंसले में से निकलकर दूसरे पंखे के डैने पर जा बैठीं। उन्हें पिताजी का नाचना जैसे बहुत पसंद आ रहा था। मां फिर हंसने लगीं, 'ये निकलेंगी नहीं, जी, अब इन्होंने अण्डे दे दिए होंगे।'

'निकलेंगी कैसे नहीं?' पिताजी बोले और बाहर से लाठी उठा लाए। इसी बीच गौरैया फिर घोंसले में जा बैठी थीं। उन्होंने लाठी ऊंची उठाकर पंखे के गोले को ठकोरा।

'चीं–चीं' करती गौरैया उड़कर पर्दे के डण्डे पर जा बैठीं।

'इतनी तक़लीफ़ करने की क्या ज़रूरत थी, पंखा चला देते तो ये उड़ जातीं', मां ने हंसकर कहा।

पिताजी लाठी उठाए पर्दे के डण्डे की ओर लपके। एक गौरैया उड़कर किचन के दरवाज़े पर जा बैठी, दूसरी सीढ़ियों वाले दरवाज़े पर।

मां फिर हंस दी, 'तुम तो बड़े समझदार हो जी, सभी दरवाज़े खुले हैं और तुम गौरैयों को बाहर निकाल रहे हो। एक दरवाज़ा खुला छोड़ो, बाक़ी दरवाज़े बन्द कर दो, तभी ये निकलेंगी।'

अब पिताजी ने मुझे झिड़ककर कहा, 'तू खड़ा क्या देख रहा है? जा, दोनों दरवाज़े बन्द कर दे!'

मैंने भागकर दोनों दरवाज़े बन्द कर दिए केवल किचन वाला दरवाज़ा खुला रहा।

पिताजी ने फिर लाठी उठाई और गौरैयों पर हमला बोल दिया। एक बार तो झूलती लाठी मां के सिर पर लगते–लगते बची। चीं–चीं करती चिड़ियां कभी एक जगह तो कभी दूसरी जगह जा बैठतीं। आखिर दोनों किचन की ओर खुलने वाले दरवाज़े में से बाहर निकल गईं। मां तालियां बजाने लगीं। पिताजी ने लाठी दीवार के साथ टिकाकर रख दी और छाती फैलाए कुर्सी पर आ बैठे।

'आज दरवाज़े बन्द रखो' उन्होंने हुक़्म दिया। 'एक दिन अन्दर नहीं घुस पाएंगी, तो घर छोड़ देंगी।'

तभी पंखे के ऊपर से चीं–चीं की आवाज सुनाई पड़ी. और मां खिलखिलाकर हंस दीं. मैंने सिर उठाकर ऊपर की ओर देखा, दोनों गौरैया फिर से अपने घोंसले में मौजूद थीं।

'दरवाज़े के नीचे से आ गई हैं,' मां बोलीं।

मैंने दरवाज़े के नीचे देखा, सचमुच दरवाज़ों के नीचे थोड़ी–थोड़ी जगह ख़ाली थी।

पिताजी को फिर गुस्सा आ गया। मां मदद तो करती नहीं थीं, बैठी हंसे जा रही थीं।

अब तो पिताजी गौरैयों पर पिल पड़े। उन्होंने दरवाज़ों के नीचे कपड़े ठूंस दिए ताकि कहीं कोई छेद बचा नहीं रह जाए और फिर लाठी झुलाते हुए उन पर टूट पड़े। चिड़ियां चीं–चीं करती फिर बाहर निकल गईं, पर थोड़ी ही देर बाद वे फिर कमरे में मौजूद थीं। अबकी बार वे रोशनदान में से आ गई थीं जिसका एक शीशा टूटा हुआ था।

'देखो–जी, चिड़ियों को मत निकालो' मां ने अबकी बार गम्भीरता से कहा, 'अब तो इन्होंने अण्डे भी दे दिए होंगे, अब ये यहां से नहीं जाएंगी।'

क्या मतलब? मैं कालीन बरबाद करवा लूं? पिताजी बोले और कुर्सी पर चढ़कर रोशनदान में कपड़ा ठूंस दिया और फिर लाठी झुलाकर एक बार फिर चिड़ियों को खदेड़ दिया। दोनों पिछले आंगन की दीवार पर जा बैठीं।

इतने में रात हो गई। हम खाना खाकर ऊपर जाकर सो गए। जाने से पहले मैंने आंगन में झांककर देखा, चिड़ियां वहां पर नहीं थीं। मैंने समझ लिया कि उन्हें अक़्ल आ गई होगी, अपनी हार मानकर किसी दूसरी जगह चली गई होंगी।

दूसरे दिन इतवार था। जब हम लोग नीचे उतरकर आए तो वे फिर से मौजूद थीं और मज़े से बैठी मल्हार गा रही थीं। पिताजी ने फिर लाठी उठा ली। उस दिन उन्हें गौरैयों को बाहर निकालने में बहुत देर नहीं लगी।

अब तो रोज़ यही कुछ होने लगा। दिन में तो वे बाहर निकाल दी जातीं पर रात के वक़्त जब हम सो रहे होते, तो न जाने किस रास्ते से वे अन्दर घुस आतीं।

पिताजी परेशान हो उठे। आख़िर कोई कहां तक लाठी झुला सकता है? पिताजी बार–बार कहें, 'मैं हार मानने वाला आदमी नहीं हूं', पर आख़िर वह भी तंग आ गए थे। आख़िर जब उनकी सहनशीलता चुक गई तो वह कहने लगे कि वह गौरैयों का घोंसला नोचकर निकाल देंगे और वह फ़ौरन ही बाहर से एक स्टूल उठा लाए।

घोंसला तोड़ना कठिन काम नहीं था। उन्होंने पंखे के नीचे फर्श पर स्टूल रखा और लाठी लेकर स्टूल पर चढ़ गए। 'किसी को सचमुच बाहर निकालना हो, तो उसका घर तोड़ देना चाहिए,' उन्होंने गुस्से से कहा।

घोंसले में से अनेक तिनके बाहर की ओर लटक रहे थे, गौरैयों ने सजावट के लिए मानो झालर टांग रखी हो। पिताजी ने लाठी का सिरा सूखी घास के तिनकों पर जमाया और दाईं ओर को खींचा। दो तिनके घोंसले में से अलग हो गए और फरफराते हुए नीचे उतरने लगे।

'चलो, दो तिनके तो निकल गए,' मां हंसकर बोलीं, 'अब बाकी दो हज़ार भी निकल जाएंगे!'

तभी मैंने बाहर आंगन की ओर देखा और मुझे दोनों गौरैया नज़र आईं। दोनों चुपचाप दीवार पर बैठी थीं। इस बीच दोनों कुछ–कुछ दुबला गई थीं, कुछ–कुछ काली पड़ गई थीं। अब वे चहक भी नहीं रही थीं।

अब पिताजी लाठी का सिरा घास के तिनकों के ऊपर रखकर, वहीं रखे–रखे घुमाने लगे। इससे घोंसले के लम्बे–लम्बे तिनके लाठी के सिरे के साथ लिपटने लगे। वे लिपटते गए, लिपटते गए, और घोंसला लाठी के इर्द–गिर्द खिंचता चला आने लगा। फिर वह खींच–खींचकर लाठी के सिरे के इर्द–गिर्द लपेटा जाने लगा। सूखी घास और रूई के फाहे, और धागे और थिगलियां लाठी के सिरे पर लिपटने लगीं। तभी सहसा जोर की आवाज आई, 'चीं–चीं, चीं–चीं!!!'

पिताजी के हाथ ठिठक गए। यह क्या? क्या गौरैया लौट आईं हैं? मैंने झट से बाहर की ओर देखा। नहीं, दोनों गौरैया बाहर दीवार पर गुमसुम बैठी थीं।

'चीं–चीं, चीं–चीं!' फिर आवाज आई। मैंने ऊपर देखा, पंखे के गोले के ऊपर से नन्हीं–नन्हीं गौरैया सिर निकाले नीचे की ओर देख रही थीं और चीं–चीं किए जा रही थीं। अभी भी पिताजी के हाथ में लाठी थी और उस पर लिपटा घोंसले का बहुत–सा हिस्सा था। नन्हीं–नन्हीं दो गौरैया! वे अभी भी झांके जा रही थीं और चीं–चीं करके मानो अपना परिचय दे रही थीं, हम आ गई हैं। हमारे मां–बाप कहां हैं?

मैं अवाक् उनकी ओर देखता रहा। फिर मैंने देखा, पिताजी स्टूल पर से नीचे उतर आए हैं और घोंसले के तिनकों में से लाठी निकालकर उन्होंने लाठी को एक ओर रख दिया है और चुपचाप कुर्सी पर आकर बैठ गए हैं। इस बीच मां कुर्सी पर से उठीं और सभी दरवाज़े खोल दिए। नन्हीं चिड़ियां अभी भी हांफ–हांफकर चिल्लाए जा रही थीं और अपने मां–बाप को बुला रही थीं।

उनके मां–बाप झट–से उड़कर अन्दर आ गए और चीं–चीं करते उनसे जा मिले और उनकी नन्हीं–नन्हीं चोंचों में चुग्गा डालने लगे। मां–पिताजी और मैं उनकी ओर देखते रह गए। कमरे में फिर से शोर होने लगा था, पर अबकी बार पिताजी उनकी ओर देख–देखकर केवल मुस्कराते रहे।

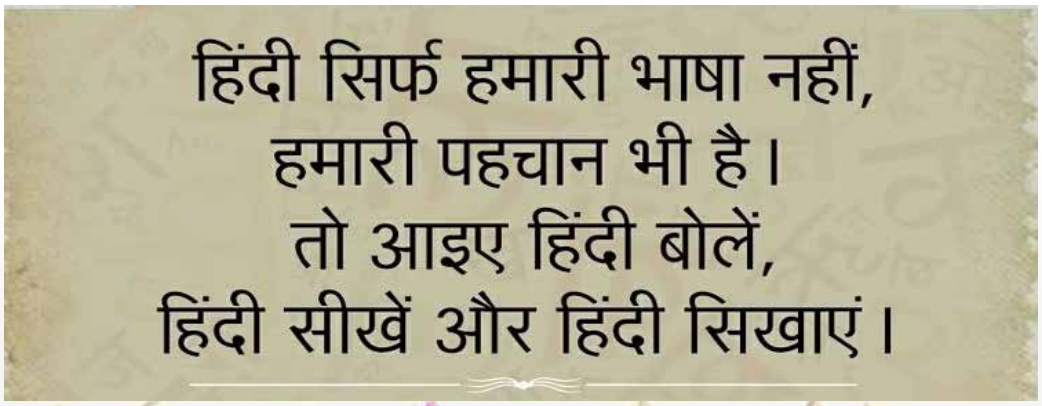

आज का युवा

प्रदीप कुमार साव*

ये 21 वीं सदी आज के युवाओं के नाम है। नया तकनीकी विकास हमारे चारों ओर दिखाई देता है। इसमें वीडियो गेम्स और मोबाइल इत्यादि बच्चों और युवाओं के लिए मनपसंद है जबकि वायु यातायात देश के व्यावसायिक वर्ग और मध्यम वर्गीय परिवारों के लिए प्रमुख है। आज कल के युवाओं के सबसे पसंदीदा मनोरंजन के साधन फिल्म, नेट फलिक्स, ऐमज़ान प्राइम और हॉट स्टार इत्यादि एवं पसंदीदा भोजन कोल्ड ड्रिंक, पिज्जा आदि हैं।

पर आज के युवाओं को यह क्या होता जा रहा है। आज के युवाओं में हिंसक फिल्में देख–देख कर खुद उनके व्यवहार मे ही हिंसक भावना दिखने लगी है। आज की फिल्मों, नेट फलिक्स, ऐमज़ान प्राइम और हॉट स्टार मे आने वाले वेब सीरीज में घटिया से घटिया हिंसक दृश्य और अश्लीलता दिखाई जाती है, इससे युवाओं को ये लगता है कि हमारे चारों ओर भी यही सब चल रहा है। इन हिंसक दृश्यों को देख–देख कर ये युवा अधिकांशतः मानसिक रूप से चिड़चिड़े और क्रोधित रहते हैं और हरदम बहस और बदतमीजी वाले मूड में रहते हैं। आज के इन युवाओं में किसी भी प्रकार का कोई शिष्टाचार नहीं दिखता है।

आज के दौर में इडियट बॉक्स में सिर्फ मदिरा, गुटखा, कोल्ड ड्रिंक, पिज्जा का उपभोग करने के लिए बार–बार विज्ञापन दिखाया जाता है जो फिल्म और खेल जगत की जानी–मानी हस्तियां करती हैं। आप जब भी ईडियट बॉक्स खोलेंगे तो आपको इस तरह का ही विज्ञापन देखने को मिलेगा जिससे इन युवाओं का रुझान मदिरा, गुटखा, कोल्ड ड्रिंक, पिज्जा के उपभोग के प्रति बहुत तेजी से बढ़ता जा रहा है। बच्चों को सबसे ज्यादा कोल्ड ड्रिंक और पिज्जा पसंद आता है और युवाओं को मदिरा, गुटखा, कोल्ड ड्रिंक, पिज्जा।

आज तो लगभग हर बच्चा मोबाइल का दीवाना है। यहां तक कि वो खाना खाते समय भी मोबाइल चलाते रहते हैं। रात में जब सब सो जाते हैं तो चादर के अंदर फेसबुक, व्हाट्सप, वीडियो गेम्स और वेब सीरीज इत्यादि देखते रहते हैं। जिसके फलस्वरूप नींद कम होती है और दिन–भर चिड़–चिड़ाहट बनी रहती है। आज के समय अश्लील वीडियो इंटरनेट मे बहुत आसानी से उपलब्ध है और आज के बच्चों और युवाओं के हाथ में मोबाइल है। अब आप समझ ही सकते हैं कि हमारी नई पीड़ी किस ओर जा रही है या फिर ये कहें कि कितनी तेजी से इनका नैतिक पतन हो रहा है।

आज के युवा मेट्रो, रेल या सार्वजनिक बसों में अपने मोबाईल मे ही डूबे दिखते हैं। आज मेट्रो, रेल या सार्वजनिक बसों में युवाओं को अपने से बड़ों के साथ बहस या बदतमीजी करते हुए आसानी से देखा जा सकता है। आज के अधिकांश युवा किसी बुजुर्ग को मेट्रो अथवा सार्वजनिक बसों में बैठने के लिए सीट नहीं देते। यहां तक कि कुछ तो यह भी कह देते हैं कि वरिष्ठ नागरिक सीट उस तरफ है और हां, अंग्रेजी में गाली देने का चलन इन युवाओं की विशेषता है और जो क्षेत्रीय भाषा में पढ़े हैं वे उस भाषा में उच्चारण करते हैं। समझ नहीं आता कि ये सब घर में सिखाया जाता है कि स्कूल में। ये सोचने का विषय है कि इन गंदी बातों और आदतों का प्रशिक्षण इन युवाओं को आखिर मिल कहां से रहा है। आईपीएल

*प्रबंधक (लेखा), क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

क्रिकेट के इस दौर में युवाओं को तो जुआ खेलने के लिए खुले आम विज्ञापन द्वारा प्रोत्साहित किया जा रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि इन सबके पीछे एक सोची–समझी प्रणाली कार्यरत है जो युवाओं को मानसिक, शारीरिक और व्यावहारिक रूप से कमजोर बना रही है।

सह शिक्षा का चलन आज बहुत बढ़ चला है। बताया जाता है कि ये बच्चों की बेहतर पढ़ाई के लिए उचित है पर आज के दौर में जब हमारे युवाओं का मानसिक, शारीरिक और व्यावहारिक स्तर पर इतनी तेजी से पतन हो रहा है, उस अवस्था मे सह शिक्षा कितनी उचित या सुरक्षित है, ये कहना मुश्किल है। आजकल समाचार पत्रों को देखने और पढ़ने से यही समझ आता है कि देश में प्रति वर्ष होने वाले जुर्म में हमारे बच्चों (18 वर्ष से कम) और युवाओं की भागीदारी तेजी से बढ़ती जा रही है।

ऐसा बिल्कुल नहीं है कि हमारे सभी युवा ऐसे हैं। बड़ी संख्या में देश के जिम्मेदार युवा उच्च शिक्षा प्राप्त कर देश के विकास में अपना योगदान भी दे रहे हैं। आप जहां भी जाएं इन युवाओं की प्रतिभागिता को देख सकते हैं, उदाहरण के लिए– सेना के तीनों अंगों में, पुलिस स्टेशन, अस्पताल, रेलवे स्टेशन, स्कूल और कॉलेज के शिक्षक और प्रोफेसर के रूप में, अंतरिक्ष विज्ञान, अनुसंधान संस्थानों, न्यायिक सेवाओं, संघ लोक सेवा आयोग इत्यादि में इन युवा प्रतिभाओं को आप आसानी से देख सकते हैं। परिवार को चलाने की जिम्मेदारी में अपनी अहम भूमिका निभाने वाले ये युवा ही हैं।

पर इन युवाओं का एक बहुत बड़ा वर्ग ऐसा भी है जिनका मानसिक, शारीरिक और व्यावहारिक स्तर पर पतन तेजी से हो रहा है। आज के बड़े–बड़े इंग्लिश मीडियम स्कूल में पढ़ने वाले युवाओं को देखकर लगता है कि ये स्कूल बच्चों को जीवन का पाठ पढ़ाना भूल गए हैं, शिष्टाचार सिखाना भूल गए हैं। लगता है अनुशासन में शिष्टाचार के साथ जीवन कैसे जीना है, इस विषय की पाठशाला अब तक लगी ही नहीं है। आज का युवा ही कल का भविष्य है। आज का युवा जिस ओर बढ़ेगा, देश भी उसी दिशा मे बढ़ेगा। युवा एक ऐसी शक्ति है जिसे सही दिशा की जरूरत है।

आज के युवा को न तो अपने धर्म का ज्ञान है और न ही अपनी संस्कृति का। ऐसे युवा जब गृहस्थ जीवन में उतरेंगे तो अपने पारिवारिक जिम्मेदारियों को किस स्तर तक निभा पायेंगें। छोटों का बड़ों का सम्मान न करना, बहस या बदतमीजी करना इत्यादि और अंत में आज का बिखरता परिवार। समाज कुछ हद तक इन्हीं समस्याओं का शिकार है। वो पुराने दिन बहुत याद आते हैं, जब आज की तरह न तो कोई मनोरंजन के साधन थे और न ही कोई ज्यादा पढ़ा–लिखा हुआ करता था पर पारिवारिक और सामाजिक व्यवस्था पूरी तरह से दुरुस्त थी।

स्वतंत्र भारत में महिला सशक्तिकरण

राका जैन*

स्वतंत्रता के बाद से, भारतीय समाज में महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण में बड़े बदलाव आये हैं। स्वतंत्रता का मतलब सिर्फ राजनीतिक आजादी ही नहीं था, बल्कि यह उन समाजिक शैली और सोच की आजादी भी थी, जिसमें महिलाएं भी समान अधिकार और अवसरों का लाभ उठा सकें।

स्वतंत्रता के पश्चात्, महिलाओं ने अपने अधिकारों के लिए संघर्ष किया और समाज में अपनी जगह बनाने में मदद की। महिलाओं शिक्षा के क्षेत्र में अपनी मुख्य भूमिका निभाई, जिससे समाज में जागरूकता फैली।

आजकल, महिलाएं सभी क्षेत्रों में उच्च पद प्राप्त कर रही हैं, चाहे वो विज्ञान, प्रौद्योगिकी, स्पोर्ट्स, आर्ट्स या राजनीति ही क्यूं न हो। महिलाएं अपनी मनोबलपूर्ण सोच और मेहनत से हर कठिनाई को पार करने का संकल्प लेती हैं।

महिलाओं के प्रति समाज में सकारात्मक दृष्टिकोण और समर्थन की आवश्यकता है। उनके सशक्तिकरण से ही समाज में समानता और सामाजिक प्रगति संभव है। महिलाएं अन्दर छुपे अद्भुत साहस को पहचानें और उसका सही दिशा में उपयोग करें, तो समाज में नई ऊंचाइयों की ओर बढ़ने में वे सहायक साबित हो सकती हैं।

स्वतंत्रता के बाद से समाज में महिलाओं का स्थान और महत्व काफी बदल चुका है। उन्हें सिर्फ घर के कामों और परिवार की देखभाल में ही नहीं रहने दिया जाता है, बल्कि उन्हें हर क्षेत्र में अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन करने का अवसर मिलता है।

महिलाओं को शिक्षा से महत्वपूर्ण भूमिका मिली है, शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है और वे अब समाज में अपनी पहचान बना रही हैं। महिलाएं न केवल शिक्षा में माहिर हो रही हैं, बल्कि वे शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापिका, प्रोफेसर, डॉक्टर और अन्य उच्च पदों पर भी उन्नति कर रही हैं। उन्होंने न केवल अपने लिए बल्कि आगे की पीढ़ियों के लिए भी एक मजबूत शिक्षा प्रणाली की मांग की। शिक्षिका बनने से लेकर सांसद और मंत्री तक के पदों पर महिलाएं अब हर क्षेत्र में उपस्थित हैं और वे अपनी योग्यता के साथ सामाजिक उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

महिलाओं की उपस्थिति न केवल शिक्षा में है, बल्कि वे विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, और अन्य क्षेत्रों में भी अपनी पूरी क्षमताओं का प्रदर्शन कर रही हैं। उन्होंने अपनी सोच और कठिनाइयों का सामना करने की क्षमता से सबित किया है कि वे किसी भी काम में समर्थ हो सकती हैं। व्यापार, विज्ञान, प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों में भी महिलाएं आगे बढ़ रही हैं। वे न केवल काम कर रही हैं, बल्कि उन्होंने नौकरी और व्यवसाय में अद्वितीयता दिखाई है। महिलाएं न केवल अपने परिवार में बल्कि समाज में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

समाज में समानता की दिशा में महिलाओं का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। उनकी सक्रियता और समर्पण से ही हमारे समाज में सामाजिक बदलाव संभव है। आज महिलाएं न केवल अपने अधिकारों की रक्षा कर रही हैं, बल्कि वे समाज में सद्गुण और सहानुभूति की भावना को भी बढ़ावा दे रही हैं।

*प्रतिनिधि, आदर्श क्रय–विक्रय एवं प्रक्रियात्मक सहकारी समिति लि0, प्रेमपुरी, मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश)

स्वतंत्रता के बाद से, महिलाओं की उन्नति और सशक्तिकरण की दिशा में बड़े परिवर्तन आए हैं। भारतीय समाज में पूर्णतः समर्पित उनके समाज में और समान होने की दिशा में अब महिलाओं की स्थिति बदल चुकी है।

महिलाओं के उदाहरणों से ही हमें यह सीखने को मिलता है कि कोई भी मानव समुदाय, चाहे वो कितना भी परिश्रमी क्यूं न हो, बिना महिलाओं के सहयोग के पूरी तरह से विकसित नहीं हो सकता। महिलाएं अपने सामर्थ्य से ही न केवल अपने परिवार का पूर्णतः समर्थन करती हैं, बल्कि समाज में भी अपने सकारात्मक प्रभाव को बिखेरती हैं।

इस प्रकार, स्वतंत्र भारत में महिला सशक्तिकरण ने न केवल महिलाओं की आत्मा को बल दिया है, बल्कि समाज को भी एक नयी दिशा देने में सहायक रही है। यह एक प्रेरणास्त्रोत है जो हमें दिखाता है कि समाज में समानता और सामाजिक सुधार लाने में सिर्फ एक सजग और सशक्त महिला ही सक्षम है। स्वतंत्र भारत में महिला सशक्तिकरण ने सिर्फ महिलाओं को ही नहीं, बल्कि समाज को भी मजबूत और समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इससे पता चलता है कि महिलाएं अपनी प्रतिबद्धता, साहस और समर्पण से किसी भी कठिनाई को पार कर सकती हैं और समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकती हैं।

इस दिशा में, स्वतंत्र भारत में महिला सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह उन्हें न केवल आत्मनिर्भर बनाता है, बल्कि समाज को भी प्रेरित करता है कि वो समानता और समरसता की दिशा में आगे बढ़े। महिलाओं के योगदान से ही हमारे समाज की समृद्धि और समानता की दिशा में प्रगति संभव है।

मीरा की अमर भक्ति, ज़हर से मर नहीं सकती,
झाँसी वाली रानी है, किसी से डर नहीं सकती,
मदर टेरेसा, कल्पना हो या सानिया, मैरी
असंभव क्या है दुनियां में, जो नारी कर नहीं सकती।।

मेरा देश

क्षिरोद्र कुमार पांडा*

ऐ वतन मेरी जान–मेरी शान है तू,
विविधता में एकता की स्वर्णिम मिसाल है तू।।

प्रकट करते हैं आभार और धन्य है इस मौके का
नमन करते हैं उन वीर–वीरांगनाओं को,
तेरी रक्षा में जिन्होंने
अपनी प्राणों का बलिदान दिया।
ऐ वतन मेरी जान–मेरी शान है तू,
विविधता में एकता की स्वर्णिम मिसाल है तू ।।

कर्तव्यनिष्ठ और सेवा, ध्येय हो हमारा,
कर्म, सभी की सेवा हो।
भावनाएं हों समर्पण से भरी,
जब बात आए अधिकार की,
सब से बाद में आए इसकी बारी।
ऐ वतन मेरी जान–मेरी शान है तू,
विविधता में एकता की स्वर्णिम मिसाल है तू।।

इतना सक्षम बना दे हमें,
जहां भी रहें जो भी करें,
न देंगे मौका शिकायत का,
देशप्रेम और भाईचारे से,
बनेगी तू फिर से वो सोनपरी ।
ऐ वतन मेरी जान–मेरी शान है तू,
विविधता में एकता की स्वर्णिम मिसाल है तू।।

*क्षेत्रीय प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलुरु

दृश्य

हरिन्दर तँवर*

हर यात्रा का अपना एक सुखद अनुभव होता है और हर यात्रा अपने आप में कई यादें समेटे हुए होती है पर उनमें से कुछ बहुत यादगार होती हैं। कई बार बस कुछ ही पलों के दृश्य हम पर इतना गहरा प्रभाव डालते हैं कि मानो वे हमारे मन में बस जाते हैं। उस दृश्य का मानचित्र हमारी आँखों में इस तरह बस जाता है कि उस दृश्य को याद करते ही उसका छायांकन हमारी नज़रों के सामने होता है। यह कहानी भी एक ऐसे दृश्य के बारे में ही है जो था तो कुछ सेकेंड का मगर मुझे घंटों तक सोचने पर मज़बूर किया। दृश्य था, सड़क के किनारे खेलते चले जा रहे दो छोटे–छोटे बच्चों और उनको पीछे से आवाज़ देते एक बूढ़े व्यक्ति का।

"आँखे सिर्फ हमें दृष्टि प्रदान करती हैं, परन्तु किसी दृश्य को हम कैसे देखते हैं, यह हमारी सोच पर निर्भर करता है"

अगर शुरू से शुरू करें तो एक बार मैं और मेरे तीन दोस्त रणथम्भौर से घूम कर दिल्ली की ओर वापस आ रहे थे। एक दोस्त गाड़ी चला रहा था और मैं आगे की सीट पर बैठा था, थकावट के कारण मेरी आँखों में नींद भरी पड़ी थी। पीछे दो दोस्त अपने–अपने मोबाइल में सोशल मीडिया और ऑनलाइन गेम्स में व्यस्त थे। कोई भी एक दूसरे से बात नहीं कर रहा था। निकले तो थे कि सब दोस्त साथ जाएंगे, मौज–मस्ती करेंगे लेकिन हम सब साथ होकर भी साथ नहीं थे, सब अपने–आप में ही व्यस्त थे और कारण था मोबाइल (सोशल मीडिया) – "सोशल मीडिया हमारे समाज के लिए एक अभिशाप बन चुका है। आज हर नौजवान इसकी चपेट में है। आज कोई एक दूसरे से बात तक करने को तैयार नहीं, हर कोई बस अपने मोबाइल के साथ समय बिताना पसंद करता है ना की जीते–जागते इंसान के साथ। तो आज की पीढ़ी को सामाजिक ज्ञान, सच्ची खुशी व आनंद का आभास कैसे होगा। ना कोई सफ़र का मज़ा ले रहा था ना कोई एक दूसरे के साथ का, बस मंज़िल की तरफ बढ़े चले जा रहे थे। तभी नींद भरी मेरी नज़रें चंद सेकेंड के लिए कार की खिड़की से बाहर एक ऐसे दृश्य पर जा पड़ी जिसने मेरी नींद ही उड़ा दी और मुझे एक गंभीर विडम्बना में डाल दिया।

किसी एक गाँव के पास से गुज़रते हुए मैंने देखा कि हाईवे के किनारे कच्ची सड़क पर 4–5 साल के दो छोटे–छोटे बच्चे जो पहनावे से गाँव के प्रतीत नहीं पड़ रहे थे विपरीत दिशा में दौड़े चले जा रहे थे। सफ़ेद दूध जैसा गोरा रंग, सुनहरे बाल, कोमल–कोमल हाथ–पैर, शरीर पर महंगे ब्रांडेड कपड़े और पैरों में अच्छी कम्पनी के जूते पहने शहरी लड़के – मानो अभी चलकर शहर से गाँव में आए हो। पीछे–पीछे दो भैंसो को ताड़ कर ले जाता एक बूढ़ा व्यक्ति, जो उन बच्चों को आवाज़ लगा कर शायद रुकने को कह रहा था, कि रुक जाओ सड़क पर मत दौड़ो, मेरे साथ चलो। बूढ़ा व्यक्ति जो उन बच्चों का शायद दादा या नाना रहा होगा। एकदम गाँव का देहाती बूढ़ा– गेहुँआ रंग, बढ़ी हुई दाढ़ी और मूँछ, धोती– कुर्ता पहने हुए, हाथ में लाठी, सर पे पगड़ी, पैरों में जूती, चेहरे पर पड़ी झुर्रियां और उन में दबी हुई मिची–मिची सी आँखें और झुके हुए कंधे – जिसको देखकर आसानी से कोई भी बता देता कि इस इंसान ने अपने घरेलू जीवन में

*निजी सहायक, निदेशक (वित्त) कार्यालय, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

निम्नवर्ग के व्यक्ति के रूप में अपने परिवार के पालनपोषण की जदो–ज़हद में काफ़ी संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत किया होगा। मगर अभी उसके चेहरे की एक बड़ी मुस्कराहट कुछ और ही कह रही थी। मानो काफ़ी समय बाद छुट्टियों में गाँव में उससे मिलने आए उसके पोते ही उसके जीवन की सारी जमा–पूंजी हो।

अब इस दृश्य को देखकर मेरे मन में एक प्रश्न चिन्ह उठ खड़ा हुआ कि क्या यह संभव है कि हम दोस्त जो लगभग एक से ही परिवेश से आते हैं, एक साथ होते हुए भी अलग–थलग बैठे थे परन्तु दो इतनी विभिन्न या विपरीत जीवनशैली (वेशभूषा व स्वभाव) के व्यक्ति एक साथ इतना आनंद महसूस कर सकते हैं या प्रसन्न रह सकते हैं। आखिर बूढ़े व्यक्ति की खुशी के पीछे का क्या कारण होगा? वह इस वक्त मुस्कराते समय क्या सोच रहा होगा? क्या एक गरीब किसान, इस गरीबी और साधारण से जीवन में भी इतना खुश रह सकता हैं? और क्या किसी के लिए खुशी का कारण बस उसके अपनों का उसके साथ होना ही हो सकता हैं? और मैं एक गहरे चिंतन में जा फँसा कि यह हुआ कैसे होगा।

शायद हो सकता है कि उस बूढ़े व्यक्ति ने अपने जीवन में काफ़ी संघर्ष और कठिनाईओं का सामना करने के बावजूद अपने बेटे को अच्छी शिक्षा प्राप्त कराई हो और वह पढ़–लिखकर शहर में अच्छी नौकरी पाने में सक्षम रहा हो। अब काफ़ी वर्षों के बाद जब वह अपनी बीवी–बच्चों के साथ छुट्टियों में अपने माता–पिता के पास अपने गाँव वापिस आया हो। वहीं पर जब बच्चों ने दादा जी को भैंसों के साथ खेत पर जाते देखा होगा तो ज़िद्द की होगी कि वे भी दादा जी के साथ खेत पर जाएंगे और खूब मस्ती करेंगे, उसी दौरान रास्ते में जाते वक्त मेरी नज़र इस दृश्य पर पड़ी और ये मेरे ज़हन में कैद होकर रह गया।

यह भी मुमकिन है कि ना दादा को शहरी जीवन के बारे में कुछ पता था और हो सकता है कि ना पहले कभी पोते गाँव में आए हो लेकिन फिर भी वे खुश थे और उनको हँसते–खेलते देखकर दादा जी के चेहरे की चमक देखते ही बनती थी। यह दृश्य मानो मुझे एक ठंडे पवन के झोकें की तरह छूकर निकल गया हो। मगर इस सब के बीच में जो मेरे मन में सबसे बड़ा सवाल उठ रहा था वह यह कि 'क्या यह मुमकिन है कि दो विभिन्न जीवनशैली के लोग आपस में मिलजुल कर इतना खुश रह सकते हैं और कब तक ?

और क्या यह संभव नहीं कि थोड़े समय बाद जब बच्चे बड़े होंगे और उनके पास भी सभी की तरह मोबाइल होंगे तो क्या तब वो यहाँ गाँव में आना पसंद करेंगे? और अगर गाँव आ भी गए तो क्या वो फिर से अपने दादा जी के साथ इसी प्रकार समय बिताना पसंद करेंगे या हमारी तरह मोबाइल में सोशल मीडिया पर? और क्या तब भी दादा जी के चेहरे पर इसी प्रकार मुस्कराहट होगी, जब बच्चे यहाँ आकर भी उनके साथ समय न बिता कर सोशल मीडिया पर ही व्यस्त होंगे? इन सब सवालों के बीच मन जैसे उलझ के रह गया हो।

मैं इस दृश्य को वहीं पर ठहरा देना चाहता था, पहाड़ों के बीच में हवा से लहलहाते हरे–भरे खेत उनके बीच में कच्ची सड़क पर हँसते–खेलते, दौड़ते शहरी बच्चे पीछे से अपने पशुओं को लेकर आता गाँव का देहाती बूढ़ा और उसके चेहरे की वो बड़ी–सी मुस्कराहट। लेकिन अब हम दिल्ली पहुँच चुके थे और अपने पुराने जीवन में व्यस्त होने के लिए तैयार थे। आखिर दूसरे दिन से फिर रोज़मर्रा के काम और ऑफिस भी तो जाना है। शहर में रहकर गाँव के उस खुशहाल जीवन की केवल कल्पना ही की जा सकती है, उस जीवन को जीना अब हमारे लिए संभव नहीं, बस सोशल मीडिया से लोगो के साथ जुड़कर खुश होने का दिखावा ही किया जा सकता है। सोशल मीडिया पर लोग साथ होकर भी साथ नहीं होते, बल्कि इसकी वज़ह से अपनों से भी दूर होते जा रहे हैं।

"ये दुनिया दिखावे की बनी हुई है,
यहाँ अपने तो असली में हैं पर,
उनका अपनापन दिखावे का है।"

निगम के अधीनस्थ वेअरहाउस- एक परिचय

सेंट्रल वेअरहाउस – अहमदाबाद–I

सेन्ट्रल वेअरहाउस, अहमदाबाद–I केन्द्रीय भण्डारण निगम के क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद के अधीनस्थ एक वेयरहाउस है। यह वेअरहाउस P&T कॉलोनी के सामने, शाह–ऐ–आलम, अहमदाबाद में स्थित है। सन 1962 में स्थापित यह वेअरहाउस अहमदाबाद शहर के मध्य में स्थित है।

विविध सुविधाओं से सुसज्जित यह वेअरहाउस ई–कॉमर्स, एफएमसीजी, निर्यात–आयात, कृषि, इंफ्रास्ट्रक्चर, फार्मा जैसे विविध उद्योगों के ग्राहकों को सेवा प्रदान करता है।

हम इस वेअरहाउस एवं अन्य अधीनस्थ केन्द्रों के माध्यम से तथा अपने व्यापक ज्ञान और अनुभव का उपयोग करके अपने ग्राहकों की विशिष्ट आवश्यकताओं के आधार पर भंडारण और लॉजिस्टिक्स सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करते हैं।

कनेक्टिविटी एवं लोकेशन

- यह वेअरहाउस अहमदाबाद के मुख्य कालूपुर रेलवे स्टेशन एवं नेशनल हाईवे–08 से केवल 5 किलोमीटर दूर एवं गीता मंदिर बस स्टेशन (अहमदाबाद का मुख्य बस स्टेशन) से केवल 2 किलोमीटर दूर स्थित है।
- अहमदाबाद के महत्वपूर्ण आर्थिक केंद्र जैसे कि पालडी, आश्रम रोड, सीजी रोड, कॉमर्स सिक्स रोड, लॉ गार्डन इस वेअरहाउस से केवल सिर्फ 20 मिनट के अंतर पर स्थित है।

लाइसेंस एवं सर्टिफिकेशन

सेंट्रल वेअरहाउस, अहमदाबाद–I द्वारा निम्नलिखित लाइसेंस एवं सर्टिफिकेशन प्राप्त है –

- FSSAI लाइसेंस नंबर 10020021005149 जो दिनांक 29.01.2026 तक मान्य है।
- WDRA लाइसेंस नंबर 4351667 जो दिनांक 06.04.2026 तक मान्य है।
- PESTICIDE लाइसेंस नंबर 96964 जो दिनांक 11.04.2018 तक मान्य है।
- ISO 9001:2015, ISO 14001:2015 तथा ISO 45001:2018 जैसे ISO/QUALITY CERTIFICATE भी इस वेअरहाउस को प्राप्त है।

सुविधाएँ एवं इंफ्रास्ट्रक्चर का विवरण

- इस वेअरहाउस काम्प्लेक्स के अन्दर कुल 09 स्वतंत्र गोडाउन स्थित हैं
- इन–हाउस CENTRAL GRAIN ANALYSIS LABORATORY उपलब्ध
- वेअरहाउस की फ्लोरिंगः RCC
- कुल एरियाः 25565 स्क्वेर मीटर
- कुल नॉन–कवर्ड (ओपन) एरियाः 12055 स्क्वेर मीटर
- इंटरनल रोडः पूरे काम्प्लेक्स में आवागमन हेतु RCC रोड
- बाउंड्री वालः पूरे काम्प्लेक्स के सुर्रौन्डिंग में 7 फूट ऊँची एवं वायर फेंसिंग वाली बाउंड्री वाल
- वेअरहाउस काम्प्लेक्स के अन्दर 60 मेट्रिक टन का वे–ब्रिज उपलब्ध
- 24x7 सी.सी.टी.वी. कैमरे की निगरानी
- महिला एवं पुरुषों के लिए प्रसाधन की व्यवस्था
- पीने के पानी की सुविधा
- इलेक्ट्रिसिटी कनेक्शन
- सभी प्रमुख इंटरनेट सेवा प्रदाता उपलब्ध
- सभी प्रकार के पेस्ट–कण्ट्रोल सर्विस की सुविधा उपलब्ध

सेंट्रल वेअरहाउस – लखनऊ–।

केन्द्रीय भंडारण निगम, (भारत सरकार का उपक्रम) क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ के अधीनस्थ केन्द्रीय भंडार गृह, लखनऊ – प्रथम जो राजाजी पुरम कालोनी, मुहान रोड, लखनऊ पर स्थित है एवं वर्ष 1975 से अस्तित्व में आया एवं संचालित है तथा वैज्ञानिक भंडारण की सभी औपचारिकताओं से परिपूर्ण है। इस भंडारगृह की मुख्य विशेषताएँ, उपलब्ध सेवाएँ एवं सुविधाएँ निम्न हैं:–

1. यह भंडारगृह उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में स्थित होने से देश के सभी प्रमुख शहरों से सड़क, रेल एवं वायु मार्ग से व्यापक रूप से जुड़ा हुआ है।
2. केंद्र में वैज्ञानिक भंडारण हेतु 27938 मी०टन क्षमता उपलब्ध है जिसमें 26400 मी०टन कवर्ड तथा 1520 मी०टन ओपेन स्थान है। केंद्र की उपयोगिता 80 प्रतिशत है तथा यह भंडारगृह सम्भागीय खाद्य नियंत्रक, बिग बास्केट, अमेजान, रिलायंस एवं लाग–9 द्वारा पूर्णरूपेण डेडिकेटेड आधार पर उपयोग में है।
3. यह भंडारगृह आई.एस.ओ.9001:2015, ई.एम.एस. 14001:2005 एवं ओ.एच.एस.ए.एस.180001:2007 द्वारा प्रमाणित है।
4. यह भंडारगृह सी. सी.टी.वी. की निगरानी प्रणाली से युक्त सभी तरह से सुरक्षित है।
5. भंडारगृह में सुरक्षा के लिए डी.जी.आर. सुरक्षा प्रदान की गई है।
6. भंडारगृह पूर्णरूपेण अग्निशामन प्रणाली के अनुरूप है।
7. भंडारगृह में गोदाम/परिसर साफ–सुथरे एवं पर्यावरण के अनुरूप है।
8. भंडारगृह में सभी के लिए स्वच्छ जन सुविधाएँ उपलब्ध है।
9. भंडारगृह भंडारगार विकास एवं विनियामक प्राधिकरण के अंतर्गत पंजीकृत है।
10. भंडारगृह में 40 मी०टन क्षमता का इलेक्ट्रानिक धर्म कांटा स्थापित है।
11. यह भंडारगृह रेल साइड वेअरहाउस से मात्र 3 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।
12. इस भंडारगृह द्वारा सभी के लिए कीट नियंत्रण सेवाएँ (Pest control service) भी उचित दर पर उपलब्ध कराई जाती हैं।
13. इस भंडारगृह द्वारा किसानों को किसान विस्तार सेवा (FESS) के अंतर्गत सुरक्षित भंडारण हेतु प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।
14. इस भंडारगृह पर ऑनलाइन लेनदेन करने तथा भंडारगृह के सुगम संचालन हेतु वेअरहाउस प्रबंधन प्रणाली (डब्ल्यू.एम.एस.) संचालित है।

केन्द्रीय भण्डारगृह, लखनऊ–प्रथम का संक्षिप्त विवरण

1. **सामान्य पक्ष**

- निर्माण वर्ष : 1975.76
- कुल क्षमता : 27938 एम0टी0
- उपयोग : 21906 एम0टी0

कवर एरिया : 26400 एम0टी0
ओपन एरिया : 1538 एम.टी.
गोदामो की संख्याः : 07 (1 से 7)
धारिता (अधिभोग). : 80%

2. भौतिक एवं वित्तीय पक्ष

क्रं	विवरण	2020–21	2021–22	2022–23
1	क्षमता (एम0टी0)	26400	26400	26400
2	धारिता (अधिभोग %)	90	87	97
3	आय; (रु.)	3,11,96,106/-	3,37,27,427/-	4,17,62,494 /-
4	खर्चा (रु.)	1,33,55,194/-	1,16,66,183/-	1,21,67,778/-
5	लाभ/हानि (रु.)	1,78,40,912/-	2,20,61,244/-	2,95,94,716/-

3. Xkkgd i{k%

क्रं	जमाकर्ता के नाम	उपयोग की जा रही क्षमता
1	सम्भागीय खाद्य नियन्त्रक (डेडीकेटेड आधार)	2700 एम0टी0 1340.16 वर्गमीटर
2	ऐमाजॉन (डेडीकेटेड आधार)	1666 एम0टी0 (884.75 वर्गमीटर)
3	बिग बास्केट (डेडीकेटेड आधार)	10121 एम0टी0) (5382.73 वर्गमीटर)
4	रिलायन्स (डेडीकेटेड आधार)	5540 एम0टी0) (2940.52 वर्गमीटर)
5	लाग 9 (इलेक्ट्रिक व्हीकल चार्जिंग प्वाइंट)	245 एम0टी0) (130.00 वर्गमीटर)

केंद्रीय भंडारण निगम में राजभाषा निरीक्षण

शशि बाला*

प्रत्येक वर्ष राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा हिंदी के प्रयोग के लिए वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है। इस वर्ष भी वार्षिक कार्यक्रम–2023–24 जारी किया गया है। इस कार्यक्रम में मंत्रालय/विभागों और कार्यालयो के अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय तथा मुख्यालय में स्थित अनुभागों का 25 प्रतिशत निरीक्षण करना सुनिश्चित किया गया है। इसी उपलक्ष्य में केन्द्रीय भंडारण निगम के निगमित कार्यालय में प्रत्येक वर्ष विभागों तथा अनुभागों के राजभाषा निरीक्षण किए जाते हैं। इसके लिए राजभाषा निरीक्षण प्रोफार्मा में दी जाने वाली सूचनाएं सही व सटीक होनी चाहिए। इससे कार्यालय में राजभाषा हिंदी में किए जा रहे कार्य की जांच होती है। यह निरीक्षण इसलिए भी जरूरी है कि क्योंकि अनुभागों के निरीक्षण के अतिरिक्त निगमित कार्यालय द्वारा क्षेत्रीय कार्यालयों का राजभाषा निरीक्षण, मंत्रालय द्वारा निरीक्षण, राजभाषा विभाग द्वारा निरीक्षण तथा सर्वोच्च निरीक्षण संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण किए जा सकते हैं। इसलिए यह निरीक्षण किया जाना अत्यावश्यक है। प्रत्येक क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा अपने कार्यालय के सभी अनुभागों तथा अधीनस्थ वेअरहाउसों, आईसीडी, सीएफएस का राजभाषा निरीक्षण किया जाना चाहिए। यह निरीक्षण क्षेत्रीय कार्यालयों में कार्यरत राजभाषा अधिकारी द्वारा किए जाते हैं।

राजभाषा निरीक्षण प्रोफार्मा में कुल 18 बिंदु हैं जिन्हें सही प्रकार से भरा जाना आवश्यक है।

1 निरीक्षण प्रोफार्मा के भाग–। में कुल 4 बिंदु हैं जिसमें विभाग/अनुभाग का नाम, विभागाध्यक्ष का नाम व नोडल अधिकारी का नाम व निरीक्षण की तिथि इत्यादि हैं।

2 निरीक्षण प्रोफार्मा के भाग–।। में कुल 3 बिंदु हैं जो पिछले निरीक्षण तथा उसमें दी गई ध्यान देने योग्य बातों पर कार्रवाई से संबंधित है।

3 निरीक्षण प्रोफार्मा का भाग–।।। राजभाषा अधिनियम/राजभाषा नियम/वार्षिक कार्यक्रम तथा अन्य आदेशों/अनुदेशों के अनुपालन से संबंधित है। भाग–।।। में कुल 15 बिंदु हैं जिसके पहले बिंदु में पिछले निरीक्षण की तिथि दी जानी है तथा दूसरे बिंदु में विभाग/अनुभाग में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों के हिंदी ज्ञान की स्थिति की सही जानकारी दी जानी चाहिए तथा प्रशिक्षण के लिए शेष कर्मचारियों की जानकारी भी इसी कॉलम में दी जाती है।

4 बिंदु सं. 3 विभाग तथा अनुभागों को हिंदी में काम करने के लिए विनिर्दिष्ट करने से संबंधित है जो राजभाषा नियम 10(4) के अनुपालन से संबंधित है। साथ ही, बिंदु सं. 2 विभाग/अनुभाग में सभी प्रवीणता प्राप्त कार्मिकों को व्यक्तिशः आदेश जारी किए जाने से संबंधित है।

5 बिंदु सं. 4 में विभाग/अनुभाग में तैनात आशुलिपिक तथा लिपिकों की कुल संख्या से संबंधित है कि क्या उन्हें हिंदी आशुलिपिक/टंकण में प्रशिक्षण प्राप्त है तथा प्रशिक्षण के लिए शेष आशुलिपिकों एवं लिपिकों की संख्या दी जानी चाहिए।

*सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

6 निरीक्षण प्रोफार्मा के इस बिंदु में विभाग/अनुभाग में राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) जिसके 14 दस्तावेज आते हैं जिन्हें द्विभाषी जारी करना अनिवार्य है। राजभाषा नियम 5 जिसके अनुसार हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर अनिवार्य रूप से हिंदी में ही दिए जाने अपेक्षित हैं।

7 बिंदु सं. 6 में अद्यतन तिमाही प्रगति रिपोर्ट में दी गई जानकारी ही भरनी होती है। जो क क्षेत्र के कार्यालयों के लिए क से क में पत्राचार 100 प्रतिशत, क से ख क्षेत्र में पत्राचार 100 प्रतिशत तथा क से ग क्षेत्र में पत्राचार 65 प्रतिशत है। भारत सरकार के क क्षेत्र में आने वाले सभी कार्यालयों को इसी के अनुसार पत्राचार करना चाहिए। इसी प्रकार वार्षिक कार्यक्रम, 2023–24 में ख एवं ग क्षेत्र में स्थित कार्यालयों के लिए भी पत्राचार का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

8 बिंदु सं. 7 में भी सूचना अद्यतन तिमाही प्रगति रिपोर्ट में से ही दी जानी चाहिए।

9 निरीक्षण प्रोफार्मा के इस बिंदु में कार्यालय में उपलब्ध कंप्यूटरों की संख्या व इन कंप्यूटरों में हिंदी में कार्य करने के लिए यूनिकोड सुविधा उपलब्ध है या नहीं, यह जानकारी दी जानी चाहिए। साथ ही इन कंप्यूटरों पर हिंदी में काम करने वाले अधिकारियों की संख्या भी जानी चाहिए।

10 निरीक्षण प्रोफार्मा के अगले बिंदु अर्थात् बिंदु सं. 8 में कार्यालय में प्रयोग में लाई जा रही रबड़ की मोहरें, नामपट्ट, सूचना पट्ट इत्यादि की संख्या तथा क्या वे सभी द्विभाषी है। यहां यह जानकारी देना आवश्यक है कि प्रत्येक विभाग/अनुभाग में ये सभी मदें द्विभाषी'' हैं अथवा नहीं।

11 अब चूंकि निगम में ई–ऑफिस है एवं अब फिजीकल फाइलें नहीं हैं। अतः इस बात को ध्यान में रखते हुए ई–ऑफिस में फाइलों के नाम द्विभाषी रखे जाने अनिवार्य हैं।

12 हालांकि निगम में अब ई–ऑफिस है अतः अब रजिस्टरों की संख्या कम हो गई है। फिर भी वर्तमान में जितने भी रजिस्टर प्रयोग में आ रहे हैं उन सभी की संख्या इस कॉलम में दी जानी चाहिए तथा यह भी बताना आवश्यक है कि क्या इन रजिस्टरों में प्रविष्टियां हिंदी अथवा द्विभाषी की जा रही हैं।

13 इस प्रोफार्मा के बिंदु सं. 11 में कार्यालय में प्रयोग में आ रहे मानक मसौदे, मानक प्रपत्र, कोड और मेनुअल की संख्या एवं क्या वे अंग्रेजी, हिंदी एवं द्विभाषी हैं। यहां यह भी बताना है कि इसमें सभी दस्तावेज द्विभाषी ही आने चाहिए।

14 निरीक्षण प्रोफार्मा में जानकारी देते समय यह ध्यान रखा जाए कि बिंदु सं. 12 स्थापना अनुभाग एवं 13 व 14 प्रोमोशन एवं एल एंड डी अनुभागों से संबंधित है जो कार्मिक विभाग के अन्तर्गत आते हैं।

15 निरीक्षण प्रोफार्मा के बिंदु सं. 15 तिमाही राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के आयोजन से संबंधित है जिसमें तिथि भी देनी आवश्यक है तथा कार्यवृत्त भी संलग्न करने हैं।

16 प्रोफार्मा के बिंदु सं. 16 में राजभाषा के कार्यान्वयन हेतु किए गए विशेष प्रयास बताने हैं ओर बिंदु सं. 17 में प्रभावी कार्यान्वयन में आने वाली कठिनाईयां भी बतानी हैं।

अंत में विभागाध्यक्ष का नाम मुहर सहित, पदनाम, फोन न. व ई–मेल दिया जाना अपेक्षित हैं

सभी कार्यालयों में राजभाषा निरीक्षण किया जाना अपेक्षित होता है ताकि राजभाषा कार्यान्वयन सुगम और सहज रूप से सुनिश्चित किया जा सके।

साइबर अपराध – चुनौती एवं समाधान

वरूण भारद्वाज*

वर्तमान समय में इन्टरनेट के माध्यम से लगभग सभी कार्य सम्पादित किये जा रहे है। इन्टरनेट की सहायता से कठिन से कठिन कार्य कुछ ही समय में आसानी से हो जाते है, यहाँ तक कि लोग पूर्ण रूप से इसके ऊपर निर्भर हो चुके हैं। इस तकनीकी युग में इंटरनेट तथा सोशल मीडिया जैसे – फ़ेसबुक, इंस्टाग्राम मेसेंजर एवं व्हाट्सप्प आदि जैसे प्लैटफ़ार्म के बारे में लगभग सभी लोगों को जानकारी है, परन्तु इन एप्लिकेशनों के माध्यम से होने वाले साइबर अपराध (Cyber Crime) क्या है, इसकी जानकारी अभी भी सभी लोगों को नहीं है परिणामस्वरूप साइबर अपराध के शिकार होने वाले लोगों की संख्या दिन–1प्रतिदिन बढ़ रही है।

साइबर अपराध का इतिहास

1981 में, इयान मर्फी, जिन्हें कैप्टन जैप के नाम से भी जाना जाता है, साइबर अपराध के लिए दोषी ठहराए जाने वाले पहले व्यक्ति थे। उन्होंने अमेरिकी टेलीफोन कंपनी की आंतरिक घड़ी को हैक कर लिया था ताकि उपयोगकर्ताओं को व्यस्त समय के दौरान मुफ्त कॉल करने की अनुमति मिल सके।

साइबर अपराध के पीछे कारण

- सामाजिक–राजनीतिक उद्देश्य के लिए संदेश फैलाने के लिए वेबसाइटों को हैक करना।
- देश की महत्वपूर्ण संपत्ति पर हमला करना।
- बैंकों और वित्तीय संस्थानों में हैकिंग करके पैसा कमाना।
- लोगों की निजता पर हमला करके ब्लैकमेल कर पैसा कमाना
- महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए व्यावसायिक डेटा सर्वर तक पहुँच प्राप्त करना।
- योजनाओं और खुफिया जानकारी प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान और सैन्य डेटा सर्वर तक पहुंच प्राप्त करना।

साइबर अपराध और इसके उदाहरण

साइबर अपराध, जिसे वर्तमान में मोबाईल एवं कंप्यूटर अपराध कहा जाता है, गैरकानूनी गतिविधियों के लिए कंप्यूटर और मोबाईल आदि इसी तरह के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का उपयोग करता है। धोखाधड़ी करना, चाइल्ड पोर्नोग्राफी की तस्करी, बैंकिंग धोखाधड़ी, सेक्सर्टोशन बौद्धिक संपदा अधिकारों का दुरुपयोग, पहचान की चोरी और गोपनीयता पर हमला साइबर अपराधों के कुछ प्रमुख उदाहरण हैं। साइबर अपराध के प्रमुख उदाहरण का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है –

हैकिंग – धोखाधड़ी या अनैतिक तरीकों से आंकड़ों तक पहुंच को हैकिंग कहा जाता है। यह साइबर अपराध का अधिकतम नहीं असामान्य स्थान है जिसे अधिकांश लोग जानते हैं।

साइबरबुलिंग – साइबरबुलिंग साइबर अपराध का एक रूप है जो डिजिटल मोड के उपयोग के माध्यम से डराने, परेशान करने, बदनाम करने या बौद्धिक गिरावट के हर दूसरे प्रकार का कार्य करता है जिसमें सभी सोशल मीडिया शामिल हैं।

*सहायक प्रबंधक (राजभाषा एवं क्रय), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

साइबर आतंकवाद – साइबर आतंकवाद किसी व्यक्ति, लोगों की एजेंसियों या किसी भी सरकार की दिशा में किसी भी प्रकार की गंभीर क्षति या जबरन वसूली करने के कारण के लिए समर्पित है।

विशिंग – लोगों को बैंक खाता संख्या और क्रेडिट कार्ड नंबर जैसी व्यक्तिगत जानकारी प्रदान करने के लिए राजी करने के लिए फोन कॉल करना या ध्वनि संदेश छोड़ना जो विश्वसनीय फर्मों के प्रतीत होते हैं। उदाहरण के लिए– "बहुत से लोग जो तकनीक–प्रेमी नहीं हैं वे विशिंग के शिकार हो जाते हैं।"

सरकार द्वारा साइबर अपराध सुरक्षा में उठाये गए कदम

- साइबर स्वच्छता केंद्र इसे 2017 में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं को वायरस और स्पाइवेयर को हटाकर अपने कंप्यूटर और उपकरणों को साफ करने में मदद करने के लिए लॉन्च किया गया था।
- राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा समन्वय केंद्र – इसकी स्थापना 2017 में हुई थी। इसका मिशन इंटरनेट ट्रैफ़िक और संचार मेटाडेटा (जो प्रत्येक बातचीत के अंदर छिपी जानकारी के छोटे टुकड़े हैं) को स्कैन करके वास्तविक समय के साइबर खतरों का पता लगाना है।
- साइबर सुरक्षित भारत पहल – साइबर अपराध के बारे में जागरूकता बढ़ाने और सुरक्षा उपायों को लागू करने के लिए सभी सरकारी एजेंसियों में मुख्य सूचना सुरक्षा अधिकारियों (CISOs) और फ्रंटलाइन आईटी कर्मियों की क्षमता बढ़ाने के लिए 2018 में शुरू किया गया था।
- साइबर अपराध रोकने के क्रम में 4 अक्टूबर, 2022 को इंटरपोल, एफबीआई, रॉयल कैनेडियन माउंटेन पुलिस और ऑस्ट्रेलियाई संघीय एजेंसी द्वारा प्रदान किए गए इनपुट के आधार पर केन्द्रीय जांच अन्वेषण ब्यूरो ने साइबर–सक्षम अपराध नेटवर्क के खिलाफ 'ऑपरेशन चक्र' शुरू किया। 'ऑपरेशन चक्र' के तहत सीबीआई ने वित्तीय अपराधों में शामिल साइबर अपराधियों के खिलाफ 105 स्थानों पर छापेमारी की। यह तलाशी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के पुलिस बलों के सहयोग से की गई।
- साइबर अपराध की प्रभावी रोकथाम के लिए भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल www.cybercrime.gov.in लॉन्च किया है इसके साथ साइबर अपराध रोकने के लिए एक राष्ट्रीय हेल्पलाइन नंबर 1930 जारी किया है। यदि कोई व्यक्ति साइबर अपराध का शिकार होता है तो उक्त पोर्टल या हेल्पलाइन के माध्यम से अपनी शिकायत तुरंत दर्ज करवा सकता है।

साइबर अपराधों को रोकने के लिए विभिन्न निवारक उपाय –

- वायरस की समस्या से बचाव के लिए नवीनतम एंटी–वायरस को नियमित रूप से इंस्टॉल/अपडेट करते रहें।
- अपने मोबाइल फोन को सार्वजनिक स्थानों जैसे मोबाइल चार्जिंग स्टेशन, यूएसबी पावर स्टेशन आदि पर चार्ज करने से बचें, क्योंकि हैकर्स मोबाइल फोन से आपका डेटा चुरा सकते हैं या आपके फोन के अंदर मैलवेयर इंस्टॉल कर सकते हैं।
- हमेशा दो अलग–अलग ई–मेल अकाउंट बनाएं। एक उन लोगों के साथ संवाद करने के लिए जिन पर आप भरोसा करते हैं और अपने वित्तीय लेनदेन के लिए। सोशल नेटवर्किंग साइटों पर पंजीकरण के लिए अलग ई–मेल खाते का उपयोग करें। यह आपके प्राथमिक खाते को ऑनलाइन स्टॉकर्स से सुरक्षित रखेगा।
- किसी अज्ञात स्रोत से प्राप्त क्यूआर कोड को स्कैन न करें। इससे आपके खाते से अनधिकृत रूप से धन निकाला जा सकता है।

- किसी भी अनजान नंबर से वीडियो कॉल स्वीकार न करें। वीडियो कॉल के दौरान कोई अजनबी या दोस्त से प्राप्त किसी भी अनैतिक/अशोभनीय अनुरोध को स्वीकार करने से बचें। ऐसे वीडियो सत्र की स्क्रीन रिकॉर्डिंग का साइबर धोखेबाजों द्वारा ब्लैकमेल या धमकी देने के उद्देश्य से दुरुपयोग किया जा सकता है।
- याद रखें कि इंटरनेट पर मिलने वाली चीजें/सामग्री बहुत कम ही निःशुल्क होती हैं। "Free" screensavers आदि में सामान्यतया malware होता है। इसलिए, ऐसे ऑनलाइन फ्री ऑफर से सावधान रहें।
- न्यूनतम 13 वर्णों वाले अक्षरों, संख्याओं और विशेष वर्णों के संयोजन का उपयोग करके लॉगिन के लिए मजबूत पासवर्ड बनाएं।
- सोशल मीडिया पर अजनबियों से फ्रेंड रिक्वेस्ट स्वीकार करते समय सावधान रहें। यह बाद में नुकसान पहुंचाने वाला जाल हो सकता है।
- सोशल मीडिया पर अपनी छुट्टियों, यात्रा की योजनाओं आदि का खुलासा न करें। आपराधिक प्रकृति के लोग इन सूचनाओं का चोरी आदि करने के अवसर के रूप में फायदा उठा सकते है।
- ऐप आधारित वित्त कंपनी से ऋण लेने से सावधान रहें जो आरबीआई द्वारा अनुमोदित नहीं हो सकती है। ये ऐप्स आपका गोपनीय डेटा चुरा सकते हैं और ईएमआई डिफॉल्ट की स्थिति में ऑनलाइन धमकाने का काम भी कर सकते हैं।
- ब्राउज़र को कभी भी अपना उपयोगकर्ता नाम/पासवर्ड संग्रहीत करने की अनुमति न दें, खासकर यदि आप साझा कंप्यूटर डिवाइस का उपयोग करते हैं। साथ ही अपनी गोपनीयता की सुरक्षा के लिए प्रत्येक उपयोग सत्र के बाद ब्राउज़र से ब्रॉउसिंग हिस्ट्री क्लेयर करने की आदत बनाएं।
- बैंक का कस्टमर केयर नंबर क्रेडिट/डेबिट कार्ड के पीछे लिखा होता हैं, बैंकिंग/वित्तीय साइबर अपराध होने पर उससे सहायता प्राप्त करें। कस्टमर केयर

नंबर को गूगल के माध्यम से न लेकर सम्बन्धित कंपनी/बैंक के वेबसाइट से ही लें।

- कभी भी अपने नेट बैंकिंग पासवर्ड, एटीएम या फोन बैंकिंग पिन, सीवीवी नंबर, समाप्ति तिथि के बारे में किसी को न बताएं और अज्ञात मेल या विवरण पूछने वाले कॉल का जवाब नहीं दें। इन्हें साझा करने से अनधिकृत लेनदेन हो सकता है।
- किसी भी अनजान व्यक्ति को बैंकिंग जानकारी जैसे ओटीपी क्रेडिट/डेबिट कार्ड नंबर, सीवीवी नंबर इत्यादि न दें। अनजान व्यक्ति के मिस्ड कॉल पर कॉल बैक न करें, न ही कोई जानकारी दें। किसी अनजान व्यक्ति द्वारा भेजे गये अज्ञात लिंक को कंप्यूटर अथवा मोबाइल पर क्लिक न करें।

बेटियां

प्रीति पटवाल*

आज हमारे ऑगन में, वो खुशियां लेकर आई हं
कहते हैं बेटी जिसे माता–पिता की परछाई है
उसके घर में आने से, मैं खुशी से झूम उठा
उसके हँसने–रोने की किलकारी से, आज मेरा घर गूंज उठा
कल घुटनों के बल चलने वाली आज दो पैरों से नाच रही
कुछ ही समय बीता था, आज देखो स्कूल के लिए भाग रही
समय दौड रहा तेजी से, ऐसा मुझको एहसास हुआ
जब बेटी के रिश्ते को लडकें वालो का स्वागत हुआ
आज खुशी से या कहूँ दुख में, आखें मेरी भर आई है
इतने सालों पाला मैंने जिसको, आज उसकी विदाई है
घर ऑगन को छोड मेरा, उसका घर सजाएगी
माता–पिता की परछाई है बिटिया, वो हमारा मान बढ़ाएगी
डर है मन में मेरे, क्या उसको वो सारी खुशियां मिल पाएगी
जे कहती थी एक बार वो, सारी चीजें मैंने उसे दिलाई थी
जाते–जाते उसकी आखों में भी एक सवाल था.....
इतने सालों से मैंने जो, इस ऑगन को सजाया है
क्या लड़की होना गलती थी मेरी, जो घर अब हुआ पराया है
लगता है ऐसे जैसे वो, कल ही मेरे ऑगन आई थी
याद करके फिर वो पल, देखे ऑखे मेरी भर आई हैं।

*पुत्री श्रीमती लक्ष्मी बिष्ट, हैल्पर
राजभाषा अनुभाग, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

उत्तराखंड में कुमाऊँ के मुख्य दर्शनीय स्थल

डॉ. केदार पलड़िया*

उत्तराखंड उत्तर भारत में स्थित एक राज्य है जिसका निर्माण सन 2000 को कई वर्षों के आन्दोलन के पश्चात् भारत गणराज्य के सत्ताईस वें राज्य के रूप में किया गया था। इस राज्य की सीमाएँ उत्तर में तिब्बत और पूर्व में नेपाल से लगी हैं। पश्चिम में हिमाचल प्रदेश और दक्षिण में उत्तर प्रदेश इसकी सीमा से लगे राज्य हैं। सन् 2000 से पूर्व यह उत्तर प्रदेश का एक भाग था।

हिन्दी और संस्कृत में उत्तराखण्ड का अर्थ उत्तरी क्षेत्र या भाग होता है। राज्य में हिन्दू धर्म की पवित्रतम और भारत की सबसे बड़ी नदियों गंगा और यमुना के उद्गम स्थल क्रमशः गंगोत्री और यमुनोत्री तथा इनके तटों पर बसे वैदिक संस्कृति के कई महत्त्वपूर्ण तीर्थस्थान हैं। उत्तराखंड उत्तर भारत की देवभूमि है, जहाँ देवों का निवास स्थान है।

उत्तराखंड में दो मंडल हैं – कुमाऊँ और गढ़वाल मंडल। कुमाऊँ मंडल में छः जिले हैं और गढ़वाल मंडल में सात जिले हैं। इस प्रकार उत्तराखंड में कुल तेरह जिले हैं। कुमाऊँ मंडल के छः जिले उधमसिंह नगर, नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़, चम्पावत और बागेश्वर अपने अपने दर्शनीय स्थलों के कारण अपनी अलग पहचान बनाए हुए है।

1. **जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क** : विश्व प्रसिद्द जिम कॉर्बेट नैनीताल जिले के रामनगर के पास स्थित है। इसका नाम जिम कॉर्बेट के नाम पर रखा गया है, क्योंकि उन्होंने ही इसकी स्थापना की थी। बाघ परियोजना के तहत आने वाला यह पहला पार्क था। कॉर्बेट पार्क में ट्रेवल एजेंसियों द्वारा सैलानियों को घुमाने का कार्य किया जाता है। यहाँ बाघ, हाथी. भालू, सूअर, चीतल, सांभर, नीलगाय, घुरड़ आदि अधिक संख्या में मिलते हैं। यहाँ अजगर और सांप की कई प्रजातियाँ भी निवास करती हैं।

2. **कौसानी**: बागेश्वर जिले में स्थित "कौसानी" (कोसी नदी और गोमती नदी के बीच में स्थित) अल्मोड़ा जिले से 53 किलोमीटर दूर है?। यह स्थान हिमालय की सुन्दरता के दर्शन कराता पिंग्नाथ चोटी पर बसा है "नंदा देवी, त्रिशूल और पंचाचूली पर्वत के यहाँ से बड़े मनोरम दीदार होते हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कौसानी को "भारत का स्विट्ज़रलैंड" कहा था। यह पर्वतीय शहर चीड़ के घने पेड़ो के बीच एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित है एवम् इस स्थान से सोमेश्वर, गरुड़ आदि सुंदर घाटियों का अद्भुत नज़ारा देखने को मिलता है। इस स्थान में एक चाय का बागान भी है, जो की कौसानी से लगभग 6 किलोमीटर की दूरी पर बैजनाथ की तरफ है। इस क्षेत्र की चाय बहुत ही खुशबूदार और स्वादिष्ट होती है।

3. **मुक्तेश्वर** – मुक्तेश्वर उत्तराखंड के नैनीताल जिले में एक बेहद ही शानदार जगह है। ये हिल स्टेशन 2171 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। ये जगह नैनीताल से 51 किमी, हल्द्वानी से 72 किमी दूर है। मौसम साफ होने पर मुक्तेश्वर में हिमालय की पर्वत चोटियों के पीछे से उगते सूरज का सुंदर नजारा देखा जा सकता है और नीलकंठ, नंदादेवी और त्रिशूल आदि पर्वतश्रेणियां भी देखी जा सकती हैं। यहां इंडियन वेटरनरी रिसर्च इंस्टीट्यूट है, जहां जानवरों पर रिसर्च की जाती है। ये इंस्टीट्यूट सन् 1893 में बनवाया गया था। यहां

*प्रतिनिधि, हल्द्वानी सहकारी क्रय–विकास समिति लि. आजादनगर, हल्द्वानी, जिला नैनीताल

एक म्यूजियम और लाइब्रेरी भी है जहां जानवरों पर रिसर्च से संबंधित पुराने समय का समान और किताबें सुरक्षित रखी गई हैं।

4. **अल्मोड़ा** : अल्मोड़ा नगर अपनी ऐतिहासिक विरासत के साथ साथ प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। नगर में एक ओर चन्दकालीन किले तथा मंदिर हैं, तो वहीं दूसरी ओर ब्रिटिशकालीन चर्च तथा पिकनिक स्थल भी मौजूद हैं। अल्मोड़ा अपनी सांस्कृतिक धरोहर (ऐपण) के लिए बेहद प्रसिद्द है। इसीलिए अल्मोड़ा को "सांस्कृतिक नगरी" भी कहा जाता है। लाला बाजार यहाँ का प्रसिद्द बाजार है और बाल मिठाई व सिंघोड़ी यहाँ की प्रसिद्द मिठाई है। अल्मोड़ा से लगभग पांच किमी दूर न्याय के देवता गोल्जू भगवान का मंदिर है। लोग यहाँ कोर्ट कचहरी से सम्बंधित किसी भी वाद के न्याय के लिए अपनी अर्जी लगते हैं, जिसे गोल्जू भगवान के चरणों में रखकर न्याय मांगते हैं। केस जीतने के बाद लोग यहाँ घंटी चढाते हैं। यहाँ ताँबे के बर्तन का व्यापर भी होता है, इसीलिए अल्मोड़ा को एक और नाम "ताम्र नगरी" से भी जाना जाता है।

5. **मुनस्यारी** : मुनस्यारी उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले में स्थित एक छोटा सा हिल स्टेशन है, जिसकी प्राकृतिक सुंदरता देखते ही बनती है। ऊंचे पहाड़ और चोटियों के सुंदर नजारों के कारण इसे मिनी कश्मीर कहा जाता है। यह नेपाल और तिब्बत की सीमाओं के समीप है। मुनस्यारी चारों ओर से पर्वतों से घिरा हुआ है। मुनस्यारी के सामने विशाल हिमालय पर्वत श्रृंखला का विश्व प्रसिद्ध पंचचूली पर्वत (हिमालय की पांच चोटियां) जिसे किवदंतियो के अनुसार पांडवों के स्वर्गारोहण का प्रतीक माना जाता है। बिर्थी वाटरफॉल यहाँ का फेमस पिकनिक स्पॉट है. यहाँ झरने के साथ प्रकृति के खूबसूरत नजारों का भी आनंद लिया जा सकता है। जाड़ों में यहाँ भारी हिमपात होता है।

6. **रानीखेत** : उत्तराखंड राज्य के अल्मोड़ा जिले में स्थित देवदार और बलूत के वृक्षों से घिरा रानीखेत प्रकृति प्रेमियों का स्वर्ग है। यहाँ की शांत जलवायु और कण–कण में बिखरा प्रकृति का अनुपम सौंदर्य देखकर पर्यटक स्वयं को प्रकृति के निकट पाता है। रानीखेत गोल्फ कोर्स रानीखेत के खूबसूरत पर्यटक स्थलों में से एक है। यह मुख्य नगर से 5 किमी की दूरी पर है। 9 गड्ढों की विशेषता वाला रानीखेत गोल्फ कोर्स, एशिया के बेस्ट गोल्फ कोर्सों में से एक है। रानीखेत को 'रानी का मैदान' के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ कई मंदिर भी घूमने लायक हैं, जिनमें से हैडाखान मंदिर बहुत प्रसिद्द है।

7. **नैनीताल** : नैनीताल हिमालय की कुमाऊँ पहाड़ियों की तलहटी में स्थित है। समुद्र तल से नैनीताल की कुल ऊंचाई लगभग 1938 मीटर (6358 फुट) है। नैनीताल का आकर्षण यहाँ की झीलें हैं, ये यहाँ के पारिस्थितिकीय तंत्र का एक हिस्सा हैं। इन सुंदर झीलों में नौकायन का आनंद लेने के लिए भारत से ही नहीं वरन लाखों विदेशी पर्यटक भी यहाँ आते हैं। पर्यावरण की दृष्टि से नैनीताल की झीलों का विशेष महत्व है। इन झीलों के कारण ही नैनीताल का विश्व के मानचित्र में अपना अलग स्थान है। झीलें नैनीताल की सुन्दरता में चार चाँद लगा देती हैं। झीलें प्रकृति का सौन्दर्य व वरदान हैं।

'नैनी' शब्द का अर्थ है आँखें और 'ताल' का अर्थ है झील। इनमें से सबसे प्रमुख झील नैनी झील है, जिसके नाम पर इस जगह का नाम नैनीताल पड़ा है। नैनी झील के बारे में माना जाता है कि जब शिव सती की मृत देह को लेकर कैलाश पर्वत जा रहे थे, तब जहां–जहां उनके शरीर के अंग गिरे वहां–वहां शक्तिपीठों की स्थापना हुई। नैनी झील के स्थान पर देवी सती की आँख गिरी थी। इसी से प्रेरित होकर इस मंदिर की स्थापना की गई है। माँ नैना देवी की असीम कृपा हमेशा अपने भक्तों पर रहती है। हर वर्ष माँ नैना देवी का मेला नैनीताल में आयोजित किया जाता है।

इसके अतिरिक्त चायना पीक, टिफिन टॉप, किलबरी यहाँ के प्रसिद्द स्थान हैं।

कर्मों का खेल

डॉ0 विपुल जैन*

अस्पताल में कोरोना पेशेंट का एक केस आया। मरीज बेहद सीरियस था।

एक मरीज डिस्चार्ज हुआ उसके स्थान पर वह एडमिट किया गया, अस्पताल के मालिक डॉक्टर शर्मा जी ने तत्काल खुद जाकर आईसीयू में केस की जांच की, आक्सीजन लगवाई जब डॉक्टर साहब बाहर आये अपने स्टाफ को कहा कि इस व्यक्ति को किसी प्रकार की कमी या तकलीफ ना हो और उससे एडवांस पैसे भी न लें।

मरीज तकरीबन 15 दिन तक अस्पताल में रहा। जब वह बिल्कुल ठीक हो गया, रिपोर्ट नेगेटिव आई उसको डिस्चार्ज करने का दिन आया तो उस मरीज का तकरीबन ढाई लाख रुपये का बिल अस्पताल के मालिक और डॉक्टर की टेबल पर आया।

डॉक्टर ने अपने अकाउंट मैनेजर को बुला करके कहा ... 'इस व्यक्ति से एक पैसा भी नहीं लेना है। ऐसा करो तुम उस मरीज को लेकर मेरे चेंबर में ले आओ।'

मरीज व्हील चेयर पर चेंबर में लाया गया। डॉक्टर ने मरीज से पूछा – 'भाई ! क्या आप मुझे पहचानते हो?'

मरीज ने कहा लगता तो है कि 'मैंने आपको कहीं देखा है।'

डॉक्टर ने कहा .याद करो, नवनीत दो साल पहले शाम के 6–7 बजे ग्रेटर नोएडा के आगे जंगल में तुमने एक गाड़ी ठीक की थी। उस रोज मैं परिवार सहित वृन्दावन से बांके बिहारी जी का दर्शन करके लौट रहा था कि अचानक कार में से धुआं निकलने लगा और गाड़ी बंद हो गई।

कार एक तरफ खड़ी कर मैंने चालू करने की कोशिश की, परंतु कार चालू नहीं हुई। अंधेरा थोड़ा–थोड़ा घिरने लगा था। चारों और सुनसान जंगल था। परिवार के हर सदस्य के चेहरे पर चिंता और भय की लकीरें दिखने लगी थी और सब ठाकुर जी से प्रार्थना कर रहे थे कि कोई मदद मिल जाए।

थोड़ी ही देर में कृपा कर दी मेरे बांके बिहारी ने या यूं कहूं चमत्कार कर दिया। बाइक के ऊपर तुम आते दिखाई पड़े। हम सब ने दया की नजर से हाथ ऊंचा करके तुमको रुकने का इशारा किया।

तुमने बाईक खड़ी कर के हमारी परेशानी का कारण पूछा। तुमने कार का बोनट खोलकर चेक किया और कुछ ही क्षणों में कार चालू कर दी।

हम सबके चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई। हम सभी को ऐसा लगा कि जैसे भगवान ने आपको हमारे पास भेजा है क्योंकि उस सुनसान जंगल में हम में से किसी के भी फोन में सिग्नल नहीं आ रहे थे या क्या कारण था किसी का नम्बर नही मिल रहा था ना ही नेट चल रहा था, बच्चे साथ थे उनकी चिंता ज्यादा थी। तुमने मुझे बताया था कि तुम यहीं जेवर के पास गैराज चलाते हो।

मैंने आपका आभार जताते हुए कहा था कि रुपए पास होते हुए भी ऐसी मुश्किल समय में मदद नहीं मिलती।

तुमने ऐसे कठिन समय में हमारी मदद की, इस मदद की कोई कीमत नहीं है, यह अमूल्य है परंतु फिर भी मैं पूछना चाहता हूँ कि आपको कितने पैसे दूं ?

*प्रतिनिधि, डेरावाल फार्मिंग कोआपरेटिव सोसाइटी लि0, प्रेमपुरी, मुजफ्फरनगर (उ0प्र0)

उस समय तुमने मेरे आगे हाथ जोड़कर जो शब्द कहे थे, वह शब्द मेरे जीवन की प्रेरणा बन गये हैं तुमने कहा था कि 'मेरा नियम और सिद्धांत है कि मैं मुश्किल में पड़े व्यक्ति की मदद के बदले कभी कुछ नहीं लेता।'

मेरी इस मजदूरी का हिसाब भगवान रखते हैं। उसी दिन मैंने सोचा कि जब एक सामान्य आय का व्यक्ति इस प्रकार के उच्च विचार रख सकता है, और उनका संकल्प पूर्वक पालन कर सकता है, तो मैं क्यों नहीं कर सकता और मैंने भी अपने जीवन में यही संकल्प ले लिया है। दो साल हो गए है, मुझे कभी कोई कमी नहीं पड़ी, अपेक्षाकृत पहले से भी अधिक मिल रहा है।

यह अस्पताल मेरा है। तुम यहां मेरे मेहमान हो और तुम्हारे ही बताए हुए नियम के अनुसार मैं तुमसे कुछ भी नहीं ले सकता।

ये तो भगवान् की कृपा है कि उसने मुझे ऐसी प्रेरणा देने वाले व्यक्ति की सेवा करने का मौका मुझे दिया। ऊपर वाले ने तुम्हारी मजदूरी का हिसाब रखा और वो हिसाब आज उसने चुका दिया। मेरी मजदूरी का हिसाब भी ऊपर वाला रखेगा और कभी जब मुझे जरूरत होगी, वो जरूर चुका देगा।

डॉक्टर ने मरीज से कहा ....'तुम आराम से घर जाओ, और कभी भी कोई तकलीफ हो तो बिना संकोच के मेरे पास आ सकते हो।' मरीज ने जाते हुए चेंबर में रखी भगवान् कृष्ण की तस्वीर के सामने हाथ जोड़कर कहा कि..'हे प्रभु ! आपने आज मेरे कर्म का पूरा हिसाब ब्याज सहित चुका दिया।'

सदैव याद रखें कि आपके द्वारा किये गए कर्म आपके पास लौट कर आते है । और वो भी ब्याज समेत। जितना हो सके है लोगों की मदद करें । आपका हिसाब ब्याज समेत वापस आएगा..!!

"अच्छा करो या बुरा, जो जाता है वही वापस आता है।"

रचनाकार कृपया ध्यान दें

1. कृपया पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख सीधे निगमित कार्यालय के राजभाषा अनुभाग के मेलः rajbhasha.cwc@gmail.com पर या डाक द्वारा भेजें।
2. लेख के साथ इस आशय की घोषणा होनी चाहिए कि यह लेख/रचना लेखक की मौलिक रचना है।
3. यदि किसी कारणवश लेख/रचना को पत्रिका में शामिल करना संभव न हुआ तो उसे लौटाया नहीं जाएगा।
4. रचनाएं भेजते समय कृपया इस बात का ख्याल रखें कि वह स्तरीय हों तथा समाज, साहित्य एवं संस्कृति से जुड़ी हुई हों।
5. भंडारण से संबंधित रचनाओं को प्राथमिकता दी जाएगी। प्रकाशित रचनाओं पर पुरस्कार/मानदेय प्रदान किया जाता है।
6. निगम के सेवानिवृत्त अधिकारी/कर्मचारी भी अपनी रचनाएं प्रकाशनार्थ भेज सकते हैं। यदि वे पत्रिका पढ़ने में रुचि रखते हों तो अपना पता इस कार्यालय को भेज दें, ताकि उन्हें पत्रिका भेजी जा सके।
7. आप अपनी रचनाएं निम्नलिखित पते पर भेज सकते हैं :–

प्रबंधक (राजभाषा)
केंद्रीय भंडारण निगम, निगमित कार्यालय,
4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया, अगस्त क्रान्ति मार्ग, हौजखास, नई दिल्ली–110016

मैंने सीखा खुद को समझाना

मीनाक्षी गम्भीर*

मैंने सीखा खुद को समझाना
ना चाहते हुए भी मुस्कुराना
राहों में बस यूँ ही चलते जाना
जो हाथ में हैं ही नहीं मेरे उसके लिये क्यों अपने दिल को दुखाना
इसीलिए, मैंने सीखा खुद को समझाना।

मन में आया आंखें बंद करके जो सो मैं जाऊं
क्या भरोसा है कि बंद जो हुई हैं आंखें मेरी
उन्हें अगले ही पल शायद खोल भी ना पाऊं
फिर क्यों मैं हर बार बस आगे की ही सोच में पड़ जाती हूँ
करके ऐसा खुद मैं अपने आज को भी उदास कर बैठती हूँ
जब हाथ में नहीं है मेरे कुछ
तो क्यों बेकार में ही दिल है दुखाना
इसीलिए, मैंने सीखा खुद को समझाना।

अक्सर गलतियां हज़ार मैं करती हूँ
जाने कितनी बार मैं गिरती और संभलती हूँ
फिर मन में डर ये बैठने लग जाता है
कहीं दोबारा गिर ना जाऊं मैं
ये सोच के कदम आगे बढ़ाने में मेरा मन घबराता हैं
पर इसी सोच से मैं खुद को और कमजोर करती जाती हूं
जब आगे बढ़ते जाना मेरी खुदी है तो क्यों बेकार में दिल को घबराती हूँ
इसीलिए, मैंने सीखा खुद को समझाना।

समझाते–समझाते अक्सर टूट भी मैं जाती थी
हालातों के आगे बेबस–सी नज़र आती थी
ज़ोर ज़रा भी नही चलता था मेरा हालातों पर
हालातों को न देख पाने की मजबूरी का डर मुझे बहुत सताता था
यूं ही डरने–डराने के खेल में अक़्सर मैं हार जाती थी
आंखें मूंद करके बैठे रहने के अलावा मुझे और कुछ समझ नहीं आता था
पर आंखें मूंद लेने से सच्चाई मैं बदल नहीं पाती थी
जब हाथ में नहीं है मेरे कुछ, तो क्यों बेकार में दिल है घबराता
इसीलिए, मैंने सीखा खुद को समझाना।

समझ में आने में ये सार ज़िन्दगी का कुछ समय मुझे ज़रूर लगा
इतने में जाने कितने लोगों की किस्मत का रुख बदल गया
मैं भी सोच के हैरानी में थी पड़ गयी
जो न सोचा होता इतना तो शायद
मैंने भी अपनी ज़िंदगी के रुख को बदल दिया होता
पर इस बार मैं सोच कर नहीं कुछ करके दिखाऊंगी
मन में डर न लेके, दिल मे ना सफल हो पाने की घबराहट को मैं भी दूर भगाऊंगी
अब तो बस बिना सोचे अपनी राहों में मैं चलती जाऊंगी
चलना अब राहों में ऐसे कि कोई डर साथ नहीं होगा
मेरा बढ़ता हर कदम मेरी मंज़िल के करीब होगा
हर उस कदम में आत्मविश्वास और निर्भीकता होगी
क्योंकि अब मैंने सीखा है खुद को समझाना।

अब मैंने सीखा खुद को समझाना।

*प्रधान निजी सचिव, निदेशक (कार्मिक) कार्यालय, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

केंद्रीय भंडारण निगम में 36 वर्षों का अतुलनीय, अविस्मरणीय, यादगार सफर

डॉ. मीना राजपूत
वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
सेवा–निवृत्ति – 31 अगस्त, 2023

- डॉ. मीना राजपूत ने निगम में दिनांक 31.08.1987 को ज्वाइन किया। डॉ. मीना राजपूत ने अपने 36 वर्षों के अविस्मरणीय कार्यकाल में निगम में अपनी पहचान एक कर्मठ राजभाषा अधिकारी के रूप में स्थापित की।
- आपको 14 क्षेत्रीय प्रबंधकों के कार्यकाल में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ।
- आपने राजभाषा कार्यान्वयन हेतु सरल एवं सुगम प्रणाली को अपनाकर एवं वरिष्ठ अधिकारियों के उचित दिशा–निर्देशन में कार्य–नीति का निर्धारण करते हुए क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई में हिंदी प्रशिक्षण, हिंदी कार्यशाला एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से राजभाषा कार्यान्वयन हेतु कई सुधारात्मक कार्य किए।
- आपके सेवाकाल के दौरान संसदीय राजभाषा समिति द्वारा किए जाने वाले 8 निरीक्षण बैठकें सफलतापूर्वक संपन्न हुईं।
- आपने कोरोना महामारी के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई एवं अधीनस्थ केंद्रों में वचुर्अल माध्यम से हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करवाने में बड़ी भूमिका निभाई।
- आपने क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई की गृह पत्रिका सहयाद्रि के 10 अंकों का सफल प्रकाशन किया एवं पत्रिका के संस्थापक संपादक की भूमिका निभाई।

- आपने क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई एवं अधीनस्थ केंद्रों के कार्मिकों को लेखन हेतु प्रोत्साहित करने में बड़ी भूमिका निभाई।
- आपने नराकास मुंबई में निगम की सक्रिय भागीदारी को बनाए रखा एवं नराकास की पत्रिका समन्वय के संपादक मंडल के सदस्य के रूप में अपने दायित्वों का बखूबी पालन किया।
- आपके प्रयासों से क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई को उत्कृष्ट राजभाषा कार्य निष्पादन हेतु मंत्रालय एवं नराकास द्वारा पुरस्कृत किया गया।

केंद्रीय भंडारण निगम राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति आपकी लगन, निष्ठा एवं कठिन परिश्रम को नमन करता है और सेवानिवृत्ति के पश्चात् आपके सुखद एवं स्वस्थ्य जीवन की कामना करता है।

*राजभाषा अनुभाग, निगमित कार्यालय के सौजन्य से

सचित्र गतिविधियां

निगमित कार्यालय में योग दिवस का आयोजन

केंद्रीय भंडारण निगम ने निगमित कार्यालय, नई दिल्ली में 9वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस बनाया। इसमें निगम के प्रबंध निदेशक, निदेशकों, अधिकारियों और कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इस दौरान ऊर्जावान जीवन जीने के लिए योग के महत्व और समग्र स्वास्थ्य के प्रति इसके लाभों पर प्रकाश डाला गया।

निगमित कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर निगमित कार्यालय में ध्वजारोहण

केंद्रीय भंडारण निगम के निगमित कार्यालय में 77वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर निगम के प्रबंध निदेशक श्री अमित कुमार सिंह ने सहयोगी निदेशकों श्री अनुज कुमार, निदेशक (वित्त) एवं सुश्री संगीता रामरख्यानी, निदेशक (कार्मिक) तथा अन्य कार्मिकों की गरिमामयी उपस्थिति में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। इस अवसर पर अपने संबोधन में प्रबंध निदेशक ने कहा कि हमें अपने कर्तव्य पथ पर चलते हुए अपने लक्ष्यों को प्राप्त करना है। निगम के निदेशकों ने निगम के समग्र विकास, टीम वर्क तथा राष्ट्र के विकास हेतु सर्वश्रेष्ठ योगदान देने पर बल दिया।

संसदीय राजभाषा की समिति की दूसरी उप-समिति द्वारा अधीनस्थ कार्यालयों का राजभाषा निरीक्षण

क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ

क्षेत्रीय कार्यालय पटना

पुरस्कार और सम्मान

केंद्रीय भंडारण निगम को नेतृत्व में उत्कृष्टता के लिए 10वें राष्ट्रीय पुरस्कार कार्यक्रम में शासन और अनुपालन की श्रेणी में उत्कृष्टता के लिए पुरस्कार मिला और निगम के निदेशक (वित्त) श्री अनुज कुमार को वर्ष के सर्वश्रेष्ठ सीएफओ–पीएसयू सेक्टर की श्रेणी में पुरस्कार प्रदान किया गया।

आजादी का अमृत महोत्सव का 75वां कार्यक्रम

केंद्रीय भंडारण निगम द्वारा आयोजित की गई आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के क्रम में दिनांक 14 अगस्त 2023 को श्रृंखला के 75वें कार्यक्रम के अवसर पर ट्रेजर आर्ट एसोसिएशन ड्रामा ग्रुप के स्थानीय कलाकारों के सहयोग से स्वाधीनता (एक गाथा) की थीम पर मंचीय नाटक का आयोजन किया गया। ड्रामा ग्रुप के कलाकारों ने भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्ष का यथार्थ प्रदर्शन किया। यह हमारे शहीदों की याद में श्रद्धांजलि थी जिन्होंने आजादी के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। नाटक का मुख्य आकर्षण भारत छोड़ो आंदोलन/अगस्त क्रांति आंदोलन था। प्रबंध निदेशक श्री अमित कुमार सिंह, निदेशक (वित्त) श्री अनुज कुमार और निदेशक (कार्मिक) सुश्री संगीता रामरख्यानी ने कलाकारों द्वारा किए गए शानदार प्रदर्शन की सराहना की।

लॉजिस्टिक इन्फ्रास्ट्रक्चर पर आयोजित 17वें वार्षिक सम्मेलन में निगम के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा सहभागिता

भंडारण शब्दावली का विमोचन

प्रबंध निदेशक महोदय की अध्यक्षता में दिनांक 30.06.2023 को निगमित कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई जिसमें प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग तथा निगम के संयुक्त प्रयासों से तैयार की गई भंडारण शब्दावली का विमोचन किया गया।

निगम द्वारा किए गए समझौता ज्ञापन

केन्द्रीय भण्डारण निगम ने 13 जुलाई 2023 को खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग, उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय के साथ वित्त वर्ष 2023–24 और वित्त वर्ष 2024–25 के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

20 अप्रैल 2023 को श्री अधिप नाथ पाल चौधरी, निदेशक (सेवा व्यवसाय), बामर लॉरी एंड कंपनी लिमिटेड और श्री अनुज कुमार, निदेशक (वित्त), एवं सुश्री संगीता रामरख्यानी, निदेशक (कार्मिक), श्री राजीव कुमार बंसल, समूह महाप्रबंधक (वाणिज्यिक) केंद्रीय भंडारण निगम की उपस्थिति में कोल्ड चेन लॉजिस्टिक्स, सामान्य वेअरहाउसिंग और अन्य सहायक सेवाएं प्रदान करने के लिए केंद्रीय भंडारण निगम के भंडारण/वेअरहाउसिंग स्थान का उपयोग करने के लिए केंद्रीय भंडारण निगम और बामर लॉरी एंड कंपनी लिमिटेड के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

निगम द्वारा प्रथम तिमाही की प्रगति की समीक्षा हेतु क्षेत्रीय प्रबंधक सम्मेलन का आयोजन

ट्रैकिंग अभियान

निगम द्वारा हिडन वैली झील, अरावली हिल्स, फरीदाबाद में ट्रैकिंग अभियान का आयोजन किया गया जिसमें वरिष्ठ प्रबंधन और अन्य अधिकारियों ने इस अविश्वसनीय ट्रैकिंग में उत्साहपूर्वक भाग लिया और स्वच्छता अभियान को प्रोत्साहित करने के लिए आस–पास के क्षेत्र को स्वच्छ बनाने में योगदान दिया।

क्षेत्रीय कार्यालयों में स्वतंत्रता दिवस समारोह की झलकियां

क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ

क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़

क्षेत्रीय कार्यालय कोच्चि

हिंदी दिवस के अवसर पर निगमित कार्यालय में माननीय मंत्री जी के संदेश का वाचन

हिंदी दिवस के अवसर पर निगमित कार्यालय में माननीय मंत्री जी के संदेश का वाचन

हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित विभिन्न गतिविधियां

हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित विभिन्न गतिविधियां

हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित विभिन्न गतिविधियां

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित तृतीय राजभाषा सम्मेलन में निगम की सहभागिता

नराकास (उपक्रम) कोलकाता द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता को राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य-निष्पादन हेतु प्रथम पुरस्कार

राजभाषा हिंदी के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी

- हमारे संविधान के अनुच्छेद 343 में प्रावधान है कि देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी भारत संघ की राजभाषा होगी। सभी शासकीय कार्यों में भारतीय अंकों के अंतरराष्ट्रीय स्वरूप का प्रयोग किया जाएगा।
- संविधान का अनुच्छेद 351 सरकार को निर्देश देता है कि वह हिंदी का प्रचार–प्रसार करें ताकि वह भारतीय संस्कृति के सभी तत्वों को अपने में समाहित कर सामासिक संस्कृति का प्रतिनिधित्व कर सके।
- संविधान के भाग 17 (अनु. 343–351) कुल 9 अनुच्छेदों में राजभाषा हिंदी का प्रावधान है।
- 14 सितबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है, क्योंकि 14 सितंबर 1949 को सर्वानुमति से हिंदी राजभाषा बनी है।
- 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है, क्योंकि 10 जनवरी, 1975 को प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन हुआ था।
- राजभाषा आयोग (सन् 1955) के अध्यक्ष श्री बी.जी.खेर थे।
- राजभाषा अधिनियम–1963 में कुल 9 अनुच्छेद है। धारा 3(3) प्रमुख हैं, जिसमें 14 प्रकार के दस्तावेज द्विभाषी होंगे।
- राजभाषा संकल्प 1967–68 में लोकसभा एवं राज्यसभा द्वारा पारित।
- राजभाषा नियम 1976 कुल 12 नियम–प्रत्येक नियम को महत्ता–12 वां नियम–प्रशासनिक प्रधान का उत्तरदायित्व।
- राजभाषा संबंधी प्रमुख समितियां–छः निम्नानुसार है:– 1. केंद्रीय हिंदी समिति–अध्यक्ष, प्रधानमंत्री 2. संसदीय राजभाषा समिति–अध्यक्ष, गृहमंत्री 3. केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति–अध्यक्ष, सचिव (राजभाषा) 4. विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति–अध्यक्ष, कार्यालय प्रमुख 5. हिंदी सलाहकार समितियां–अध्यक्ष, संबंधित मंत्रालय के मंत्री 6. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां–अध्यक्ष, नगर के वरिष्ठतम अधिकारी।
- सामान्यतः देवनागरी लिपि में–हिंदी, संस्कृत, मराठी एवं नेपाली भाषाएं लिखी जाती हैं।
- हिंदी भाषा समूचे विश्व में सर्वाधिक वैज्ञानिक, मधुर, सुग्राह्य एवं प्रचलित भाषा है।
- संसदीय राजभाषा समिति एक उच्चस्तरीय समिति है, जो अपना प्रतिवेदन राष्ट्रपति को प्रस्तुत करती है।

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
(सदैव ऊर्जावान : निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से, अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों, प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे, अपनी अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए, अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा–हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे ।

जय राजभाषा! जय हिंद !

केन्द्रीय भण्डारण निगम

(भारत सरकार का उपक्रम)

4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रान्ति मार्ग, हौज खास,
नई दिल्ली–110016